अभिनंदन सेवौं जगदीश । जोरिहाथ चरनन धरि शीश ॥
सुमतिसुमतिमतिकरणमहंत ।कुमतबुद्धिनाशनशुभसंत ॥८॥
पद्मप्रभ बंदौं जगसार । लहौं ज्ञान पाऊं शिवद्वार ॥
श्रीसुपार्श्व पूजों मनलाय । हरितवरण शोभै जिनकाय ॥९॥
चंद्रप्रभ बंदौं धरि ध्यान । करम काटि पहुँचे निरवान ॥
पुष्पदंत परमेश्वर देव । सुर नर सेव करैं खग एव ॥१०॥
नमौं नाथ शीतल जिनराय । पापहरण भव भव सुखदाय ॥
श्रीश्रेयांश नमों करजोरि । वरीमुक्तिं सब परिगहछोरि ॥११॥
बंदौं वासुपूज्य भगवान । चंपापुरि पहुंचे शिवथान ॥
नमौ नमौ जिनविमल जिनेश । हरौ सबहि संसारकलेश ॥१२॥
अनँतनाथ बंदौं जिनराज । विघनहरण सारन शिवकाज ॥
धरमनाथ सेवौं मनलाय । बाढ़ै धर्म असुभ क्षयजाय ॥१३॥
जय जय स्वामी शांति जिनंद । नामलेत भाजैं दुखदंद ॥
कुंथुनाथ सेवौं अरहंत । कनक वरनतन अति सोभंत ॥१४॥
अरजिनवरकी सेवा करौं । मनवचकाय चित्तमैं धरों ॥
नमौ देव श्री मल्लिजिनंद ।सुमरत होय सिद्ध आनंद ॥१५॥
मुनिसुव्रत बंदौं जिनराय । वंदत पाप दूरि सब जाय ॥
नमिजिनवर बंदौं विख्यात । स्वामी करौ करमको घात ॥१६॥
बंदौं नेमिनाथ गिरिनारि । बरीमुकति, तजिं राजुलनारि ॥
पार्श्वनाथजिन त्रिभुवनचंद । सुमिरत कटैं पापके वृंद ॥१७॥
महावीर बंदौं जगसार । धर्मतनौं राख्यो व्यौहार ॥
अंतिम जिनवर जग आधार । पंचनाम जाके सुखकार ॥१८॥
तिनहींनें उपदेश्यो धर्म । अबलौं व्यापि रह्यो जगपर्म ॥

सिद्धारथ कुंडलपुरपती। प्रियकारिनि जाके घर सती ॥१९॥
ताके उदरथकी जिनराज। उपजे तारन तरन जिहाज ॥
बालपने जिन दीक्षा धरी। कीरति जिनकीजगविस्तरी॥२०॥

दोहा।

पंच नाम जिनके कहे, जग तारण सुखकार।
सो सुनिये मनलायकें, भव्य जीव चितधार ॥२१॥

सोरठा।

प्रथम नाम है वीर, वर्द्धमान जिन राज है।
सन्मति अरु अतिवीर, महावीर पंचम कह्यो ॥२२॥

चौपाई।

पंच नाम जिनके सुखकार। जपें जीव पावें शिवद्वार ॥
चारिवीस वंदों जिनराय। विहरमान वंदों सुखदाय॥२३॥
जय जय सीमंधर भगवान। सुमिरत होय पापकी हान॥
अंतम अजितवीर्य जगदीश। द्वैकर जोरि नमों धरशीश॥२४॥
काल चतुर्थ सदा जहँ रहै। भविजन मोक्ष सदाही लहै ॥
वीस तीर्थंकर जपि गुणमाल। प्रणमत होय दूर भ्रमजाल॥२५॥
दीप अढ़ाईमें मुनि भए। निर्भय अभय अगोचर ठए ॥
तिनके चरण नमों करजोरि। जातें कटै सकल भ्रमडोरि॥२६॥

पद्धड़ी छंद।

पुनि पंच परम परमेष्टि देव। मनवचनकायकरि नित करों सेव ॥
जयनमों देव अरहंत ईश। तसु गुण अनंत प्रगटे मुनीश॥२७॥
जय नमों सिद्धवर देवनाथ। जय अलखरूप त्रिभुवन सनाथ॥
जयजयआचारजगुणगहीर। पूजतसुरनरखगमुनिशरीर॥२८॥
जय नमों परम उवझाय देव। तसु उदित गुण जगमें सुएव॥

जयसाधुनमौ करजोरिवीर । अम्मृतसम वचनमहागहीर २९ ॥
तिनको वंदौं कर जोरि जोरि । काटैं भवभव भ्रमजाल डोरि ॥
अरु प्रणमौं गणधर गुणगहीर । चौदहसै त्रेपन धीर वीर ॥ ३० ॥
गुरदेव शास्त्र वंदौं महान । मति लहौं कुमतिकी होय हान ॥
गुरुवंदौंनिजमनत्यागिमान । उपजैबुधितिनतैंवहुनिधान ३१ ॥

दोहा ।

जिनमुखअम्बुजतैं कढ़ी, त्रिभुअनमें विख्यात ।
द्वादशांग भाषन कही, नमौं शारदा मात ॥ ३२ ॥

चौपाई ।

विमलवरण वेदनमें कही । स्यादवाद गुण लच्छन सही ॥
जासुप्रसाद विमलमति लहैं । गुणकी खानिसुधीसब कहैं ३३ ॥
षटदरशन मुखमंडन सार । गलैं सांकरी मुक्ताहार ॥
कानन कुंडल मणिमय सार । मुक्ता माणिक मांग सम्हार ३४ ॥
पग नेवर बाजैं पैंजनी । लागे माणिक हीरा कनी ॥
पहिरे उज्वल वरण सुचीर । कनककांतिसम दिपै शरीर ३५ ॥
लिये बीन कर चढ़ी मराल । भारति शारद गुणह विशाल ॥
मूरख सुमिरे पंडित होय । पापपंकको डारै धोय ॥ ३६ ॥
बार बार प्रणमूं धरि भाउ । शारद मोपर करौ सहाउ ॥
हीनबुद्धि मेरी अतिमंद । करिनो चहौं चौपईबंद ॥ ३७ ॥
चारुदत्त श्रेष्ठीकी कथा । सुनत भजै पातक सरबथा ॥
मूरख हौं अति अपढ़ अजान । लघुदीरघ जानौं नहिं वान ३८ ॥
भारति मोपर कर उपगार । उपजै बुद्धि होय विस्तार ॥
तुम प्रसाद कर लेखनि गहौं । सेठकथा विधसेती कहौं ॥ ३९ ॥

कुण्डलिया।

माय शारदा सुमति दे, कहौं चरित्र बनाय॥
हीनबुद्धि निज थाय हौं, कृपा करो जिनमाय॥
कृपा करो जिनमाय मात तुम सब सुख करनी॥
दीजे बुद्धि गणेश शेश सुर मुनवनें वरणी॥
हाथ जोरि करि कहौं भाग्यतें हमने पाई॥
बुद्धि हमारी हीन सुमति दे शारद माई॥ २०॥

सोरठा।

विद्या अरु भंडार, जो मांगै सो पाइये।
किमि आवो संसार, जाप करु तेरो नहीं॥ २१॥

दोहा।

जोरि पाणि तुम चरनकौं, नमन सु वारंवार।
करो सुमति जनमनकौं, होय कथन विस्तार॥ २२॥
देवशास्त्र गुरु वंदना, करि मनमें सुखपाय।
चारुदत्त चारित्र इह, कहौं सुनौ भवि भाय॥ २३॥
आगें आचारज भये, सोमकीर्ति गुणराशि।
तिन यह कीनो चरितवरं, स्वयं शक्ति परकाशि॥२४॥

चौपाई।

ज्यौं उन रच्यो चरित सुखदाय। गुरुबुधि नाना भेद बनाय॥
त्यौं उनकी सरवर नहिं होय। वेतो ज्ञानवान बहु लोय॥२५॥
पर हौं तुच्छ बुद्धियरिचित्त। निजबुधि माफक रचहुं चरित्र॥
जैसें जल गंगाको लेय। फेरि धार गंगाको देय॥२६॥
बड़े पुरुष जे जगमें कोय। तिन सरवरि तुच्छ यान न होय॥

१ गणधर। २ प्रभु।

तौ वे आचारज गुणवान। कीनौ अनुपम चरित बखान॥४७॥
हौं पुनि निजबुधिके अनुसार। रचिहौं चारुदत्त गुण सार॥
मैं संक्षेप चरित अब कहौं। पूरवरचित अनुक्रम लहौं॥४८॥
भव्यजीव सुनिये मनलाय। महापुण्य फलदाइक भाय॥
सुनत चरित सुर शिव सुखहोय। महिमा और बतावे कोय॥४९॥

सोरठा ।

लोक तीनिपरकार, सुरपुर नरपुर नागपुर ।
तिनमैं है शिरदार, मध्यलोक महिमा अतुल ॥५०॥

अडिल्ल ।

द्वीप अढ़ाई जासुमझार विराजहीं ।
उपजें जहँ शुभलोय मुकतिके काजहीं ॥
तिनके मध्य जु द्वीप होय शिरदार है ।
जंबू दीप जु सोय कहावे सार है ॥५१॥

चौपई ।

असंख्यात दीपनमैं जान। जंबूदीप मध्य परवान॥
ज्यौं चक्री नृपगणमैं आय। त्यौं इह दीपनमैं सोभाय॥५२॥
जंबुदीप जाने सब कोय। सब दीपनमें उत्तम सोय॥
ताके मध्य सुदर्शन मेर। ताहि रह्यो लवणोदधि घेर॥५३॥
सोमै जोजन लाख प्रमान। जोजन सहसदश मोटो जान॥
षोड़श जिनपर बने अवास। सोभत चारौं वन चहुँपास॥५४॥
भद्रशाल नंदन सुभ जान। अरु सौमानश पांडु बखान॥
तिनकी महिमा अगम अपार। कबलग भाषौं सब विस्तार॥५५॥

दोहा ।

पूरब पश्चिम मेरुकी, क्षेत्र विदेह बखान ।

उत्तर ऐरावत कह्यो, दक्षिण भरत प्रमान ॥५६॥

पद्धड़ी छंद।

यह भरतक्षेत्र क्षेत्रनप्रधान। ता मधि षटखंड विराजमान॥
आरज इक पंच मलेच्छ जान। भाखे श्रीजिनवर गुणनिधान॥
जिनवर चौवीस जहाँ सु होय। चक्री हरि इत्यादिक जु लोय॥
अरुआरजअवरजुहोंयजीव। तसुआरजनामकहैंसदीव ॥५८॥
सो आरजखंड महाप्रधान। तामध्य देश नाना महान॥
जहँमुनिवरकरतविहारनित्त। उपदेशदेतभविजनसुचित्त॥५९॥

दोहा।

सुरग मुकति जहँतैं लहैं, भव्यजीव सुखकार।
पूजनीक तहँकी मही, सबदेशन शिरदार ॥६०॥

चौपाई।

तामधि देश मगध शिरमौर। जहां बने बहु अद्भुत ठौर॥
वापी कूप बने बहु बाग। करैं कोकिला पंचम राग ॥६१॥
ताल तोयनिरमलसौं भरे। कमल कुसुमसौं सोभित खरे॥
वन उपवन सर सोभा घनी। वृच्छजाति सो जाय न गनी॥
फल अरु फूल लगे बहु भाय। पंथीजनकी भूख पलाय॥
उपमा कहत न आवै पार। बाढ़ै कथा होय विस्तार ॥६२॥
वस्तु मनोहर दीखै भली। अरु सेवक मन उपजै रली॥
नगर बसहि राजग्रहि थान। सोभै जैसें सुरग विमान ॥६४॥
गढ़ मढ़ खाई कोट उतंग। तोरन चारौंदिशि सुभ रंग॥
मुनिवरनाथ धरहिं तहँ ध्यान। कंचनत्रण जिन एक समान॥
ऋद्धिवंत जोगीश्वर धीर। परिगहत्यागि बसे वन वीर॥
करैं घोर तप मनवचकाय। सहैं परीषह बाइस भाय ॥६६॥

केवल पाय मुकति सो जाय। फेरि न आवागमन कराय ॥
नगर मध्य सोभत जिनथान। कंचनकलश धरे असमान६७॥
चमर छत्र सिंहासन सार। सोभित तोरण वंदनवार ॥
जिनवरबिंब धरे तिनमाहिं। पूजत श्रावकजन हुलसाहिं६८॥
घर घर बिंबप्रतिष्ठा होय। खरचैं द्रव्य सबै भवि लोय ॥
ऊंचे मंदिर पौरि पगार। सात भूमि ऊपर विस्तार॥ ६९ ॥
और कहा महिमा बहु कहैं। देव जहांपर उतपति चहैं ॥
पुरकी महिमा है बहु घनी। सो मोपर सब जाय न भनी ७०॥
राज करै श्रेनिक नृप जहां। सुखकरि राजत हैं सुभतहां॥
पालै परजा न्याय समान। सबकौं मनवांछित सुखदान॥७१॥
धर्म सुभावी श्रुत आचार। नीतिशास्त्रको जाननहार ॥
कल्पवृक्ष सम दाता जान। भोगी जानौ इंद्र समान ॥ ७२ ॥

दोहा।

सूरज सम परताप जस, रूप जिस्यौ वर काम।
बुद्धि जिसी शारद सुता, कांति जिसी शशिधाम ॥७३॥
पररमनी परद्रव्यको, जाकैं त्याग सदीव।
इत्यादिक गुण जाविषैं, कहि नहिं सकौं अतीव ॥७४ ॥
पुहमिपाल ऐसो नृपति, राज करै सुखकारि।
सती चेलना तासुघर, रानी है पटनारि ॥ ७५ ॥

अडिल्ल।

सर्व कला संयुक्त रूपगुण सोहनी।
चंद्रमुखी मृग नयनि सबन मन मोहनी ॥
सोभत चालिमराल बचनपिक चातुरी।
लक्षण सिंधुसमान शीलगुण गातुरी ॥७६॥

चौपाई।

कामदेवके ज्यौं रतिनारि। ज्यौं शशिके रोहिनि शिरदार॥
ज्यौं हरिके इंद्रानी कही। त्यौं नृपघर जु चेलना सही॥७७॥
शीलवती अरु गुणकी खानि। पतिकौं प्यारी अधिक सु जानि॥
धर्मध्यानमें राखे चित्त। जिनयात्रादि उछाह पवित्त॥७८॥
नितप्रति चारौं दान कराय। तासौं लहै सुरगपद जाय॥
ताके गुणको वरणन कहौं। बढ़े कथन कछु अंत न लहौं॥७९॥
नगरीमाहिं वसैं बहु लोय। दीन दुखी दीखै नहिं कोय॥
ताके राज करैं सब भोग। पानफूल रस नाना जोग॥८०॥
सकल प्रजा निज सुखमें रहै। काहूकी भय नाहीं लहै॥
निरभय सर्व सुखीजन सदा। नृपआज्ञा मानै सर्वदा॥८१॥
एक दिना निजसभामझार। बैठे नृपति जोरि दरबार॥
सिंहासन बैठे विहसाय। ऊपर चँदवा छत्र तनाय॥८२॥

दोहा।

राजमंत्र सब करत जहँ, सोभित श्रेणिकराय।
वनपालक आयो तबै, शिरनायो बहु भाय॥८३॥

सोरठा।

षटऋतुके फल फूल, अवर हरी इत्यादि बहु।
धरेरायके कूल, हाथ जोरि लाग्यो कहन॥८४॥

चौपाई।

हे राजनके शिर राजान। विपुलाचल परवत सुभथान॥
आयो समवशरण भगवंत। वर्द्धमान स्वामी अरहंत॥८५॥
दर्शन करत पाप सबजाय। अमरलोक तिहठां रह्योआय॥
इंद्र चंद्र खग सेवत शेश। तिनकों नमत बहुत अमरेश॥८६॥

जिनथुति करत देव बहुभाय। खड़गासन सब सोभित राय॥
तिनकी महिमा कही न जाय। अतिशय और सुनौ होराय॥८७॥
षटऋतुके फलफूल अपार। सब फूले नाना परकार॥
ताल तमाल भरे सब तोय। सोभा देखत बहुसुख होय॥८८॥

सोरठा।

गऊ सिंघ इकथान, बैठे बहुत सनेहसौं।
मंजारी अरु स्वान, मूषकादि बहु जीव तहँ॥ ८९॥

दोहा।

नेह सबनमैं परस्पर, बैरभाव नहिं कोय।
आनँद बहु राजैं सकल, निज निज कोठा सोय॥९०॥

गीता छन्द।

होत कौतूहल सु बहुविध बजत दुंदभि जोर हैं।
तहँ अमर खेचर नटत गंध्रव करत भक्ति जु घोर हैं।
जहँ तीनलोक विभूति राजत बंदने सब आवहीं।
महिमा बड़ाई कहत जिनकी पार को नर पावहीं॥९१॥

चाल छंद।

ऐसी सुनि श्रेणिकराई। आनंद्यो अंग न माई॥
तब ताहि पसाव जु कीनो। तसु दान ततक्षण दीनो॥९२॥
भूषण आभरण अपार। बहु दीने लागि न बार॥
आसन तैं उठि जब राई। उपज्यो सुख बहु मनमाहीं॥९३॥
आगें चाल्यो पद सात। कर जोर नम्यो जिननाथ॥
पुर आनँद भेरि दिवाई। चलिये पूजन जिनराई॥९४॥
राजा निज सैना साजी। जिन पूजन मन अहलादी॥
पटबंध चेलना रानी। परिवार सहित अगवानी॥९५॥

परजा लीनी सब साथ। पूजन चाले जिननाथ ॥
सब द्रव्य सम्हार जु लीनी। जिनपूजन जोग भलीनी ॥९६॥

चौपाई।

गुण वरनत सब पहुंचे तहां। समवशरण जिनवरको जहां ॥
निजवाहनतैं उतरे सबै। मानस्थंभ देखियो जबै ॥ ९७ ॥
बारह कोठा सोभित खरे। कनक कुंभ तिन ऊपर धरे ॥
धनपति आय आप निर्मयो। चहिये जहां तहां सो ठयो॥९८॥
मणि माणिकमय खचित अपार। तीनकोट सोभित दरवार॥
जाकी सोभा वरनि जु कहौं। बाढ़ैकथा अंत नहिं लहौं ॥९९॥

दोहा।

जय जय जय सब करतनर, कीनो तहां प्रवेश।
बहु आनंद मनमें लयो, छवि अविलोक नरेश ॥१००॥

सोरठा।

श्रीजिन अतिशय वंत, ज्ञान उपायो जगतमें।
प्रातहार्य वसु भंत, सोभित जिनसमवोशरण ॥१०१॥
सिंहपीठ सोभंत, मणिमय कंचन जड़ितसो।
अतरीक्ष अरहंत, सोभित जिनमूरति सुभग ॥१०२॥

अडिल्ल।

चौसठि चमर दुरंत सु भामंडल महा।
तनकी क्रांति निहारि कोटि रवि लुकि रहा ॥
सर्व शोक अपहारि अशोक निहारियै।
कल्पवृक्ष के फूल सुवृष्टि अपारियै ॥ १०३ ॥
साढ़ेबारह कोटि जाति बाजे वजैं।
तिनके सोर अपार होत जगमें गजैं ॥

सब संदेह निवारि जु भाषा देवकी।
वानी खिरै त्रिकाल जिनेश्वर देवकी ॥ १०४ ॥

दोहा।

निज निज कोठा जीव सब, बैठे आनंद रंग।
भाषा उंछरे देवकी, समझै सबजिय अंग ॥ १०५ ॥

सोरठा।

दई प्रदक्षिण तीन, भूपधोक करजोरिके।
बहु आनंदमें भीनि, नृप अस्तुति लाग्यो करन ॥१०६॥

पद्धड़ी छंद।

जय जरामरणभौ हरण देव। जय मुक्तिवधू परमेश एव॥
जयउद्यतज्योति जु जगप्रचंड। जयगुणअनंत छ्यालीसमंड॥
अतिशय चौतीस विराजमान। जय केवलज्ञान प्रकाशभान॥
जयदोष अठारह रहितएव। जयमानरहित अरहंतदेव॥१०८॥
जयसहनपरीसह बीसदोय। जयनिराभरण मलरहित सोय॥
जयभवनाशनदुखकरमत्रास। जयमुकतिसुःखकरज्ञानभास॥
जय मोहमल्ल दलमलन ईस। वशकरन काम विथा जु बीस॥
जय धरमधुरंधर जगतराय। सुरअसुर शेपखग परैंपाय ॥११०॥
जय तीनलोकशोभाधरंत। ताछबिलखिकोटिसुरविछिपंत॥
नृपअस्तुतिकरतनहींअधाय।करजोरिशीशनिजनायनाय१११

अडिल्ल।

गौतम गणधर स्वामि महा गुणआंगरे।
तिनहिं नमो करजोरि नृपतिपग लागरे॥
और मुनिनके वृंद तिनहिं अवलोकिके।
नमस्कार करजोरि कियो नृप धोकिके ॥११२॥

चौपाई।

दिव्यध्वनि जिनवरकी भई। गणधर परखि ततक्षण लई॥
मनुष देव खग पशु सबकोय। अमृतवानी पीवैं सोय॥११३॥
उत्तम छमाआदि दशअंग। ते गणधर भाषे सरवंग॥
चारित तेरहविध यतिधर्म। गणधर कह्यो सबै व्रतमर्म॥११४॥
गृहवासी श्रावक आचार। गौतम कह्यो सबै विस्तार॥
सुने वचन तिनके जु नरिंद। मनमैं लयो परमआनंद॥११५॥
तब श्रेणिक निजशीशनमाय। बोले मनवचकर विहसाय॥
हे! स्वामीगौतमजिनईश। वेश्यारतफलकहिजगदीश॥११६॥
गणिकाव्यसन गह्यो किनिचाहि। कहा भयोफल निश्चैताहि॥
किहप्रकार वेश्याघर गयो। किहप्रकार ताकों दुखभयो ११७॥
सो कहिये जगतारण देव। तब गणधर बोले स्वयमेव॥
चारुदत्त इक सेठकुमार। तिन सेयो गणिका दरबार॥११८॥
ताको कहौं सबै विरतंत। सुन भूपति तू मनधर संत॥
वेश्याव्यसन फलभयोनिदान। सोसुनिये राजन देकान ११९॥
जम्बूद्वीप दीपन शिरदार। जोजनलाख जासु विस्तार॥
चहूंफेरि तहँ सागर बहै। अति अथाह कोउ पार न लहै १२०॥
भरतक्षेत्र तामधि सुखकार। सबक्षेत्रनमें है शिरदार॥
तामधि आरजखंड प्रधान। ताकी महिमा कही महान १२१॥
कालचतुर्थ होय शुभ जबै। पुरुष सलाका उपजै तबै॥
तामधिदेशअनेकदिपंत। कहतसुनतजिनकोनहिंअंत १२२॥
अंगदेश देशन शिरमौर। शोभा कहत बनैं नहिं और॥
चंपापुरि नगरी तहँ बसै। सुरगपुरी सम शोभा लसै॥१२३॥
गढ़ मढ़ खाई कोट उतंग। दरवाजे सोहैं नवरंग॥

बन उपबन सरसी बहुबाग । देखत मनवाढै अनुराग ॥१२४॥
बरनों कहा तहांकी रीति । बहुत गुणीसों राखैं प्रीति ॥
सबै लोग सेवैं जिनधर्म । पूजा दान करैं तजिभर्म ॥१२५॥
धन कन पूरण शोभित सोय । दीन दुखी दीपे नहिं कोय ॥
घर घर आनंद मंगल करैं । भोग विलास सुक्ख विस्तरैं ॥१२६॥
घर घर सब वेदध्वनि करैं । शास्त्र पुराण कंठ उच्चरैं ॥
सामुद्रिक व्याकरण अपार । सबके अर्थ करैं निर्धार ॥१२७॥
कहूं विविध विद्याधर करैं । कहुं संगीत कला उच्चरैं ॥
कहूं गुनीजन गावैंगीत । कहूं तमासे अदभुत कीर्त[1] ॥१२८॥
शोभैं शोभावंत बजार । महिमा बहुत न आवै प्रार ॥
कहुं हीरा मुक्ता मणि धरे । कहुं गहने रतननसों जरे ॥१२९॥
कहुं मेवा कहुं मधुर सुवास । लगत हृदय जन अधिकहुलास ॥
अतिउतंग शोभित जहँधाम । तोरनपौरि बंधेअभिराम १३०॥
उज्वल अति शोभित सतखने । मानो स्वर्गपुरी तैं बने ॥
चित्रलिखे सोभितहैं द्वार । घर घरहोत उछाहअपार ॥१३१॥
कहूं जिनेश्वरभवन उतंग । उज्वल बरन दिपैं सरवंग ॥
कंचनकलश धरे असमान । फहराती तहँ धुजा महान १३२॥

दोहा ।

रतनमई प्रतिमा सुभग, राजैं तिनमधि सोय ।
मानो शक्रविमान यह, रच्यो विधाता कोय ॥१३३॥
जैनधर्ममैं रत सबैं, दिनप्रति दान कराय ॥
जिनपूजा उत्साह बहु, खरचत धन निजभाय ॥१३४॥

चौपाई ।

तालतमाल बने चहुंपास । निर्मल जल कमलिनी विकाश ॥

[1] कीर्त्तन ।

पावसऋतु वरषै जलधार फूलै फलै लाखदश वार॥ १३५॥
भोगभूमिके सुख हैं जहां। पौनि छतीस वसैं शुभ तहां॥
शोभाकहत न आवै पार। वाढैकथा होय विस्तार॥ १३६॥
राजकरै अवनीपति राय। नाम विमलवाहन सुखदाय॥
नीतिनिपुण नर राजहि करै। वैरी कोइ न धीरज धरै॥१३७॥
ताके राज करैं सवभोग। पान फूल आदिक संयोग॥
ताविभूति वरनीनहिं जाय। दलवलकरि शोभितअधिकाय॥

अडिल्ल।

महा गुणनकी धाम जासुघर कामिनी।
विमलमती पटनारि सवन मन भामिनी॥
रूपकला संयुक्त वदन शशि रोहिनी॥
कनकक्रांति समगात दिपै मृगलोचनी॥१३९॥

चौपाई।

विमलमती नृपके घर तिया। जैसे रामचंद्र घर सिया॥
जैसे शंकर गौरी नेह। तैसे नृपके रानी गेह॥ १४०॥
ता सम रूप न दूजी वाम। निजपति प्रेम वढावै काम॥
शीलादिकगुणजामैंसार। करहिकेलिसुखनिजभरतार १४१॥
पांचपुत्र ताके घर भये। तिनके नाम सुजन इम दये॥
प्रथम नंद हरिसिंह कुमार। गोमुख दूजो जान कुमार॥१४२॥
कहो वराहक तीजो वाल। चौथो परतप जानोलाल॥
पंचम नाम कह्यो मरुभूत। या विध सवके नाम सँजूत॥१४३॥
भूप लखे पांचौ निजनंद। मात पिता वहु पाय अनंद॥
विद्या भ्यास करैं ये तवै। शस्त्र शास्त्र छत्रिय विध सवै॥१४४॥
जिनके गुणको वर्णन कहों। वाढै कथा खेद वहु लहों॥

ऐसी विध राजै भूपाल। सुखमैं जात न जान्यो काल॥१४५॥
ता पुर मध्य बणिक इक बसै। राज दुवार बड़ाई लसै।
भानुदत कोटी धुज साह। आदर बहुत करै नर नाह॥१४६॥
बनिजै हीरालाल दिनार। बेचै माणिक मुक्ताहार॥
मणि कंचन भूषन अभिराम। आदर बहुत रायघर ताम॥१४७॥

सोरठा।

सेठि महाधनवान, नारी देवल तासु गृह।
प्यारी प्रान समान, पति आज्ञामैं चलतिसो॥१४८॥
रतिरंभा उनहारि, रची विधाता रूप मय।
चंद्रमुखी सो नारि, निजपिय प्रेम बढ़ावही॥१४९॥

दोहा।

शशि रवि किरनि कपोलछवि, शुक नासा पिकबैन॥
अलि अलकै आनन कमल, मृगलोचन छवि ऐन॥१५०॥
उर उतंग कंचन कलश, नाभि गहिर कटि छीन॥
कंचन सम तन ज्योति है, सुंदर रति छविछीन॥१५१॥

चौपाई।

सोई नारि सदा सुंदरी। पतिसौं प्रेम शीलगुन भरी॥
पतिके बचन लेयनिजमानि।सोईकामिनिगुनकीखानि॥१५२॥
शील सरूप नाथके नेह। विना पुण्य को पावै एह॥
जे उत्तम गुन नारिन तने। ते सबरे सेठिनिमैं घने॥१५३॥
पतिसों प्रेम आन सब तात। जानै नहीं रैनदिन जात॥
सेठिनि सेठ देखि सबलोग। विधना भलो कियो संयोग॥१५४॥
नारिपुरुष बहु सुखमैं रहैं। मुखतैं कटुकबचन नहिं कहैं॥
पुत्र नाहिं ताके घर कोय। पुत्र बियोग धरैं बहु सोय॥१५५॥

पुत्रअर्थ पूजे सु कुदेव। यक्ष यक्षणी मनवच एव॥
एकदिनाकी कहीनजाय। सुमति नाम आएमुनिराय॥१५७॥
पूजति सेठिनि यक्षवनाय। देखी पूजत तब मुनिराय॥
निरखि ताहि पूजत मिथ्यात। तब मुनिवर इमवचन कहात॥

दोहा।

मुनिवर बोले बचन तब, सुनि सेठिनि मनलाय।
क्यों पूजति मिथ्यात तू, कहु पुत्री समझाय॥१५९॥

चौपाई।

द्वैकरजोरि नई मुनिपाय। तब बोली सेठिनि शिरनाय॥
हे स्वामी! मैं कैसे करौं। पुत्र वियोग बहुतदुख धरौं॥१६०॥
मेरे गेह पुत्र नहीं कोय। तातैं दुख मोकों बहु होय॥
पुत्रशोक मो भयोकुभाय। तब पूजति मिथ्यात अवाय॥१६१॥
फिरि बोले तब मुनिवर धीर। पुत्री दुखमति करो सरीर॥
तेरे पुत्र होय परधान। पै कछुकाल गये दिनमान॥१६२॥
तेरे नंद होयसी एव। हे पुत्री! मति पूजि कुदेव॥
जे दुर्काज विचारैं कोय। बहु दुख लहैं अंतमें सोय॥१६३॥

दोहा।

पूजत सुता कुदेवकौं, जिय सम्यक्त विलाय।
धर्म कर्म सब बीसरे, जाप क्रिया सब जाय॥१६४॥
जिनके जिय समकित नहीं, ते सठ दुष्ट सुभाय॥
स्वप्न मात्र नहिंसुख लहैं, अंत नरक गति जाय॥१६५॥
ध्यावत जे मिथ्यातकौं, छोड़ि आपनो देव।
नरक तनो ते दुख लहैं, नीच वास फिर एव॥१६६॥
तातैं श्रीजिनबिंबको, सेवौ मन बचकाय।
जैन धर्म सेवौ सदा, भव भव मैं सुखदाय॥१६७॥

चौपाई।

पुत्री मन राखो तुम धीर, तुमरे नंद होय बलवीर ॥
मुनि बच सुनि सेठिनि तिहँवार। तबही उपज्यो सुख अतिसार॥
मुनि बचकी परतीति उपाय। जानी जिनवच सत्तिबनाय॥
मुनिकौं नमस्कार करि भाय। तब मुनि गये शैल हरखाय॥

सोरठा।

मुनिवर बचन प्रमान, लिये गांठि तिन बांधिके।
पश्चिम ऊगै भान, झूठ न करैं बखान मुनि ॥१७०॥

दोहा।

नितप्रति श्रीजिन बिंबकों, पूजे मनवच सोय।
धरै ध्यान दृढ चित्तकर, व्रत उपवाशक जोय ॥१७१॥

अडिल्ल।

करै जु भोग विलास सदा निजधाम जू।
सुखसौं बीतत काल रहै पति बाम जू॥
गर्भ देविला जोग रह्यो सुखदाय है।
लह्यो महा आनंद कह्यौं नहिं जाय है ॥१७२॥
जननी उर कछु कियो जनाब जु आनिके।
चलै पसेव जु देह सिथल तब जानिके॥
मंद मंद गति सोय चरण भूपर धरै।
चढ़त जु ऊचे ठौर अधिक तसु मन डरै ॥१७३॥

चौपाई।

अधिक सुहाय फूलकी बास। मधुर सरस मुख दीजे ग्रास॥
दिन दिन गर्भ वृद्धि तब भई। कनक बरन ताकी छबि छई॥
नितप्रति आनँद भोग विलास। पूरण गर्भ भये नवमास॥

नव में मास भयो सुतसार। सब लक्षण पूरन गुन धार॥१७५॥
सुतमुख लखि माता सुखि भई। सुनिकरि भानु खुसी अधिकई॥
पुत्र महोत्सव सेठि जु करैं। खरचैं धन बहुआनंद भरैं॥१७६॥
दुखी दरिद्रिनिकौं दे दान। सज्जन लोक करै सनमान॥
करै बधाई मंगलचार। पुत्र जनम को जो व्योहार॥१७७॥
जे जन आय बधाई देत। तिनकौं धन दे हरख समेत॥
जो मांगे ताकौं सो देय। दान देत जगमैं जस लेय॥१७८॥
दान समान न जगमें कोय। भोग भूमि दानहिं तैं होय॥
गावैंगीत नारि रस भरी। देय तमोल सेठितिस घरी॥१७९॥
बाजे बाजैं मंगल रूप। जनम उछाह इत्यादि अनूप॥
दान साहने बहुविध दयो। सबही कों नाना सुखभयो॥१८०॥
बालक द्वादश दिनको भयो। सेठि तबै मनमें सुख लयो॥
ज्योतिष श्रुत के जानन हार। पंडित बुलवाये तिहँवार॥१८१॥
पंडितजन दीनो तब नाम। चारुदत्त सब गुण अभिराम॥
मात पिताकौं बहु सुख भयो। स्वजन लोग बहु आनँद लयो॥
बाढ़ै बालक कर संचरै। दिन दूनी तन शोभा धरै॥
अन्नपान रस पोखै बाल। द्वैज चंद्र सम बढ़ै विशाल।१८३॥
बालक बरष सात को भयो। पंडित आगें पढ़ने गयो॥
कियो महोच्छव जिनवर थान। सजन जन दीनों बहु दान॥१८४॥

सोरठा।

गुरुकी विनय कराय, त्यों त्यों बुधि अधिकी बढ़ै।
पढ़ै शास्त्र अधिकाय, सब विद्यामें निपुण है॥१८५॥

दोहा।

अलंकार अरु छंद बहु, सामुद्रिक गुण लीन।
वेद न्याय अरु तरक शुभ, पढ्यो कला परवीन॥१८६॥

नीति शास्त्र ज्योतिष गणित, नाद गीत बुधिवान।
आगम वैद्यक बाद बहु, दूत शास्त्र गुणखान॥१८७॥
कोक आदि लक्षण पुरुष, तिय लक्षण शुभसार।
शस्त्र आदि विद्या अतुल, पढ़ी सबै सुखकार॥१८८॥
ग्रंथ आदि तिन व्याकरन, पढ़े सबै गुरु पास।
जैनशास्त्र सिद्धांतमैं, निपुन भयो गुनरास॥ १८९॥
नृपके पंच प्रधान सुत, तिन सँग खेलै बाल।
शस्त्र शास्त्र विद्या सबै, सीखी सर्व रसाल॥ १९०॥

अडिल्ल।

सब विद्यामैं निपुन सोय बहुविध भयो।
तर्क छन्द इत्यादि महाचातुर ठयो॥
भूप सुतनके संग केलि निशिदिन करै।
परस्परस्पर नेह सबै निज उर धरै॥ १९१॥
श्रीजिनवरकी भक्ति करै चितचावसौं।
पूजा तीरथ जाप दान दे भावसौं॥
राखै मनमैं सदा मंत्रनवकार है।
तातैं इह सुख होय लहै शिवद्वार है॥ १९२॥

चौपाई।

ऐसी विध बहु आँनद करै। भांति भांति क्रीड़ा विस्तरै॥
अब इहकथा रही इसठौर। आगे कथनसुनो अबऔर १९३॥
चंपापुरि नगरीके अंग। बाहिर परवत महाउतंग॥
गिरिमंदार तासुको नाम। तापर बने जिनेश्वर धाम॥१९४॥
ताऊपर जमधर मुनिराय। लही मुक्ति बसुकर्म खिपाय॥
पूजनीक है जहँकी मही। जात निमित आवैं सब तहीं॥१९५॥

मंगसरमास पक्ष शशि भ्रात। हरिहरि वरस लगे तहँ जातं ॥
आयोजवहीं मंगसरमास। तवसव परिजन हियेहुलास१९६॥
पूजन योग द्रव्यले सवै। निज निजवाहन चढ़िकरि तवै ॥
राजादिक सव परजा लोग। गए सवंजन जात्रा जोग ॥१९७॥
चारुदत्तभी तिहठां गयो। करी जात वहु आनंद लयो ॥
जात्राकरि फिर उतरयो सोय। मंत्रीसाथ और नहिं कोय ॥
क्रीड़ानिमित गयो सो तहां। सरिता तीर वाग इक जहां ॥
देखि मनोहर वाग रसाल। चारुदत्त अतिभयो खुसाल १९९॥
तरुवर सवफूले अधिकार। शीतलछाया वहु सुखकार ॥
फरे नारियर जहां अभंग। फरीं नरंगी वहुत सुरंग ॥ २०० ॥
वहुत भांति अंमृतफल केर। सघन दाख दारों द्रुम वेर ॥
नीवू हरे विजौरा नेक। ताल खजूर सुपारी एक ॥ २०१ ॥
फरे कदम तरुवर वहुताम। अनन्नास आडू अरु आम ॥
कटहर वड़हर वर आचार। कैथ सदाफल तूत अनार ॥२०२॥
फूली केतकि चंपोवेलि। रायचमेली खूजा केलि ॥
दौना सदागुलाव निवारि। गुलहर कनइल हारसिंगार २०३॥
और फरे वहुभांतिन फूल। तरुसाखा गिनती नहिंमूल ॥
पत्र पुहप फूले अधिकाय। ताकी शोभा कही न जाय ॥२०४॥
सरवर नीर भरे चहुँपास। तिनमैं कमलिनिधरे विकास ॥
वौलैं कोकिल मधुरे वैन। वोलत सारो हरियल ऐन ॥२०५॥
चकई चकवा और चकोर। विच विच वोलैं खुमरी मोर ॥
जोसव शोभा वरनन कहौं। कहतकथा कछुअंत न लहौं२०६॥
वागवन्यो वहुतै अभिराम। सेठिकुमर करि क्रीड़ा ताम ॥
भ्रमनकरत फिरतो तिहँठौर। देख्योतरु ऊंचो इकऔर२०७॥

१ यात्रा मेला।

सोरठा।

ऊंची दृष्टि निहारि, चारुदत्त देखत भयो।
तरुकी साखालार, कील्यो एक पुरुष तहां॥ २०८॥
मूर्छावंत अघाय, खबरि नहीं तनकी तिसै।
दयाभई तसु आय, चढ्यो विरछ साखा तबै॥ २०९॥

दोहा।

देखिविमान रसाल तहँ, मनमैं चिंत्यो सोय।
इह विद्याधर है सही, वैर कियो किनि लोय॥ २१०॥
तिनयह कील्यो आनकर, जीवघातके भाय।
अबतक प्रान बचे सही, कीजे कछू उपाय॥ २११॥
तसु विमान ढूंढ्यो तबै, देखी गुटिका तीन।
तिसको गल्यो शरीर सब, पीड़ा बहु तनकीन॥२१२॥
कीलोद पाटनी प्रथमहै, द्वितिय संजीवनि नाम।
तीजी गुटिका है सही, व्रण सरोहिनी नाम॥ २१३॥

अडिल्ल।

गुटिका लेकर सर्व चारुदत पानमें।
सुमिरिमंत्र जिननाम निरंतर ध्यानमें॥
कीलोदपाटनी गुटिका तासु प्रतापतैं।
ततछिन खगको गात उकील्यो आपतैं॥ २१४॥

चौपाई।

गुटिका द्वितिय संजीवनिनाम। ता समर्थता करिअभिराम॥
मूर्छादूरि भई तिहँबार। भयो सचेत सोय ततकार॥ २१५॥
तीजी व्रणसरोहिनी नाम। तासमर्थता करि छिन ताम॥
घावदेहको आछो कियो। तबतिन बहुसुख मनमेंलियो २१६॥

है सचेत उठिबैठ्यो सोय। देखे चारुदत्त दृग जोय॥
उठिकरि नमस्कार खग कियो। विनै भक्तिकरि इनहूं लियो॥
चारुदत्त बोले तब तासु। को तुम माततात कहँ वासु॥
आए कौनकाज इसठांय। पीड़ा बहुतकरी किनभाय॥२१८॥
तब बोल्यो नभचर शिरनाय। कहूं वात अपनी सुनभाय॥
विजयाधरपरवत शुभथान। ताकीदक्षिन श्रेनिबखान॥२१९॥
शिवमंदिरपुरि नगरी वसै। मानो सुरगपुरी छविलसै॥
भूप महेंद्रदत्त राजंत। विक्रम पटरानी को कंत॥ २२०॥
अमितवेग हौं तासुत जान। सुखसों रहों सदा निजथान
धूमशिखा खगपतिइकनाम। वसैसोय विजयारध धाम॥२२१॥
सो खग मेरो मित्र महंत। मोऊपर अति नेह धरंत॥
निशिदिन दोनों क्रीड़ा करैं। भांतिभांतिके सुख विस्तरैं॥२२२॥

सोरठा।

एकदिवस दोउ मित्र, क्रीड़ा करिवेकों चले।
रच्यो विमान विचित्र, ध्वजा पताका सहित सो॥२२३॥
दोनौं बैठिविमान, बहु प्रमोद आनंद भरे।
नभमें कियो पयान, अवनी सब देखत चले॥२२४॥

चौपाई।

चलतचलत पहुँचे हम तहां। हिमगिरि पर्वत राजे जहां॥
तहां बने बहु सुंदर ठौर। शोभा कहत बने नहिं और॥२२५॥
तहां करी क्रीड़ा बहुभाय। दोऊमित्र महासुख पाय॥
तहांमिल्योइकनरगुणलीय। नामहरीयजातिछत्रीय॥२२६॥
तिनके कन्या बहुगुणखानि। सुरकन्या जीती छवि मानि॥
सुरकुमारिका ताको नाम। तासम रूप न दूजी बाम॥२२७॥

अडिल्ल।

कनक वरन तसु देह दिपै बहु नागरी।
चंद्रवदन मृगनयन रूपगुण आगरी॥
हंसचालि गुनमाल कोकिला वैन है।
केहरिके सम लंक मनो रति ऐन है॥ २२८॥
ताकी छवि मैं देखि सुःख मनमें लह्यो।
बहुत विमोहित होय मैनसर तन दह्यो॥
पर्‌यो प्रेमके फंद ताहि अवलोकि कें।
मांगी तव तिहँ पास विनोकरि धोकिकें॥ २२९॥
तिनहूं करि बहु नेह हमारे ऊपरें।
तिलक वांचि तिहँवार लियो जस भूपरें।
चौंरी मंडप साजि व्याहि हमकों दई॥
गए लेय निजधाम भये सब सुखमई॥ २३०॥
सुखसों वीतत काल रहैं निजगेह हैं।
करें भोग उपभोग बहुत असनेह हैं॥
देखि नारिको रूप धूमशिख खगपती।
भयो बहुत आशक्त धरी खोटी मती॥ २३१॥

छंद।

मनमैं औरहि मति ठानी। हरिवेकी वांछा आनी॥
जान्यो नहीं मैं कछु भेद। जाके मनमें है क्या खेद॥२३२॥
इकदिनकी कहिय न जाई। रचियो विधि और उपाई॥
धूमाशिख हमरैं आयो। हमहूं मनमैं सुख पायो॥२३३॥
क्रीड़ा करिवेकों चाले। निज नारि लई मैं लारे॥
रचियो अभिराम विमान। कीनौ नभ माहिं पयानै॥२३४॥

१ कामवाण २ गमन।

इस बाग माहिं जब आये। क्रीड़ा कीनी मन भाये॥
सु प्रमादअवस्था तानै। कील्यो तिन दुष्ट अयाने॥२३५॥

पद्धड़ी छंद।

ताको उपजी कछु दया नाहिं। मोप्रान बचेंके अबहिं जाहिं॥
मोतिय छिनमें लेगयो सोय। हमपैं जु उपायनबन्यो कोय२३६॥
दुख सह्योइहां बहुतै जु घोर। देख्यो नहीं कोई सरन और॥
शुभदशा हमारी भईआय। तुमगमनभयो इसथानभाय२३७॥
मोप्राण बचे तुमही प्रसाद। पायो तुमतैं बहु सुख अगाद॥
पूरवविधि भाललिखी जु सोय। ताकों नहिं मेटि सकै जु कोय॥
तुमदयावंत जगमैं सु धीर। परकारज कारन महगहीर॥
खगबोल्यो फिरशिरधारिहाथ। अबहुकमहोय घरजाउंनाथ॥

सोरठा।

तुरत आपनी नारि, लेउं छुड़ाय जु दुष्टतैं।
देहुँ तासमुख छार, काढ़ि देश बाहिर करौं॥ २४०॥

दोहा।

नमस्कार करके चल्यो, अमितवेग खगवाल।
बैठि विमान आनंदसों, गयो गेह ततकाल॥ २४१॥

चौपाई।

धूमशिखहि बांध्यो तिन जाय। भामिनि लीनी तुरतछुड़ाय॥
ततछिनमाहिं सबै गुनरास। आए चारुदत्तके पास॥२४२॥
हाथजोरि बोल्यो खग बात। हेस्वामी! सुनिये अवदात॥
लायो छीनि आपनी नारि। आन्यो पकरि दुष्ट तुमलार२४३॥
देहु दंड चाहौं सो धीर। इन मोकौं कीनी बहु पीर॥
तुम प्रसाद मो बचियो प्रान। मैं तुमरो चाकर गुनवान॥२४४॥

तुम मेरे साहिब सुखदैन। बहुत बात कह कहिये ऐन॥
चारुदत्त बोले सुन वीर। ऐसी बात कहौ मति धीर॥२४५॥
तुम मो भ्राता निहचैं जान। यही राखियो मनमैं आन॥
अब याको दीजे छुटकाय। यहो दुष्ट अपने घरजाय॥२४६॥
सुनी वात आनंदित भयो। ततखिन खगको छांड़ि जु दयो॥
अमितबेग तब आज्ञापाय। भामिनिसहित गयोघरधाय॥२४७॥

दोहा।

बहु आनँद मनमैं लयो, चारुदत्त तिहँ ठाम।
मंत्री सहित जु बागतैं, गयो आपनें धाम॥ २४८॥
रह्यो गेह सो आपने, सुखसौं बीतत काल।
कथा रही इसठौर यह, आगे सुनो रसाल॥ २४९॥

चौपाई।

वाही नगर सेठि इक बसै। नाम सिद्धारथ धनकर लसै॥
देवल सेठिनि भ्राता जोय। चारुदत्तको मामा सोय॥२५०॥
ताके सदन सुमित्रा नारि। गुनलावन्य शचीउनहारि॥
सेठि सेठिनी भुंजै भोग। पुत्री भई करम संयोग॥ २५१॥
मित्रवती शुभ ताको नाम। बनी सबै सामुद्रक धाम॥
रूपकला अरु गुनसौं भरी। शोभै जिसी स्वर्ग किन्नरी॥२५२॥
जौबनवंत भई सो बाल। देखी मात पिता गुणमाल॥
तब मनमैं चिंता तसु ठई। पुत्री ब्याह जोग अब भई॥२५३॥
पुत्री पिता देखि बहु जोय। कुल शुभ दोय बराबर होय॥
घरवर देखि भलीविध चाहि। पुत्री पिता विवाहै ताहि॥२५४॥
सेठि बात मनमैं चिंतेय। पुत्री चारुदत्तकौं देय॥
कुलऊंचे लक्षण शुभसार। अरु भनेज भगनी सुतसार॥२५५॥

टीका चारुदत्तकैं कियो। दुहूँओर बहु आनंद लियो॥
ज्योतिषवन्तपुरुषपतिहँधरी। लीनीशोधिलगनशुभघरी २५६॥
मित्रवती सुंदरि सुकुमारि। पाणिग्रहणको दिन शुभसार॥
लगनथापिज्योतिषिघरगयो।दोनोंकुलकारजशुभठयो २५७॥
कामिनि गावैं मंगलचार। पूरहिं चौक व्याह व्योहार॥
बाजें भेरि झांझ झालरी। ताल कँसाल ढोल दुम पुरी॥२५८॥
वीनउपंग और मुहचंग। बाजे बहुत बजैं नवरंग॥
जाचकजनकौं दीजत दान। करैं सुपरिजनको सनमान२५९॥

सोरठा।

कर कंकन शिर मौर, चारुदत्त व्याहन चले।
बनी बराईत और, बरनौ तौ विस्तर बढ़ै॥२६०॥
गए सेठि दरबार, आगौनी बहुविध करी॥
मंडप वेदी सार, रच्यो महा अभिराम सो॥२६१॥

अडिल्ल।

कामिनि गावैं गीत सबहिं निज रस भरीं।
वर कन्या शृंगार रचैं पट सुन्दरीं॥
वेदी-पंडित आय वेदधुनि तहँ करैं।
भयो अभिदै शाखि व्याह आनँद भरैं॥ २६२॥

चौपाई।

पुत्रीवरको दीनो दान। कंचन भरन वस्त्र सनमान॥
भई विदा आए निजधाम। आनँद भयो सेठिनी ताम॥२६३॥
खरचे द्रव्य बधाई करी। अरु सबही मन पूरी ररी॥
लाय नारि राखी निजगेह। ताहीदिन तैं तज्यो सनेह॥२६४॥
चारुदत्त सुध लेय न तासु। छिन नहिं जाय नारिके पास॥
सखी एक दो साथ जु रहैं। सूने मंदिर बहुदुख लहैं॥ २६५॥

भई दुहागिल करै विलाप। पूरवलो आयो मो पाप॥
नाहवियोग बहुत दुख धरै। तज्यो तमोर सिंगार न करै २६६॥
मस्तकधुनै जु लेय उसास। हे विधना! तैं करी निरास॥
नैनन झरै नीर असरारि। दुखसौं काल गमावै नारि॥२६७॥
चारुदत्त गुणमंडित बाल। सीखै विद्या सर्व रसाल॥
पढ़ै निरंतर काव्य पुराण। तरक छंदको करै बखान॥२६८॥
नारि तनी सुधिलेय न सोय। पढ़िवा काल गमावै जोय॥
एकदिनाकी कही न जाय। रचियो विधना और उपाय२६९॥
चारुदत्तकी सास सु जान। नाम सुमित्रा कह्यौ बखान॥
भयो प्रात उग्यो नहिं भान। आई सो जु सुताके थान॥२७०॥

अड़िल्ल।

देखि मातकों सुता बहुत आदर कियो।
कुशल क्षेम सब पूंछि उच्च आसन दियो॥
मित्रवतीकों देखि सुमित्रामाय जू।
बहुत चिंत मनमाहिं भई अधिकाय जू॥ २७१॥

चौपाई।

अति दुर्बल देखी जु शरीर। पहिरें मैले अंग जु चीर॥
मैलोवदन दुःखकरि मंद। मानो श्यामघटामें चंद॥२७२॥
द्वादशभूषण रहित जु नारि। रहित तमोर सोरह सिंगार॥
ऐसीविध देखी, तिन धिया। पूंछति भई सुमित्रा तिया॥२७३॥
हे पुत्री! तू मैले भेष। रहै कहा मो कहो विशेष॥
सोवत नहीं संग भरतार। कै कछु चिंता करत अपार॥२७४॥
काहे रहै मलिन तुम गात। सांची कहु तू मोसौं बात॥
मायबात सुनि सकुची सोय। वदन रही नीचो करि जोय२७५

१ ताम्बूल।

वात न आवै लेय उसास । फेरि सुमित्रा बोली तास ॥
सुतावेगि निज सुखदुख कहो। मेरे मनको संसौ दहो ॥२७६॥
तुम सुखतैं हमको सुखथिया । तुमदुखतैं हमबहुदुख जिया ॥
कौनदुःख पुत्री है तोहि।रहैमलिन किमि कहि सबमोहि२७७॥
माताहठ जान्यो तिहँकाल। करि दृग नीचे बोली बाल ॥
जादिनतैं तुम दीनी व्याहि। आई गेहससुरके माहिं ॥२७८॥
ताहीदिनतैं मो भरतार । हमसुधिलई न आयो लार ॥
कबहूं यादि करे मो नाहिं। रहौं अकेली इसघर माहिं ॥२७९॥
पढ़िवेमें राखै सो चित्त । भोगविलास न जानैं हित्त ॥
कालगमावै इसविध सोय। तिय व्योहार न जानैकोय॥२८०॥
यहदुख मो मनमैं है माय। नाहवियोग महा दुखदाय ॥
तातैंमोकौं सब सुधि गई। भयो उदास चित्त अधिकई ॥२८१॥
भाख्यो सब विरतंत कुमारि। सुतावचन सुनि सब तिहँवार ॥
बोलीतबै सुमित्रा माय। हे पुत्री ! मति मन अकुलाय ॥२८२॥
विधना रचित न मेंटै कोय । होनहार सो निहचैं होय ॥
कुलकीरीति गहैं कुलनारि। नीचवंशकी नीच विचारि२८३॥
तातैं जपिये जिनके चरन। जिनको धर्म जीवके सरन ॥
सबविध पुत्रीकौं समझाय। तामनमैं दुख भयो अघाय ॥२८४॥
उठी तहांतैं सो तिहँवार । मनमें क्रोध कियो अधिकार ॥
क्रोधभरी पहुँची सो तहां। भानुदत्तकी भामिनि जहां ॥२८५॥
चारुदत्तकी माता जबै। आदर विनय कियो अति तबै ॥
आसनऊंचो बैठन दयो। तबै सुमित्रा बोल जु चयो ॥२८६॥

सोरठा।

कहै सुमित्रा बैन, सेठिनि तेरो नंदवर ।
पढ्यो मूढ़ है पेन, निहचय करि जानो सही ॥२८७॥

दोहा।

तियव्योहार न जानही, भोगविलास न कोय।
पब्योमूढ़ जानो तिसै, तियढिग जाय न सोय ॥२८८॥

चौपाई।

तू जानति है याकी रीति। पढ़िवेमैं राखै बहुप्रीति॥
तौ तुम टीका काहे लियो। काहेको ता व्याह जु कियो२८९॥
क्रोधवान हुइ बहुबच कहे। ते सब भानुतियाने सहे॥
तबहि देवला बोली बात। अपनी विनती करि अवदात २९०
अरु कीनो ताको सनमान। अपनी लघुताई जु वखान॥
ताको ततछिन क्रोधनिवारि। वेगपठाई घरकौं नारि॥२९१॥
चारुदत्तकी माता तबै। मनमैं बहुदुख पायो जबै॥
फेरि विचारकरै मनलाय। वेगहिं कीजै कोइ उपाय॥२९२॥

अडिल्ल।

चारुदत्तकी माता अपने धाम है।
निज देवरको टेर रुद्रदत्त नाम है॥
लीनों ताहि बुलाय तासु मन पायकैं।
तासौं सब विरतंत कह्यो समुझायकैं॥ २९३॥
चारुदत्तको आप कछू शिख दीजिये।
भोगलुब्ध जिहँभांति होय सो कीजिये॥
और न दूजी बात सु मनहिं विचारियै।
खरचो धन निजहात काज यह सारियै॥२९४॥

चौपाई।

भावजबचन सुने बहु भाय। तब मनमाहिं विचार कराय॥
नगरमाहिं गणिकाको धाम। है वसंतमाला तसुनाम॥२९५॥

ताकीपुत्री बहु गुणवान। वसंततिलका नाम सु भान ॥
ताके रूप न दूजी बाम। तासम चतुर न दूजी बाम ॥२९६॥
वह वश करिहै छिनमें जाहि। मंत्र तंत्रकर भाव बताय ॥
तासों कहियैसब बचजाय। अरु कछुदीजे दाममंगाय॥२९७॥
गयो सोय वेश्या के थान। तासों जाय कही सब बानि ॥
चारुदत्त ल्याऊं तोपास। ज्यौं जाने त्यों वशकर तास ॥२९८॥
कामबात जाने नहिं सोय। तू शिखराव तासुकों जोय ॥
यहकहि रुद्रदत्त घरआय। मनमैं सुखपायो अधिकाय॥२९९॥
एकदिनाकी कही न जाय। कुमर रुद्रने लियो बुलाय ॥
लेकरसाथ नगर दिखराय। वेश्यागली सु पहुंच्योजाय ३००॥
लाग्यो कुमर बात तब कहन। गणिकागली नाहिं मो रहन ॥
वेश्याके घर कामीजाय। सात व्यसन जो करै अघाय॥३०१॥
चल्यो चारुदत्त पहुंच्यो तहां। मातपिताको मंदिर जहां ॥
फिरइन रचियो औरउपाय। हाथीवान लियो बुलवाय॥३०२॥
तिनकौं देकर कछुजो दाम। तिनसौं बातकही सब ताम ॥
दोनोंहाथी दोनों ओर। रहौ झुकाय गलीके छोर ॥ ३०३ ॥
हम गणिकाके द्वारे जांय। दुहुके दांत भिड़ें तहँ आय ॥
कहियो टेरि जु बारम्बार। हाथी खूनी हैं अधिकार ॥३०४॥
ऐसीविध तिनकौं समुझाय। मनमैं सुखपायो अधिकाय ॥
पीछे चारुदत्तकों टेरि। चाले नगर दिखावन फेरि ॥३०५॥
चलत चलत सो पहुँचे तहां। वेश्याको मंदिर है जहां ॥
पहुँचे गणिका मंदिरद्वार। आनिलगे दोनों गजलार ॥३०६॥
कहैं पुकारि भजो तुम भाय। हाथी खूनी हैं अधिकाय ॥
कहें हमारे मैं हैं नहीं। सब पर चोट करत हैं सही ॥३०७॥

तातैं भजौ बीर इस बार। नाहीं तौ दुख होय अपार॥
भजिबेको नहिं देखें ठांय। तब वे लागे कहन सुभाय ३०८॥
जा मंदिरमें चलिये बीर। चारुदत्त तुम साहस धीर॥
चलिये प्राण बचें हो भ्रात। हाथी बिगड़ि करैं जियघात॥३०९॥
बोलि ठोलि मैं मंदिर गये। घरकी शोभा देखत भये॥
उज्वल महाउतंग अवास। तोरण पौरि बंधे चहुँपास॥३१०॥
देखे रतनन खचित किवार। तिनकी जगमग ज्योति अपार
लगे थंभ बहु नाना वरन। झांकी टोड़ा शोभा धरन॥३११॥
आंगन शोभा बहुविध रची। कंचन वरन ताकी छबि सची॥
चित्र आदि बहु लिखे लिखाय। चीते मोर कोकिला भाय ३१२
चीते राग रागिनी संग। चौरासी आसन बहु रंग॥
और महल बहु नाना भांति। देखत तिनहिं भूप सब जाति ३१३
भले बिछौना बिछे अनेक। परदा आदि चँदोवा नेक॥
देखत मोहि रहत नर नार। शोभा कहिये कहा अपार॥३१४॥
बनो जु ऐसो गनिका ठौर। तासम नाहिं नगरमें और॥
बहुत उतंग महा अभिराम। उज्वल वरन दिपै सब धाम॥३१५॥
सब जन भीतर बैठे जाय। आदर बहुत कियो गणिकाय॥
तब गनिका चौपड़ि ले हाल। रुद्रदत्तसौं माड्यो ख्याल॥३१६॥
रुद्रदत्त तब बारम्बार। हारत भये बेर दुइ चार॥
चारुदत्त देखत तहँ बाल। हारत चंचा द्यूत के ख्याल॥३१७॥

अड़िल्ल।

चारुदत्त तब बात रुद्रदतसों कहैं।
हम खेलेंगे सारि जीति तुम्हरी लहैं॥
तब सुनिकरि सब बात बसंत जु माल है।
कहै लाल तुम रचौ कुमरिसों ख्याल है॥३१८॥

चौपाई।

जो तुम खेलो चाहों ख्याल। रचौ वसंततिलकासों लाल॥
मो सँग जुगति नहीं तुम वीर। तुम कुमार सुंदर गुनधीर॥३१९॥
मैं हों वृद्ध जानिये वीर। तुमहो यौवनवंत गहीर॥
जो खेलनको तुममन भाव। तौ वसंततिलकाढिग जाव॥३२०॥
जैसे तुम चातुर गुनलीन। तैसी कुमरि महापरवीन॥
तब वसंतमाला तिहँघरी। लई टेरि तिलकासुंदरी॥३२१॥
सेठिनंद तब देखत भये। गणिका लोचन तासों ठये॥
चारुदत्त देख्यो तसुरूप। सुररंभातैं अधिक अनूप॥३२२॥

सोरठा।

सरस श्याम शिरकेश, सींचे तेल फुलेलसौं।
नवल किशोरी वेश, तन शोभा कहिये कहा॥३२३॥

दोहा।

दृग हैं जिमि फूले कमल, खंजन मीन अधीन।
भौंह जु बंक बनी धनुष, सर्वकला परवीन॥३२४॥

चौपाई।

शुकनाशिका कामगढ़ रच्यो। कारीगर करता अतिपच्यो॥
वदन चंद्रसम तसु अभिराम। दसन चमक जिमि चपला धाम॥
अधर अरुन अधिकी छविधरैं। मानो कूटं कामकी करैं॥
कुचउतंग मंदिरके भाय। विरम्यो आयकाम तिसठाँय ३२६॥
क्षीनलंक महि अतिही खाम। जंघाजुगल केलि अभिराम॥
कोमल अरुण बने तसुपाय। चालमराल मंदगति जाय ३२७॥
भुजकोमल छीनो अतिअंग। मोतिनसौं जु सम्हारे मंग॥
पहिरेअंग कसूमी चीर। गढ़ी कंचुकी दिपै शरीर॥३२८॥

१ बराबरी।

सोरह भांति करै शिंगार। बारह आभूषन सजि सार ॥
मधुरबचन बोलै विहसाय। कोकिल कंठ श्रवनसुखदाय ३२९॥
रातदिवस लीलामैं रहै। राग रंगमैं बहुविध बहै ॥
ताकी छबिको बरनि जुकहों। बाढ़ैकथा खेद बहुलहों ३३०॥
नयनमिलाप तासुको भयो। मानो काम विरह विष दयो॥
तिलका कहै पुण्य हमकरयो। मेरेगेह कुमर संचरयो॥३३१॥
कछुकद्रव्य तापर तिन वार। गहि डारें अरु बकसे सार ॥
चौपड़िख्याल माड़ियो तबै। जाम एक दो खेले जबै ॥३३२॥
चारुदत्तकों लागी प्यास। पानी तब मांग्यो तिन पास ॥
वेश्या मोहन चूरण डार। पानी प्यायो सेठिकुमार ॥३३३॥
तबसो अतिही विहवल होय। चारुदत्त जलपीवत सोय ॥
कामवान कर पीड़ित भयो। मोह विकलकरि अति तनहयो॥
जिहतिह भांति कियो वशसोय। वेश्यासहित रह्यो तहँ जोय॥
होनहार सो निहचै होय। विधिका लिखा न मेटै कोय ॥३३५॥
तबसो वेश्यावश यों भयो। ज्यों पतंग दीपक तन दह्यो॥
सुरति नाहिं ताकों कछु और। रह्यौ सोय रमि वेश्या पौर३३६॥
चारुदत्त तब बोले ऐन। सुन बसंततिलका मो वैन ॥
मोधन नहिंसंख्या परवान। आभूषण गहने करथान॥३३७॥
चाहो सो लीजे मँगवाय। खरचो खाउ महासुख पाय ॥
तबगणिका ताकी सुनिबातं। खुसीभई मनमाहिं सुगात ३३८
रंभासहित नृत्य जब करै। ज्यौं विषधर बादीवश परै ॥
गनिकासहित महल ऊपरैं। रमिवा लाग्यो आनंदकरैं ॥३३९॥
रुद्रदत्त छोड़्यो तिसथान। अपने गेह गये जनवान ॥
बोले सेठि तबै सतिभाय। मेरोपुत्र कहां छुटकाय ॥३४०॥

चारुदत्त हैगो तिस ठौर। रुद्रदत्त तब बोले और॥
तिनसौं कह्यो सबै व्योहार। तब सो सेठिदेय तसु गारि ३४१॥
अरे दुष्ट तैं कीनो कहा। अपने शीश पाप धरि लहा॥
तसु संगतितैं नरकहिं जाय। ताती पुतरी देहजराय॥३४२॥
अरु बहुविधसौं क्रीड़ा करैं। वेश्यादासी सो संचरैं॥
उत्तमघर ताको अवतार। बड़ेवंशको होय गमार॥३४३॥
धनविन कामरूप जो धरै। तौ वेश्याघर पानी भरै॥
ऐसें कहिकहि मनपछिताय। कर्मदोषसो खोर लगाय॥३४४॥
वेश्यादासी आवै तहां। भानुदत्तको मंदिर जहां॥
तिनसौं बात कहै समुझाय। चारुदत्तने मोहि पठाय॥३४५॥
मांगी खरची विलसन काज। सो दीजै मोकौं महाराज॥
जोकछु खरची मांगी आय। ततछिन ताकौं दई वँधाय३४६॥
ऐसैं कछु बीते दिनमास। सब घर सेठि करैं उसवास॥
.... ॥

दोहा।

खोटे व्यसन लग्यो सही, चारुदत्त करि नेह।
तातैं कछू उपायकर, जो आवै निजगेह॥ ३४८॥

चौपाई।

मोहविकल तसु भयो शरीर। ताकौं कछू और नहिं पीर॥
सबपरिजनकी सुधिविसराय। अपनेरंगरच्योमनभाय ३४९॥
तब इककिंकर लियो बुलाय। तासौं वचन कहे समुझाय॥
चारुदत्तके जावो पास। तासौं कहिये निज अरदास ३५०॥
अरु यह कहिये ताहिसुनाय। चालोलाल बुलाई माय॥
तुमविन दुक्खकरत सबलोग। तुमविन घरहिं शरीरहिं रोग॥

अरु कहिये जु बचन समुझाय। मोहविकल हूजै नहिं भाय॥
मोह जु शुभगति छेदनहार। मोह कुगतिको जानौद्वार ३५२॥
मोह जु वश कछुहोय न सिद्धि। मोहविनाशै केवलऋद्धि॥
मोही जिय भवमैंदुखसहै। मोहीजीव सुक्ख नहिं लहै॥३५३॥
मोह गहैं प्राणी जड़क्रूर। मोह जु सर्व पापका मूर॥
ऐसोमोह छांडि गुनरेह। रहसवंत हो! आवौ गेह॥३५४॥
और जु तोमन आवैबात। सो कहिये सब अपनीभ्रात॥
जिहतिहभांति ताहि समुझाय। लेआवौ अपनेघरभाय३५५॥
किंकर ऐसीविध समुझाय। चारुदत्तपैं दयो पठाय॥
सोनर ततछिन पहुँच्योतहां। चारुदत्तबैठो है जहां॥३५६॥
देखिताहिं कीनो परनाम। तासौं बचन चये अभिराम॥
अहोलाल मैं चाकर तोहि। पठयो भानुदत्तने मोहि॥३५७॥

अड़िल्ल।

कही बात सब तात कानदेकर सुनो।
मैं हूं करत बखान आपने जिय गुनो॥
चलोगेह ततकाल बुलाये मायने।
करत बहुत दुख सरब तुम्हारे लायने॥ ३५८॥

चौपाई।

जो जो बात कहीथीं भान। ते सब किंकर कहीं निदान॥
सुनकर चारुदत्त सबबात। उत्तर दयो न एकौभ्रात॥३५९॥
रह्यो मौनधर सो तिहँकाल। उत्तर दयो न कछु तसुहाल॥
तबसो किंकर बिलखित भयो। ततछिन भानुदत्तपै गयो॥३६०॥
तिनसो बात कही सबजाय। चारुदत्त आवै नहिं भाय॥
टेरतैं बोलै नहिं बैन। पर्‌यो मोहकरि पीड़ित मैन॥३६१॥

सुनी सेठने किंकर बात। बहुत भयो दुख ताके गात॥
चारुदत्त वेश्याके गेह। रहैसोय सुख परम सनेह॥३६२॥
गनिका खरची लेय मंगाय। भानुदत्त तसु देय पठाय॥
ऐसीविधवीत्यो कछुकाल। निघटन लग्यो द्रव्य घर माल३६३॥
तबसो सेठि विचार कराय। अब कछु कीजे फेरि उपाय॥
तातैं आवे गेह कुमार। सो अब कीजे कछू विचार॥३६४॥

सोरठा।

ततखिन चाकर टेरि, ताको समझावत भये।
वचन कहे तिन फेरि, चारुदत्तपै जाउ अब॥३६५॥

दोहा।

तासौं यह कहियो अबै, हेकुमार! तुमतात।
रोग भयो तिनकों अधिक, पीड़ित सो बहुगात॥३६६॥
तुम देखनकी आस नित, रही नयन भरपूर।
तातैं चलिये अब सही, करि विभ्रम सब दूर॥३६७॥
ऐसीविध समझाय सो, पठयो तिन ततकार।
आयो किंकर वेगि तहँ, राजै सेठिकुमार॥३६८॥

चौपाई।

नमस्कारकर बोलत भयो। स्वामी मोहि सेठि पाठयो॥
भानुदत्त बहु विकलशरीर। पीड़ितरोग महागंभीर ३६९॥
पीड़ाकरि पायो दुखगात। है संताप बहुत तुम तात॥
तुमदेखनकी बहुतै आस। तातैं चलो तातके पास॥३७०॥
बहुतभांतिकरि तिन बच चये। चारुदत्त बोलततब भये॥
बड़े बड़े जो वैद्यमहान। राजवैद्य वैद्यन परधान॥३७१॥
रस औषधके जाननहार। गुनकर लीन चतुर सरदार॥
तिनहिंबुलाय लेहु करिनेह। तिनको मनवांछित धनदेहु३७२॥

विविधभांति औषध बनवाय। नीकीकरौ पिताकी काय॥
दूरहोय तासौं सबरोग। करौजाय सो ततखिन जोग ॥३७३॥
और विचारौ मनमति भाव। द्रव्यखरचि गद दूर कराव॥
हमकह आयकरैं उनतीर। आवत बनै नाहिं मो वीर ॥३७४॥
यहकह रह्यो मौनधरि सोय। उत्तर बहुर दयो नहिंकोय॥
तबसो किंकर मनपछिताय। गयोसेठिपै बहुअनखाय॥३७५॥
जो जो बात चारुदत कही। सो सो सरब प्रकाशन ठई॥
सुनतबात विकलसो भयो। मानो वज्रवायुको दह्यो ॥३७६॥
मनमैं सोचै बहुपछिताय। कर्मदोषसो खोरि लगाय॥
दुखकरि सो राजे जिहँठौर। यहविध कालगयो कछुऔर३७७
फिर तामनमैं उपज्यो सोच। देखन बदन पुत्रको रोच॥
तब अकुलाय दासकोटेरि। गहभरि तासौं बोल्यो फेरि३७८॥
और जाहु तूं अबकी बार। ततखिन चारुदत्तकी सार॥
तासौं कहिये सबसमुझाय। अरेदुष्ट तूं छोड़कुभाय ॥३७९॥
अर तासौं कहियै यह साज। तेरोपिता गयोमरि आज॥
तिनको काजकरो चलि हाल। तुमहीं घरके हो रछपाल ३८०॥

सोरठा।

जिह तिहँ विध समझाय, लाव टेर घर नंदको।
किंकर दयो पठाय, भानुदत्तने तुरत ही ॥३८१॥
किंकर पहुंच्यो धाय, चारुदत्त बैठो जहां।
नम्यो तासुके पाय, हाथजोरि लाग्यो कहन ॥३८२॥

चौपाई।

हे कुमार! सुनिये मोबात। मरण भयो अबही तुमतात॥
तातैंचलियै घरमहाराज। तिनको बेगि सम्हारोकाज॥३८३॥

१. रोग।

दागदेहु किरिया चलिकरौ। औरबात मति मनमेंधरौ॥
औरवचन बहुकहे बखान। तेसव सुने चारुदतकान॥३८४॥
तवसुन वचन सेठिको नंद। किंकरसौं बोल्यो वचमंद॥
श्रीखंड चंदन घनसार। कुमकुम अगर सुगंध अपार॥३८५॥
इन्है आदि वहु वस्तु मंगाय। नानाभांतिन वसनउढ़ाय॥
अरु सवसजन मिलिपरिवार। करौपिताजीको सँस्कार३८६॥
आवत नाहिंवनै मोवीर। सवसौं यह कहियो धरधीर॥
तव किंकर वहुविध समुझाय। मानीवात न एको भाय ३८७॥
तव किंकर वहुविलखित भयो। ततखिन भानुदत्तपै गयो॥
कहतभयो सुन स्वामीवात। चारुदत्त आवै नहिंभ्रात॥३८८॥
तुम जो मोसैं वातैं कहीं। ते मैं सर्व प्रकाशी सही॥
अरुमैं वहुतभांति समुझाय। मानै वचन न एकोभाय॥३८९॥
चारुदत्त भाषीं जे वात। ते सव कहीं सेठिसौं गात॥
सुनतसेठिकौं अति दुखभयो। मानो वज्रघावसौं दह्यो॥३९०॥
पश्चाताप करै अत्यंत। विकल भयो सो तनमन संत॥
दुखकरिसेठि गेहनिजरहै। अवयह कथन कुमरपै वहै॥३९१॥
चारुदत्त वेश्याके धाम। भोग भोगवै सुखसौं ताम॥
गनिकादासी नितप्रति आय। मांगैधनसो लेयवंधाय॥३९२॥
ऐसीविध वरषैं छह भई। आधो धन ताको निघटई॥
सोरह कोड़ि तासुसौं खाय। ऊपर कछूलाख अधिकाय ३९३॥

अडिल्ल।

पिता श्रेष्ठी भानु वहुत पछिताय है।
खोटे व्यसननमैं देखि नंद अधिकाय है॥
बहु विपरीति सु देखि तासु तव दुख भयो।
करै विचार जु सेठि सु कातर मन ठयो॥३९४॥

चौपाई।

सेठि विचारी मनमैं भाय। चारुदत्त हमको दुखदाय॥
अब नहिंबनत और कछुबात। दीक्षाग्रहन करौं परभात ३९५॥
अब जाने धौं कैसी होय। कर्मरीति जाने नहिं कोय॥
असुर यक्ष अरु खगपति शेश। नारायण चक्रेश दिनेश ३९६॥
ए नवि पग आगे चलि धरैं। कर्म करावै सोई करैं॥
जो विधि अक्षर लिखे लिलार। ताकोकोइ न मेटनहार ३९७॥

अडिल्ल।

कर्म बली संसार लग्यो या जीवसौं।
दुख सुख ता परमान छुटत नहिं ग्रीवसौं॥
कर्महिं जिय जगमाहिं भटक तु वायकैं।
कर्म लग्यो अब आय देखिये चायकैं॥ ३९८॥

चौपाई।

तातैं और न कछू विचार। जिन दीक्षा धरिये ततकार॥
यह दुखधाम महा संसार। भ्रमत जीव नहिं पावै पार॥३९९॥
मनमैं निहचै करि आचरन। चलिये प्रात जिनेश्वर सरन॥
ततखिन नारी लई बुलाय। तासौं कहत भये समझय॥४००॥
तबहीं बधू बुलावत भये। हृदय खोलि तासौं वच चये॥
संयम शील धरो दृढ़ चित्त। श्रावकके व्रत पालो नित्त॥४०१॥
हम तौ कहूँ जाय जिन शरन। नाशै जन्मजरा अरु मरन॥
चारुदत्त मागै दिन सार। दीजैताको धन नर नार॥४०२॥
सेठि जायकरि बनमें ठयो। गुरुके पास महाव्रत लयो॥
भानुदत्तने मुनिव्रत धरे। जन्म जन्मके पातिक हरे॥४०३॥
सुनिये कथा भविक अब और। चारुदत्त राजै तिहँ ठौर॥
निशिदिन बहु लीलामें रहै। राग रंगमें बहुविध बहै॥४०४॥

और खवरि ताकों कछु नाहिं। भोग भोगवै करै उछाहिं॥
वेश्यादासी नितप्रति आय। जो मागै सो लेय वँधाय॥४०५॥
ऐसें करत रहै दिनमान। वीती और वरप छह थान॥
सोरह कोटि द्रव्य तिन और। खोयो रमि वेश्याकी पौर॥४०६॥
घरको द्रव्य सर्व ही गयो। पाछें सुनो और जो भयो॥
वारह सहस्र जानियो सार। सुवरन के लीने दीनार॥४०७॥
गहने धरी हवेली तवै। रह्यो नाहिं धन तापर जवै॥
सो भी धन वेश्याके गयो। सासुवहूको वहु दुख भयो॥४०८॥
तव नारी अपने आभरन्। देय तासुको नाना वरन्॥
गहनोवहु गजमोतिन हार। जो घरमैं सो देय अपार॥४०९॥
दुखकरि वहुत रहैं घर माहिं। कर्मदोष सो खोरि लगायं॥
एक दिवस इक भामिनि कोय। वोली सेठिवधूसौं जोय॥४१०॥
अव तूं देय कछू मति दाम। दासी भक्ति करौ निज ताम॥
अरु तासौं अपना दुख जोय। कहिये मोपर कछू न होय॥४११॥
सूत वेचि आवै जो कोय। तव घरको प्रतिपालन होय॥
कहियो दासीतें सव तोय। भामिनि मनमैं ऐसो जोय॥४१२॥
तौलों दासी आई तहां। सेठिवहू मनसोचै जहां॥
लागी कहन द्रव्य मो देहु। चारुदत्तने पठई एहु॥४१३॥
वोली चारुदत्त की नारि। दासीकी वहु करि मनुहारि॥
पटरस भोजन ताहि जिमाय। ताकी विनयकरी अधिकाय॥
अरु तासौं यह लागी कहन। रहटासूत विकानो जहन॥
जो पैं उनको कारज होय। वेचौ देह समर्पों सोय॥४१५॥
दासी मिहरवान तव भई। हुइ प्रसन्न तासों वच चई॥
तूं जिय दुख मति मानै कोय। अव तूं देखि कहा धौं होय४१६

दासी बहुरि गई तब तहां। चारुदत्त अरु गनिका जहां॥
तासौं बात कही समुझाय। पूनी रहँटा सूत विकाय॥४१७॥
द्रव्य न रही तासुके धाम। भूखनमरैं मात अरु भाम॥
तिनको दुख अब कह्यो न जाय। धाम माल सब गयो विकाय
गणिका सुनत विकल बहु भई। यह विभूति कहँ छिनमैं गई॥
तब बसंतमाला हरषाय। बोली चारुदत्तसौं आय॥४१९॥
चारुदत्ततूं इहँतैं जाहु। तेरेघर दुख होत अथाहु॥
धन नहिं रह्यो जु एकहु दाम। तातैं अबहिं जाव निज धाम॥
जौलौं काल फिरै तुमगेह। तौलौं फिर मति आवौ एह॥
रह्यो मौन हुइ ज्वाब न देय। अरु नहिं घरकी खबरि करेय४२१
ऐसो भयो गरक तासंग। सुधिबुधि गई भई मति भंग॥
खबरि नाहिं ताकौं कछु और। रहे परयो वेश्याकी पौर॥४२२

सोरठा।

अरु वेश्याकी धीय, चारुदत्तसौं नेह वह।
राखै अपने जीय, पलक एक छोड़ै नहीं॥४२३॥
रात्रिदिवस निज गेह, रमै चारुदत संग सो।
नेक न छोड़ै नेह, तब बसंतमाला झुरै॥४२४॥

दोहा।

वंश विगोवै तासुको, छिन छिन गारी देय।
अरु बसंततिलका तिसै, छोड़ै नेक न नेह॥४२५॥
वह बसंतमाला तबै, देखि प्रीतिकी रीति।
तब बसंततिलका कनै, कहति भई सब नीति॥४२६॥

अडिल्ल।

हे पुत्री! सुनि मोहि शीख तोसौं कहौं।
हीनधनीसौं प्रीति छोड़िये यह कहौं॥

होय कोइ धनवान नेह तासौं करो।
वेश्यनकी यह रीतिजानि मनमें धरो ॥४२७॥
गनिकाकी यह रीति शास्त्रमें है कही।
द्रव्यहीन जो पुरुष ताहि सेवै नहीं॥
कामदेवसमरूप होय धनहीन है।
तौ भी प्रीति न करै तासु यह लीन है ॥४२८॥

चौपाई।

वेश्या धनियनकौं भोगवै। हीन पुरुष किनि कैसो अवै॥
द्रव्यहीन कामछवि धरै। अंगीकार कदापि न करै ॥४२९॥
गनिकाकी यह जानोरीति। तातैं छोड़ि जु यासौं प्रीति॥
जाकेगेह दुखितसब लोग। धनविनकरत सरवही शोग४३०॥
भूखनमरत रातदिन जांय। खानपानको नाही पांय॥
तूनेकरी ताहिसौं प्रीति। गणिकनकी यहनाहीं रीति ॥४३१॥
तातैं तजहु सुता तुम नेह। चारुदत्त पहुंचे निजगेह॥
मिलै जाय अपने परिवार। बात हमारी मानो सार ॥४३२॥
ऐसैं कही बहुतसी बात। पुत्रीकौं समझावति मात॥
तब वसंततिलका निजकान। मातावचनसुने मनआन४३३॥
जो जो बातकही सवमाय। सुनी सरव तानै मनलाय॥
उत्तर तबहिं सु लागीदैन। मुखतैं बोलति मधुरेवैन॥४३४॥

दोहा।

तब बसंततिलका कहै, मातवचन सुन सार।
इसभव तौ मेरै सही, चारुदत्त भरतार ॥४३५॥
और सरव जानौ सहीं, भाई पिता समान।
चारुदत्त ही रमन मो, इसभव ठीक निदान ॥४३६॥

तब बसंतमाला बचन, सुने सुताके ऐन।
फेरि सुता समुझाइ है, मानै एक न बैन ॥ ४३७॥
चारुदत्तको पलक इक, छोड़े नाहीं सोय।
तब बसंतमाला झुरै, मनमैं कोपित होय ॥४३८॥

चौपाई।

अधिको नेह लगायो जबै। करि थिरता मनमाहीं तबै॥
जानी गनिका अधिकीप्रीति। छूटतिनाहिं नेहकी रीति ४३९॥
अरु जानै मन औरै ठई। जनमभीति अब छूटै नहीं॥
तातैं कीजे कछू उपाय। चारुदत्त मोघरतैं जाय ॥४४०॥
ऐसो मनमैं कियो विचार। छिन छिन ताको देती गारि॥
एकदिवसकी कही न जाय। विधिने जैसोरच्यो उपाय ॥४४१॥
कर्मलिखी सो निहचै होय। ताको मेटि सकै नहिं कोय॥
तबगनिका यहकियो विचार। चारुदत्त घरजाय न सार॥४४२॥
अरु बसंततिलका सुंदरी। छोड़ति नाहिं ताहि पलघरी॥
तातैंकीजै वेगिउपाय। चारुदत्तमो घरतैं जाय ॥४४३॥
तब गनिका करि चित्तविचार। दोनोंकों दीनो अहार॥
तामैंदयो अमलकछु घोरि। दीरघभोजन दयोबहोरि ॥४४४॥
करि अहार दोनौ निशिमाहिं। गएसोय कछु खबरि जु नाहिं॥
रजनी गई एक दो जाम। मायबसंत विचारै ताम ॥४४५॥
अब तौ दाव बन्यौ है आय। कीजे अबही वेग उपाय॥
सोवे चारुदत्त तहँजाय। ततखिन लीनो कुमर उठाय ॥४४६॥
ताकौं निराभरण तिन कियो। ताके हातपांव बांधियो॥
अरुसो ततखिन कंबललाय। तामैं गठरी बांधी आय ॥४४७॥
ताकौं खबरि नेकहू नाहिं। मदमैं छकित बहुत तिहँठाहिं॥
सो गठरी वेश्या ले आय। विष्टाधाम धरी तब जाय॥४४८॥

दोहा।

ततखिन गनिका पकरिकें, विष्टागृह के माहिं।
डारचो विष्टामध्य सो, संक करी कछु नाहिं ॥४४९॥
नरकघोर दुख तहँ सहै, विष्टागृह की सींव।
कै जानै करता सही, कै जानै वह जीव ॥४५०॥
सरवदेह ताकी बँधी, उठ्योजाय नहिं तासु।
कछुयक मदमैं गहलजौ, सुधिबुधि नाहीं जासु ॥४५१॥

सोरठा।

विष्टागृह के माहिं, विष्टा भखिवा सूकरी।
आई मिथ्या नाहिं, ताको मुख चाटन लगी ॥४५२॥
चारुदत्त तिहँ थान, बोल्यो हातपसारि कें।
हे वसंततिलकान!, तूं मेरे सुन वचन अब ॥४५३॥
आवति नींद अपार, छायरही मो देहमें।
अलग बैठ तूं नारि, जब जागों तब बोलियो ॥४५४॥

दोहा।

यही ताहि रटना लगी, हे वसंततिलकान!।
और विसरि सब सुधि गई, अपनी दशा निदान ॥४५५॥
अहो करमकी रीति यह, देखौ नर गुणवान।
कहां जु वे चतुराईयां, कहां जु यह अपमान ॥४५६॥

अडिल्ल।

चारुदत्त तिहँथान बहुत दुख ही सहै।
पर मनमें यह ध्यान वसंततिलका कहै॥
और न दूजी बात कछू मन आनही
टेरि टेरि तसुनाम सुक्खकर मानहीं ॥४५७॥

---

१ पायखानेमें।

चौपाई।

चारुदत्त विष्टाके धाम। नरकघोर दुख देखत ताम॥
यहतौ कथा रही इहँठौर। आगै कथन सुनो अब और॥४५८॥
नगर मध्य पुरको रखवाल। चौकी देत फिरै कुतवाल॥
फिरत फिरत सो आयो तहां। गणिकाको मंदिरहै जहां॥४५९॥
चारुदत्त विष्टाके धाम। तिलका रटन लगी तिसठाम॥
तबसुनि कोतवाल इमकही। कौन पुरुष इहँ बोले सही॥४६०॥
तब बोल्यो किंकरसौं बात। विष्टधाम कौन है भ्रात॥
देखोतौ नीकैं को लोय। लावो वेगि जु कोई होय॥४६१॥
तब किंकर देखै निज नैन। ताकों पूछै कहि कहि बैन॥
कोहै बोल कहा तो नाम। कौन जाति अरु कहँ तो धाम॥४६२॥
कोहै तात मात कहँ थान। काहेकौं आयो इस ठाम॥
रजनीसमय डारिको गयो। काहेकौं दुखदेखत भयो॥४६३॥
वेगि बात कह अपनी वीर। कौनै वांध्यो तोहि शरीर॥
चारुदत्त तब बोल्यो ताम। याही नगरमाहिं मोधाम॥४६४॥
भानुदत्त श्रेष्ठीको नंद। चारुदत्त मोनाम शुनंद॥
गणिका डारिदियो इसठांय। अमल उतरि तबगयो बनाय॥
भयो सचेत सोय तिहँवार। कहत भयो बचसो ततकार॥
कोतवालसौं सब विरतंत। कहोजासु पहिलो अरुअंत॥४६६॥
कोतवाल सुनि ये सब बैन। जानी चारुदत्त है ऐन॥
काढिलियो ताकौं तिसकाल। ताके बंधन छोड़ेहाल॥४६७॥
अरु ताकी निंदा बहुकरी। सबमैं अपकीरति उच्चरी॥
बुरीबात तासौं बहुकही। अरु तासौं बोल्यो इमसही॥४६८॥
धर्मवंत सज्जन तो तात। ताकेसुत उपज्यो दुखदात॥
कोटिबतीस द्रव्यको धनी। ताविभूति कछु जायनगिनी ४६९॥

सोधन तैनें दियो गमाय। लागो कुकरममें अधिकाय ॥
जन्म जन्मको अपजशलयो।खोटे व्यसनमाहिं लगगयो॥४७०

कुंडलिया।

सुखरासी सज्जन सुनो, तजो पराई नारि।
कहि भारा यह वीनती, विहवल बुद्धि निवारि ॥
विहवल बुद्धि निवारि मारि मंकरध्वज भाई।
वारवार शिख तोहि छाँडि मूरख लरकाई ॥
हँसि हैं जगके लोग कानि पति सगरी जासी।
परकामिनि परिहरौ अहो! सज्जन सुखरासी॥४७१॥
हा हा! करि विनती करौं, सीख कहों यह मूल।
जे नर परदारा रमें, तिनके मस्तक धूल ॥
तिनके मस्तकधूल और धृग जीवन तिनको।
करैं नेह पररमनि छांड़ि मूरख निज तियको ॥
प्रगट भयें पतिजाय सुजन यह कौन सलाहा।
परकामिनि परिहरौ करौं विनती अरु हाहा॥४७२॥

दोहा।

होसी यहगति तासुकी, चारुदत्त जिहँभांति।
जे नर निजधन देयकैं, परदारा जु रमात॥४७३॥
अंतसमय दुरगति लहैं, महा दुखनको धाम।
जे नर शील गमावहीं, होय रहे वशकाम॥४७४॥

चौपाई।

कोतवाल मनमें दुखकारि। चारुदत्तकी दशा निहारि॥
मनमें विकलप वहुत उठाय।करमदोपसो खोरि लगाय॥४७५॥

---

१ कामदेव।

जोकछु विधिने लिख्यो लिलार। ताकौं कोइ न मेटनहार॥
करमलिखी सो निहचै होय। ताकोंमेटि सकै नहिंकोय ४७६॥

सवैया।

कबहूं नृपराज चढ़े गजराज चलें दलसाज सबै सुखजोई।
कबहूं फिर रंकभये बहुनेक सु मांगत भीख फिरै कनदोई॥
कबहूं फिर नर्क महादुख है कबहूं बहु इंद्रिनके वशहोई।
भारामल निहचै जान यही पर कर्मकरै सुकरै नहिंकोई४७७॥

सोरठा।

जो ढूंडो सब ठौर, सुरपुर नरपुर नागपुर।
यासम कोऊ न और, बली करम सो जीयरा॥४७८॥

चौपाई।

यहकहि कोतवाल गयोकाम। चारुदत्त तब पठयो धाम॥
चारुदत्त पाछैं सु कुमार। निजघरकों चाल्यो तिहँबार॥४७९॥
गयोसोय निज मंदिर तहां। लाग्यो भीतर पैठन जहां॥
जाकें गहने मेल्यो धाम। ताके चाकर बैठे ताम॥४८०॥
तिन दरवाजे रोक्यो सोय। घरमैं जान न देशी कोय॥
चारुदत्त बोल्यो तिहँबार। भानुसेठको यह दरबार॥४८१॥
तब किंकर बोल्यो तसुबात। गहने मेलि खाइयो भ्रात॥
तिनकेबचन सुने बलबीर। भयोदुक्ख थरहरयो शरीर४८२॥
तिनसौं बात कुमर फिरि कहै। मेरी माता किसथल रहै॥
अरु मेरीनारी किसठांय। मोसो बात कहो समुझाय॥४८३॥
और कहां निर्धन हैं वीर। वेगि बतावहु मोको धीर॥
तब दरवानी तिनमें कोय। चलोलिवाय कुमरकों सोय॥४८४॥
चलत चलत सोपहुँच्यो तहां। माता नारि रहैं तसुजहां॥
एक झोपरी जीरन महा। सो दिखायदीनी बचकहा॥४८५॥

यामें रहें मात तो वाम। काल वितीत करें इस ठाम ॥
चारुदत्त तब सुनिकर सबै। गयोपास माताके तबै ॥१८६॥
देखि अवस्था ताकी सोय। ताके अंग वास बहु होय ॥
माता नारि वहुत दुख लह्यो। सो मोपर सबजाय न कह्यो १८७॥
पाछें माता नीर मंगाय। और सुगंध अनेक डराय ॥
सुचि लेपनकर तन उवटाय। चारुदत्त असनान कराय॥१८८॥
पहिरनवसन दये ता योग। तब मनमें बहु कियो वियोग ॥
लागोकंठ मायके सोय। दईधाह तिन बहुतेरोय ॥१८९॥
अरु अपनी बहुनिंदा करी। हाहाकार कियो तिहँघरी ॥
माता हौं पापी परवान। अरु मैं हौं मतिहीन अयान॥१९०॥
अपयश सकललोकमें भयो। मातासौं इमि कहतो भयो ॥
अरु दुखसुखकी वातें जोय। कहतभयो मातासों सोय१९१॥
तब माता सुनि ताके वैन। बोलति भई तोयभरि नैन ॥
कोड़ि वतीस द्रव्य मोसार। सोतू लेय रम्यो तसुद्वार ॥१९२॥
अरु तूने बहु अपयश लयो। तेरो तात तोहि दुख गयो ॥
तबसुनि दुक्ख पाछिलो कियो।ततखिन नारिपास पहुंचियो॥
नारि वहुतदुख तासोंजोय। कहतिभई अपनो दुखरोय ॥
नारिवचन सुनि यों अवदात। तब सो लाग्यो कहन जु वात॥
हे भामिनि तूं गुनन निधान। शील धुरंधर परम सुजान ॥
तोसम तिया न दूजी कोय। देख वलभा मनमें जोय ॥१९५॥
हौं पापी पापनकी खानि। तोकों बहुदुख दिये सुजान ॥
कियोजाय गनिकासौं नेह। हे भामिनि तजि तेरोगेह ॥१९६॥
ताने मेरो सबधन हर्यो। अरु मोको विष्ठागृह धर्यो ॥
तिनमोकों ऐसो दुखदयो।नरकसमान जाय नहींकह्यो॥१९७॥

पूरबकरम लिखी जो होय। ताकों मेटि सकै नहिं कोय॥
करमबली जगमें सरदार। ताकौं कोऊ न मेटनहार॥४९८॥

कवित्त।

कबहूं रवि आन उगैदिशवारुनं, सागर थाह किनी जु धरै।
मेरुपै फूल कदाचित अंबुज, इन्दुकलाहुमें आग जरै॥
अंमृत वाश करै अहिकेमुख, तूल हुतासनमें न जरै।
कोडिउपाय करो भारामल, करमलिखी कबहून टरै॥४९९॥

सोरठा।

अनहोनी नहिं होय, होनहार छूटे नहीं।
लाख करो जो कोय, चतुराई बुध कोटिहू॥५००॥

चौपाई।

याहीने मोकौं दुख दयो। पूरबकरम सु सांचौ भयो।
अब हौं देखौं अवर जु कर्म। निकसिविदेश जु पाऊंपर्म ५०१॥
तहां करौं व्यापार अघाय। लाऊं जहतैं द्रव्य कमाय॥
देशांतर जाऊंमैं प्रात। तब भामनि बोली सुनबात॥५०२॥

चाल भैरवी की।

बोली नारि सुलछनी पिय प्यारे हो।
कंथ सुनो मोबात लाल पिय प्यारे हो॥
होत मोहि दुखगात लाल पिय प्यारे हो॥५०३॥
नामलेहु मति देशको, पिय प्यारे हो।
घरहिं करो व्योपार सुनो पिय प्यारे हो।
कहा विदेशहि जात लाल पिय प्यारे हो॥
सूत कातिहूं मैं सही, पिय प्यारे हो।
पोषो तुम निजगात लाल पिय प्यारे हो॥५०४॥

१ पश्चिमदिशा में।

मिहनत मेरे सूतकी पिय प्यारे हो।
आनंदसों विलसेय लाल पिय प्यारे हो॥
इह मति मनहिं विचार हो पिय प्यारे हो।
देशगमनको भेव, लाल पिय प्यारे हो॥५०५॥
दुखसुखसों निज सदनहीं पिय प्यारे हो।
काल गमावौ सार लाल पिय प्यारे हो॥
बाहिर क्याजाने सही पिय प्यारे हो।
दुखसुख परत अपार लाल पिय प्यारे हो॥५०६॥
तातें दासीकी कही पिय प्यारे हो।
मानो मनवचकाय लाल पिय प्यारे हो॥
यह तुमको चहिये नहीं पिय प्यारे हो।
तजि कर मोकों जाहु लाल पिय प्यारे हो॥५०७॥

दोहा।

चारुदत्त लाग्यो कहन, सुनो वल्लभा बात।
धनविन एकौ काजहू, होय नहीं तुछमात[1]॥५०८॥

चौपाई।

धनविन मानमहत नहिं होय। धनविन बात न पूछे कोय॥
धनविन महाकपूत कहाय। धनविन सबही सुधि बुधिजाय॥
धनविन सेवक सेव न करै। धनविन भूपति नागो फिरै॥
धनविन एकोकाज न होय। धनविन शत्रु मिलापीसोय॥५१०॥
भूखमरै भोजन क्या करै। दुख पांऊ क्यों सुख संचरै॥
निकसिविदेश नहीं संदेह। द्रव्यकमाय आउं पुनिगेह॥५११॥
कहैनारि सुनकंत विचारि। चाचा पूंछि शीख अवधारि॥
माता चचापास तुम जाय। देयशीख सो करियो आय॥५१२॥

---

1 मात्र।

चारुदत्त गुण पूरनधीर । मातापास गयो बलवीर ॥
कहतभयो मातासों सोय । जाउंविदेश हुकम जो होय॥५१३॥
तहां करौं उद्यम कछुजाय । तहँतैं लाऊं द्रव्य कमाय ॥
तब सबकाज होंय सुनमात । तातैं चलौं दिशांतर मात॥५१४॥
सुनतबात मातहि दुख भयो । चारुदत्तसौं तब इम कह्यो ॥
अहोपुत्र अजुगत कह कहौ । मेरेमनको संशय दहौ ॥५१५॥
[1]बहुरो यहमति कहो [2]गुणाल । मो मनमें दुख व्यापत लाल ॥
कहाधर्‌यो परदेश तुम्हार । करिये उद्यम गेह कुमार ॥५१६॥
बारहबरस पीछें मो मिले । देखत दुख मनके सबदले ॥
और विसार दई सबबात । तुमदेखे नंदन कुसलात ॥५१७॥
तातैं गेह करो व्यापार । बात हमारी मानो सार ॥
[3]जंपै चारुदत्त तब बाल । हे माता सुनिये ततकाल ॥५१८॥
मैं अपजस जगमें बहु लह्यो । अरु मो घरमें धन नहीं रह्यो ॥
मोपर मुख न दिखायो जात । लज्जावान भयो बहु मात ॥५१९॥
कैसें वदन दिखाऊं मात । तातैं जाउं दिसंतर प्रात ॥
जब कमाय ल्याऊं धनसार । तबही गेह करौं [4]पैसार ॥५२०॥
यह माता तूं निहचै जान । द्रव्य कमाय आय हों थान ॥
बहुतभांति समझाई माय । तबसुनि मात विचार कराय ५२१॥
माता चलत जानियो सोय । तब निजभ्रातहिं टेर्‌यो जोय ॥
तासौं बात कही समुझाय । चारुदत्त परदेशहिं जाय ॥५२२॥
मैं समुझायो ताको नेक । मानत नाहीं मो वच एक ॥
तेरो सोइ जमाई भाय । ताको तूले निज समुझाय ॥५२३॥
तबसुनि सिद्धारथ सुनि बैन । चारुदत्तसौं बोल्यौ ऐन ॥
सुनियो कुमर मोहिवच धीर । क्यों परदेश जात हो वीर ५२४॥

१ फिर भी । २ गुणालय = गुणों का घर । ३ कहै । ४ प्रवेश ।

जोधन तुमको चहियै तात। लेहु द्रव्य तो मनहिं समात॥
मेरेघरमें धन अत्यंत। सोरहकोटि द्रव्य गुणवंत॥५२५॥
तुम धन लेकर मनवच सोय। कर व्योपार निसंकित होय॥
जवविढ़वो तवदीज्यो मोहि। छाड़त नारि लाज है तोहि ५२६॥

दोहा।

वहुत भांति समुझाइयो, चारुदत्तकों वात।
तव सुनि सेठकुमार फिर, कहत भयो अवदात॥५२७॥

अडिल्ल।

सिद्धारथ मो वचन कान देकैं सुनो।
मैंहूं करौं वखान आपने जिय गुनो॥
अव हमको इस ठौर जोग रहनो नहीं।
चलूं दिसंतर वेगि वात निहचैं सही॥५२८॥
करिहौं तहँ व्योपार आपने चाव सौं।
द्रव्य कमाऊं सार तवहिं घर आव सौं॥
उद्यम या संसार माहिं सुखदाय है।
उद्यमतैं सवकाज सरै मनभाय है॥५२९॥

पद्धड़ी छंद।

विनउद्यम कछुय न होइ जाम। उद्यमविनु कहा करै जु काम॥
उद्यमविन नरवहुदुख लहंत। उद्यमविन दालिदनहिंदहंत ५३१
उद्यमविन नर वैठे जु खाय। अगलो तिन धन निहचै सु जाय॥
उद्यमविन नाहीं होयमान। उद्यम है जगमें गुरु प्रधान ५३१॥
वातैं बहु कौन करै वखान। निहचै चलिहौं परदेश थान॥
यहसुनि सिद्धारथ रह्योचाय। तवदीनो ज्वाव न फेरिताय॥

चौपाई ।

सुनकरि बचन मात दुखलह्यो । भरिलोचन तासौं इम कह्यो ॥
तैं वेश्या घर कीनो वास । तो विनमैं कीनो दुख त्रास ॥५३३॥
किम किम करि जु देखियो नैन । अबतैं तुरे सुनाये वैन ॥
काहेकौं परदेशहिं बहै । वार वार माता यौं कहै ॥५३४॥
चारुदत्त इम कहैं पयांसि । मातासौं निजकरि अरदास ॥
रहतबनै मोसौं नहिं माय । बहुतवचन मो कहा कहाय॥५३५॥
मातासेव बहूके पास । करवइयो सो वचन पयास ॥
यहकहि नमसकार तबकियो । भामनि वाहि माय सौंपियो ॥
बोलि ज्योतिषी उत्तम कोइ । सगुन विदेश पूंछियो सोय ॥
सोधिदिवस तिन नीकीघरी।गमनविदेश कियो मनररी ५३७॥
खरचीलई नारिके पास । मारग गमन चलनकी आस ॥
घरतैं चल्यो महा गुनवंत। मनमैं सुमरन करि अरहंत॥५३८॥
तस मामा सिद्धारथ नाम । सुन्योकुमार गमन तिहँठाम ॥
ताकेमन उपज्यो बहुमोह । अतिही भयो तासकौं छोह ५३९॥
सोघरतैं निकस्यो अकुलाय । चारुदत्तके पीछैं जाय ॥
दोऊवीर भये तव संग । चले विदेश आपने रंग ॥५४०॥
तजत चले पुरगाम सुदेश । नांघत परवत नाहिं कलेश ॥
मारगमाहिं चले सोजाहिं । देखत कौतुक महा उछाह ॥५४१॥

दोहा ।

देश बलाकाके विषैं, पहुँचे दोऊवीर ।
सीमावति सरिता तहां, टिके तासुके तीर ॥५४२॥

१ प्रकाश करके । २ बुलाकर ।

चौपाई।

दोऊ मनमें चकित भये। कारज कहा विधाता ठये॥
खरचीतुच्छ वनज नहिंहोय। तातें करो उपाय जु कोय ५४३॥
तवदोनों मिल कियो विचार। जैसो धन तैसो व्योपार॥
तव तिन मूरा करे खरीद। वांधगाठरी तहां धरीदि॥५४४॥
निजनिज शीश धरी स्वयमेव। चले तहांतें दोनों एव॥
चलत चलत सो पहुँचे तहां। नगर पलासपुर राजेजहां ५४५॥
पूरन धनकरि ऋद्धिअपार। शोभित नीके हाट वजार॥
मंदिरधवल उतंग अपार। वहुत दिपै छवि तिनके द्वार ५४६॥
कनककलश तिन सीसदिपंत। कुरीछतीस वसे धनवंत॥
दोनोंवीर कियो परवेस। नगरमध्य सुख कियोअसेस ५४७॥
ताही नगर सेठ इक वसै। धनकन करि शोभा वहुलसै॥
वृषभध्वज है ताको नाम। ताकेगेह गये दोऊ ताम॥५४८॥
तासौं अपनो सव विरतंत। कहत भये दोनों नरसंत॥
चारुदत्तके सुन सो वैन। मनमें अधिकलियो तिनचैन॥५४९॥
आदरकरि घरमें लेगयो। षटरस भोजन जीमन दयो॥
रहिवेजोग्य दियो निजधाम। तव दोन्यों लीनो विसराम ५५०॥
तिसही घरके कोने थान। मूरनकी तिन करी दुकान॥
दिनप्रति मूरे वेचत रहैं। आठपहर धंधेमें वहै॥ ५५१॥
इहविध कछुदिन वीते ताम। मसकतिकरि कछु विढ़ये दाम॥
तिनदामनकी लई कपास। दोऊवीर नफाकी आस॥५५२॥

दोहा।

इमि देवा लेई करैं, द्रव्य कमावैं सार।
अवर कथा आगे सुनौ, भव्य जीव चितधारि॥५५३॥

१ जाति। २ मिहनत करके।

चौपाई।

ताही नगर एक बनिजार[1]। कंजननाम कह्यो सिरदार ॥
चाल्यो सोइ दिशांतर धीर। नाना वस्तु लेय गुनवीर ॥५५४॥
ताके संग बहुत अवंवेस[2]। वस्तु मनोहर भरी असेस ॥
ताकेचलत भयो कुहरांव[3]। बजतभये बाजे अधिकाउ ५५५॥
चारुदत्त सुनियो सब भेवँ[4]। कहत भयो मामासौं एव ॥
नायक एकजातु परदेस। वस्तु मनोहर भरत असेस ॥५५६॥
ताकेसंग साथमैं वीर। चलिये वेगि वस्तु ले धीर ॥
तब दोनोंने कियो विचार। करे खरीद बैल तिन चार ५५७॥
भरी कपास लादिये बैल। चलत भये देशांतर गैल ॥
टांडेसंग चले सो जाहिं। करत मुकाम पंथके माहिं ॥५५८॥
एकदिनोंकी[5] कही न जाय। विधना जैसो रच्यो उपाय ॥
मारगमाहिं चलेसो जाहिं। भीलनगन आयो तिहँठांय ५५९॥
तिनसब लूटलये जनंबान[6]। चारुदत्त सिद्धारथ जानँ ॥
अवर कपास बारि तिनदई। होत भये सबही दुखमई ॥५६०॥
तब सिद्धारथ मन पछिताय। द्रव्य न रही गांठमैं भाय ॥
फिर विचार दोनो मन करचो। धीर मांड़ि आगे पगुधरचो ॥

सोरठा।

भ्रमन करत दोऊ वीर, बन उजाड़ सरिता अतुल।
पहुँचे इक थल तीर, देख्यो एक पहार तहँ ॥५६२॥
मलयागिर तसु नाम, परबत महा उतंग है।
चढे तासु सिर ताम, ऊपर सो पहुँचत भये ॥५६३॥

१ बिनजारा। २ माल लेजाने के लिये बैल अथवा गाड़ियें। ३ हल्ला। ४ भेद। ५ दिन। ६ मनुष्यों और बैलों को। ७ यान=सवारी बैल।

दोहा।

रतन खानि तहँ देखियो, मनमें भये खुशाल।
ततखिन दोनो खानतें, लये पदारथ लाल॥५६४॥
उतरे तवहि पहारतें, चले जात पथमाहिं।
तहां भील आए तुरत, निडर शंक कछुनाहिं॥५६५॥

अड़िल्ल।

लीने रतन छुराय तुरत तिन पासतें।
बहुत संक दिखराय गये निज वासतें॥
चारुदत्त तिहँठौर बहुत दुखही लयो।
करम दोष बहु देइ मतो औरै ठयो॥५६६॥

चौपाई।

दोनों चितकरि फेरि विचार। चलत भये सो राह मझार॥
मनमें जपत पंच नवकार। नांघत कानन महाउजार॥५६७॥
चलत चलत कछु वासर भये। प्रियंगुवेला पट्टनगये॥
तिहँपुरमें कीनो परवेस। दूरिभयो मन सवहि कलेस॥५६८॥
पट्टन शोभा देखि अपार। मनमें सुख पायो अधिकार॥
देखत चाले हाट बजार। नाना वस्तु दिपै तहँ सार॥५६९॥
देखत महा उतंग अवास। उज्वलवरन धरे छवि पास॥
देखत कौतुक चालेजात। आगे अवर सुनो अव वात॥५७०॥
तिहँ प्रियंगु पट्टनमें जान। वसैं जु एक सेठ धनवान॥
चारुदत्तको पिता सुमित्र। भानुदत्त ताको हैं मित्र॥५७१॥
सुरिंद्रदत्त शुभ ताको नाम। पट्टन रहै सोइ गुनधाम॥
ताके ग्रेह गये दोऊ वीर। चारुदत्त सिद्धारथ धीर॥५७२॥
देख सेठको कियो जुहार। तव तिन वरनन कियो विचार॥

१ मन। २ दिल। ३ घर।

जानी चारुदत्त है यही। मोयमित्रको सुत है सही ॥५७३॥
तब सो सेठ मिल्यो उठिधाय। कुशलछेम पूंछी बहु आय ॥
मुखतैं मधुरे बचन कहात। हेसुत कुशलछेम तुमगात ५७४॥
चारुदत्त तब बोलत भयो। सब विरतंत पाछलो चयो ॥
तबतिन बहु कीनो सनमान। मंजन करवायो असनान ५७५॥
षठरस भोजन दीनो असन। पहिरनजोग दिये तिन बसन ॥
सेठ जु बनिज गमन तबठयो। बहुजलजंत भरावत भयो ५७६॥
वस्तुअनूपम बहुतै घनी। जाकी गिनती जाय न गनी ॥
लीनो लसकर संग असेस। जोधा वाहन वस्तुविसेस ५७७॥
ईंधन अन्न नीर बहु लयो। निहचौ बरषबारहको ठयो ॥
बाजे तहँ बाजंत अपार। पटह भेरि तुरही सहनार ॥५७८॥
पूजे तब जलदेव अनंत। सुरिंद्रदत्त तब चल्यो तुरंत ॥
चारुदत्त सिद्धारथ दोय। लयेचढ़ाय परोहन सोय ॥५७९॥
लहर झकोरनं चले जहाज। सागरमधि सब एक समाज ॥
मनमें जपत पंचपरमेठि। चारुदत्त आदिक सब सेठि ५८०॥
चाले बहुतदिवस बलवीर। नांघत देस घाट बहु तीर ॥
चलत चलत कछु वासर भये। काहू दीप मध्य सब गये॥५८१॥
उतरे सागरतट गुनधाम। दीपमाहिं लीनो विसराम ॥
वस्तुभरी निजदेश मझार। सो बेची नाना परकार ॥५८२॥
ऐसैं बनिज कियो तिहँदेस। द्रव्य कमाई तहां असेस ॥
ऐसैं रहत बहुतदिन भये। बारहबरस तहां बीतये ॥५८३॥
तहां खरीदी वस्तु अपार। भरे परोहन धनकरि सार ॥
रतनआदि जे नाना वस्तु। भरे परोहन लेय समस्त॥५८४॥

१ कहा। २ जहाज।

चारुदत्त बहुद्रव्य कमाय। ताकी गनती गनी न जाय ॥
लेयंद्रव्य सब चढ़े जहाज। चाले सैंबै देशैं सजि साज५८५॥
पवन जोर चाले जलजंत। पहुँचे सागर बीच तुरंत ॥
लहरि झकोरनि हाले जबै। सबरे जन दुख पावें तबै॥५८६॥
एक दिनाकी कही न जाय। विधना जैसो रच्यो उपाय ॥
करमलिखी सो निहचै होय। ताकों मेटि सकै नहिंकोय५८७॥
करम अशुभ कछु आयो तासु। मारयो पोतैं मच्छने जासु॥
मारत फाटगये जलैंजंत। खंड खंड हुइ गये तुरंत ॥५८८॥
काहू एक खंडके सीस। चारुदत्त रहगयो गुणीस ॥
एक लाकड़ी ऊपर सोय। रह्यो सिद्धारथ निहचै जोय ५८९॥
बहत बहत लाग्यो जब तीर। निकस्यो सागरतें गुणधीर॥
चारुदत्तको दुख तिन कियो। हाहा करि रोवत मन भियो ॥
तब सिद्धारथ बहुदुख पाय। अपनेगेह गयो अकुलाय ॥
देशवृतांत सबनसों कह्यो। परिजन मनमें बहुदुख लह्यो५९१॥

दोहा।

सिद्धारथ दुचितो बहुत, रहै आपने थलै।
और कथा आगे सुनो, भाषै भारामल ॥५९२॥

चौपाई।

चारुदत्त सागरके माहिं। निकस्यो लकड़ा चढ़ि तिहँठांय॥
खबर नहीं मामाकी ताहि। चारुदत्तकी खबर न वाहि॥५९३॥
चारुदत्त दुख कियो असेस। मामा खबर न पाई लेस ॥
तबसो चल्यो तहांतैं धीर। मनमें मंत्र जपत गुनबीर ॥५९४॥
उदंबरावति नगर जु गयो। देख नगर मनमें सुख भयो॥
तहां खबर पाई तिन तंतैं। सिद्धारथ घर गयो तुरंत ॥५९५॥

१ सब जने। २ अपने देशको। ३-४ जहाज। ५ भाग। ६ ठीक २, चौकस।

धर जैबेकी पाई खबर। मनमैं बहुसुख लीनो कुमर ॥
तब सो वीर अकेलो होइ। चल्यो तहांतैं मनवच सोय ५९६॥
मनमैं और विचार जु ठयो। तब सो सिंधु देशमैं गयो ॥
संवर ग्राम तहां सो वसै। इंदपुरी सम शोभा लसै ॥५९७॥
चारुदत्त नगरीमैं गयो। महिमा देखत बहु सुख भयो ॥
चारुदत्तको पिता सुजान। भानुदत्त श्रेष्ठी गुनवान ॥५९८॥
ताको मेल्यो द्रव्य अपार। कोड़ि अठारहको भंडार ॥
सोधन चारुदत्त सब लयो। तसु मनमाहिं बहुत सुखभयो ५९९॥
तब बनवायो जिनको धाम[1]। तिसपर कलश धरे अभिराम ॥
नानाभांति रचे उपकरन। खरचै द्रव्य सोइ निज करन॥६००॥
चार प्रकार देय सो दान। सज्जन जनको राखै मान ॥
औरहु दुखित भुखित जे जीव। तिनको लछमी देइ अतीव ॥
जाचकजन जो मांगै आय। तिनकौं देय द्रव्य अधिकाय ॥
इहविध दान जु देने लग्यो। अरु समिकतमैं तसु मन पग्यो ॥
भयो प्रसिद्ध सोइ दातार। देशदेशमैं नाम अपार ॥
पूजा दान करै धरचित्त। गुरुकी भक्ति जु करै पवित्त ॥६०३॥
मनगंभीर उदार अपार। सुंदरता अतिही सुकुमार ॥
सरब गुननिको सोइ निधान। धरमसुभावी मधुरवखान६०४॥
लज्जावंत दयाजुत सही। छमा सत्य जोरी उरलही ॥
महादान देतो जस लहै। बंदीजन मुखतैं गुनकहैं ॥६०५॥
दुखीदीन लखि करुना लाय। तिनकौं पोखै मनवचकाय ॥
इहविध काल वितीत जु करै। पुण्यदान करि सुख विस्तरै ॥
दानदेत जगमैं जस लयो। नाम प्रसिद्ध पुहमि[2] पर भयो ॥
चारुदत्त सम अवर न दान। देश देश सब करै बखान ६०७॥

[1] जिनमंदिर। [2] पृथिवीपर।

जो मांगे ताकों सो देय। काहू विमुख न जान सु देय॥
इहविध दान करे अत्यंत। आगें अवर सुनो विरतंत॥६०८॥

सोरठा।

सुनिकरि दान प्रसिद्धि, एक जक्ष भुविपर अतुल।
तिन रचि मनमें बुद्धि, देखन चाल्यो कुमरकों॥६०९॥
नाम वीर अनतेश, दान परीक्षाके निमित।
करि मानुषको भेप, आयो सो ता नगरमें॥६१०॥

दोहा।

महारंकको भेपधर, अरु पीड़ित बहुगात।
दुखितदेह बहु सिथलकर, आयो जक्ष सु प्रात॥६११॥
वस्तीमें मांगत फिरै, टेरि टेरि करि वेन।
आगें अवर कथा सुनो, भवजीव सुखदेन॥६१२॥

अडिल्ल।

चारुदत्त जिहँवार जातु जिनधामकों।
दरसन प्रभुको करन जपत जिननामकों॥
ताही अवसर जक्ष समुंहिं आवत भयो।
दुखित देख तसु कुमर तबहिं पूंछत भयो॥६१३॥
तू दुख काहे करै विथा कह तोहि रे!।
कैकछु चांहत द्रव्य बात कहि मोहि रे!॥
तबही सुनि सब बात जक्ष इम कहत है।
मोहि पेटमें पीर सूलकी वहुत है॥६१४॥

चौपाई।

काहू तरह न नीकी होइ। तब इक वैद्य मिल्यो मो सोइ॥
ताने दारुन रोग बताय। मानुषकी पसुरी मँगवाय॥६१५॥

१ संमुख।

ताको सेंक बतायो मोहि। उदरपीर तब नीकी होय॥
रंकमहा मैं स्वामि अनाथ। पसुरी प्रापति होय न नाथ ६१६॥
तबमैं सुन्यो तुमारो नाम। अरु तोदान सुन्यो अभिराम॥
महिमा सुनि आयो इह ठौर। तू कहिये सबमें शिरमौर ६१७॥
अवर तु त्यागी महासुजान। जो तू देतौ दे गुनवान॥
अवरकछू चहिये नहिंमोहि। अपनी बात प्रकाशी तोहि६१८॥
चारुदत्त तब सुन सब बात। तासौं मुखतैं वचन कहात॥
मैं तोकों देहों बलबीर। तू कछु दुख मत करे शरीर॥६१९॥
छुरी हाथमैं ततछिन लई। पसुरी काटि काढ़ि तिस दई॥
तबसो देव सु देखि चरित्त। अचिरजवान भयो निजचित्त६२०॥
मानुषरूप कियो तिन दूर। प्रगट भयो तब देव हजूर॥
चारुदत्तकी पूजाकरी। अरु ताकी बहु थुति उच्चरी॥६२१॥
धन्यतात जाकें अवतर्यो। धनि तोमाय गरभ जिहँ धर्यो॥
धनिसो वंश जहां तूभयो। धनि वहगेह जन्म जहँ लयो ६२२॥
धनि वहघटी धन्य तिथिवार। धनि [१]रजनी धनि [२]वासर सार॥
धन्यधन्य तो नाम मुखार। धन्यधन्य तू जगमैं सार॥६२३॥
तोसम अवर न दूजो कोय। सबकौं सुखकारी शुभलोय॥
इहविध बहुत करी थुति तास। फिर बैठो सो ताके पास॥६२४॥
घाव छुरीको आछो कियो। निरमल देह तासु देखियो॥
जोकछु द्रव्य रह्यो भंडार। सोभी सबदीनो ततकार॥६२५॥
रह्यो जु फेर अकेलो होइ। चल्यो तहांतैं मनवच सोय॥
भ्रमनकरत पुहमीपर भयो। चलत चलत राजगृहि गयो६२६॥
चारुदत्त पुर कियो प्रवेस। देखी शोभा नगर अशेस॥
काहूथान कियो विसराम। दंडी एक मिल्यो तिहँठाम॥६२७॥

१ राति। २ दिन।

विष्णुदत्त ताको पुनि नाम। दुष्ट महा पापनको धाम॥
ताकी विनयभक्ति बहु करी। ताकूं अपनी विधि उच्चरी।६२८॥
आदिअंत सवरो विरतंत। दुखसुख वात कही सवतंत॥
तव दंडी बोल्यो हरषाइ। चारुदत्त मो वचन सुनाय॥६२९॥
मेरेसंग चलौ तुम वीर। धन चाहौ तौ साहस धीर॥
रसको कूप जहां है भाय। रसपाये मनवांछित थाय॥६३०॥
होइ रसाइन ताकी वीर। तासौं द्रव्य होय गंभीर॥
चारुदत्त सुनि हरषित भयो। तासो फेर वचन इमचयो॥६३१॥

अडिल्ल।

बेगि चलौ तिहँठौर बार मति ल्यावहू।
कै मोहि देहु वताय ईखं ले आवहू॥
सुनि तव दंडी वैन चैन मनमें लयो।
ततखिन चाल्यो संग वनीमें लेगयो॥६३२॥

चौपाई।

गये जु कानन महा उजार। जहां मनुषको नहिं संचार॥
दोनौं वीर पहूंचे तहां। वन उजार कूप इक जहां॥६३३॥
दोनौं वैठि कूपकी पार। विष्णुदत्त तव करै विचार॥
चौकीसौं इक रसरी वांधि। चारौं कोन एकसे सांधि॥६३४॥
तापर चारुदत्त वैठार। तूंबी दीनी हाथ मझार॥
अरु तासौं लाग्यो इम कहन। विष्णुदत्त पापी अघगहन६३५॥
अहो चारुदत्त गुनरासि। तुमसौं वचन कहौं परकासि॥
जब तुम पहुँचौ कूप मझार। यह तूंवी भरलीजे सार॥६३६॥
धरदीजे चौंकी ऊपरैं। तूं टिकियो तन निरभय करै॥
अरु दीजे तूं रसरी तान। तवहौं खैंच लेहुंगो जान॥६३७॥

१ कहा। २ रस।

पाछैं फेरि फांसिहौं डोरि। तापर तूं बैठियो बहोरि॥
तब हम तोकौं लेहैं काढ़ि। चारुदत्त बोल्यो मनबाढ़ि॥६३८॥
जोतुम कही बात बलबीर। सो सब करिहौं साहस धीर॥
यह मनमैं भोरो अधिकाय। जानैं नहीं दुष्टको भाय॥६३९॥
तब दंडी ततखिन तिहँबार। फांसदियो तिन लगी न बार॥
चारुदत्त तब भीतर कूप। पहुँच्यो ततखिन जाय अनूप॥६४०॥
देखी तहां एक पटकुई। बैठो जाय तहां तट सुई॥
चारुदत्त लेतूंबी करन। लाग्यो सोइ तबै रसभरन॥६४१॥
तहां एक नर राजे और। डरयो बहुतदिनको तिस ठौर॥
बोलि उठ्यो सोई तिहँबार। चारुदत्तकौं तबै निहार॥६४२॥

सोरठा।

हे परदेशी मित्र, सुनौ बचन मेरे सरब।
कहौं बात धरि चित्त, हे सुजान गुन आगरे॥६४३॥
यह मैं जानतु बीर, विष्णुदत्त तोकौं मिल्यो।
तिहँ डारयो इस तीर, निहचैं करि जानी सही॥६४४॥

दोहा।

चारुदत्त तिस बचन सुनि, पूंछत भयो सुजान।
अहो भ्रात तुम कौन हो, कहां तुम्हारो थान॥६४५॥
तुम आये इहठौर किम, कहौ मोहि परकासि।
किम जानो दंडी मिल्यो, हमै महा गुनरासि॥६४६॥

चौपाई।

तब मानुष तस बचन सुनाय। कहत भयो तासौं समुझाय॥
मेरे बचन सुनो दै कान। नीकै करि हौं करौं बखान॥६४७॥
नगर उजैनी अदभुत बसै। शोभा इंदपुरी सम लसै॥

१ भोला। २ भाव-परणाम। ३ सुधी-ज्ञानी।

तहां हमारो वास सुजान। वनिकपुत्र निहचै करिजान॥६४८॥
सो हम अशुभ करमके जोग। निरधन रहैं सदा करि सोग॥
तहां दुष्ट वह तपसी जाय। मिलत भयो मोकों पुर आय॥६४९॥
मधुरवचन तिन मोहिसुनाय। अरु मोकों बहुलोभ दिखाय॥
तबमैं लोभ धरयो मनमाहिं। दुष्टभाव तसु जाने नाहिं॥६५०॥
मोहि संगले आयो सोइ। महाउजार संग नहिं कोय॥
तब आए इस विलकी पार। मोसौं सरव कह्यो व्योहार॥६५१॥
तब दीनी तूंबी मो पानं। वेगि फांसि दीनो इह थान॥
तब तूंबीमैं रसभरि सोय। दई गहाय तासुकों जोय॥६५२॥
पाछैं फिर तिन फांसी डोरि। तापरि मैं बैठियो बहोरि॥
आधी दूर खेंचि मो जबहि। रसरी काटि दई तिन तबहि॥६५३॥
गिरयो तहांतैं तबमैं भ्रात। चोटलगी मेरे बहु गात॥
यह तापसी महा निरदई। दया नहीं ताकैं कछु रही॥६५४॥
तिनि मोकों रसकी बलि दयो। आपन दुष्ट ईखे लेगयो॥
सो अबमैं या रसकरि भ्रात। अर्द्धदग्ध मेरो भयो गात॥६५५॥
अबमो प्रान कंठगत जान। रहे होहि निहचै तुम जान॥
चारुदत्त सुनिकैं यह वैन। वोलत फेरि भयो सुखदेन॥६५६॥
मेरे वचन सुनो हो भायैं। अब हम कैसो करैं उपाय॥
सो हमसौं कहिहो बलबीर। तब वह नर बोल्यो धरि धीर॥६५७॥

अडिल्ल।

सुनो बात तुम नाथ कहों परकास मैं।
तूंबी रसभरि लेहु देहु धरि पास मैं॥
पाछैं अपनी ठौर जु पाथर डारियो।
रहियो बगल जु तिष्टि मतो यह धारियो॥६५८॥

१ शोक। २ हाथमैं। ३ रस। ४ भाई। ५ मनसूबा।

चौपाई ।

तब तुम प्रान बचैंगे बीर । निहचै करि जानौं यह धीर ॥
चारुदत्त सुनिकरि यह बात । हरख्यो चित्त सु विगस्यो गात ॥
तूंबी तब रससौं भरलई । चौकी माहिं तबहि धरदई ॥
अरु तिन दीनी रसरी तानि । तपसी खैंचलई तब जानि॥६६०॥
तूंबी ले निज हाथ मझार । फांसी डोरि दूसरी बार ॥
चारुदत्त तब अपनी ठौर । धरदीनो इक पाथर और ॥६६१॥
रसरी तानदई तिन जबै । आपुन बगल रह्यो टिक तबै ॥
रसरी खैंची तपसी तामे । अधबिच कूप आइयो जामे ॥६६२॥
तब तिन दुष्ट छुरी ले पान । दईकाटि रसरी अज्ञान ॥
चौकी जाय कूपमैं परी । आपन तूंबी ले तिन धरी ॥६६३॥
गयो तहांतैं दुष्ट गमार । आगें अवर सुनो विस्तार ॥
चारुदत्त तब भीतर कूप । जपै जिनेश्वरनाम अनूप ॥६६४॥
कायर नेक न होइ शरीर । मनमें हरख धरे बलवीर ॥
कहै बली सबतैं विधिकार । करता पास न कहूं उवार॥६६५॥
जैसो उदय करम है आय । सोई सहै जीव अधिकाय ॥
ताको कहा सोच कीजियै । जैसो उदय तैसो लीजियै॥६६६॥

सोरठा ।

चारुदत्त तिहँ थान, वा नरसों बोलत भये ।
सुनियो मित्र सुजान, मोहि बचन तुम कान दे ॥६६७॥

दोहा ।

ऐसी कठिन जु ठौर तैं, कोई बनै उपाव ।
मोहि निकसिबेको सही, कहो तुरत सो दाव ॥६६८॥

१ तिस समय । २ जिस समय । ३ कर्म ।

चौपाई।

तब सुनि वचन सु बोलतु भयो। चारुदत्तसों तिन इम चयो ॥
हे परदेसी मित्र सुभाइ। एक गोहे आवै इह ठांइ ॥६६९॥
कूपमाहिं रस पीवन पान। आवतु निहचै बेर मध्यान ॥
ताकी पूंछ पकरि नीकरो। अवर उपाय नहीं दूसरो ॥६७०॥
चारुदत्त तब बोलत भयो। सुनियो मित्र वचन मो कह्यो ॥
निकसनकी विधि कहीप्रकासि। तुम क्योंनहिं निकसेगुनरासि॥
सुनि परदेसी मेरी बात। मेरे चोट लगी बहु गात ॥
तातैं पीर बहुत है सही। शक्ति नहिं निकसनकी रही ॥६७२॥
यहसुनि चारुदत्त गुनमाल। मनमें बहुत जु भयो खुशाल॥
फिर वान्यों बोल्यो तिहँ बार। हे परदेसी सुनिहो यार ॥६७३॥
छिनमें कढ़त हमारे प्रान। यह मनमें निहचै तुम जान ॥
तबसो चारुदत्त तिहँवार। दीनो ताहि पंचनवकार ॥६७४॥
पद हैं पांच वरन पैंतीस। ताहि सुनाये मनवचईस ॥
सोहू मनमें बहु हरषाय। जपियो मंत्र महा सुखदाय ॥६७५॥
चारप्रकार लियो सन्यास। जातें लहिये पद अविनास ॥
हिरदेमाहिं पंचनवकार। विसरयो नाहिं सोय तिहँवार ६७६॥
तब तिन उपसम करि परिनाम। प्रान तजे मानुष तिहँठाम ॥
मंत्रप्रभाव तुरतही सोइ। पहिले सुरगदेव भयो जोय ॥६७७॥
मंत्रप्रभाव कहा नहिं होय। पापपंककों डालै धोय ॥
तातैं भविजन जपिये मंत्र। त्रिभुवनमें जो सार महंत ॥६७८॥
मंत्रप्रभाव लहै सबसिद्धि। मंत्रप्रभाव होय बहुऋद्धि ॥
महामंत्रफल सुरसेवंत। महामंत्रफल भवदुख हंत ॥६७९॥

१ चंदनगोह अथवा पाटका गोह ऐसी बलवान होती है कि वह एक आदमीका बोझ उठाकर दीवार पर चढ़ सकती है। २ दुनियां।

तातैं जपिये मंत्र गँभीर। शुभगतिकर नाशन भवपीर॥
जगमैं महामंत्र सिरदार। तातैं जपिये मंत्र जु सार॥६८०॥
आगें कथा सुनो अब और। चारुदत्त राजै तिहँ ठौर॥
ताही समय जु आई गोह। देखी चारुदत्तने सोह॥६८१॥
बैठि कुईतट तिन रस पियो। बहुरि चलनको उद्यम कियो॥
चारुदत्त तसु पकरीपुच्छ। चलत भयो तासँग गुणगुच्छ६८२॥
ज्यों ज्यों गोहचले ऊपरै। त्यों त्यों चारुदत्त नीकरै॥
चलत चलत सो पहुंच्यो तहां। रही कछूमनि ऊपरजहां६८३॥
हाथ एक ऊपर रहिपार। जहां बिराजै एक कुंलारि॥
तामैं गोह गई धसि जबै। चारुदत्तभी पहुँच्यो तबै॥६८४॥
तहां एक छिद्र भूपरै। तामैं गोह चली ऊपरै॥
हाथप्रमान तहां है राह। मानुषपै निकस्यो नहिंजाह॥६८५॥
तब तिन पूंछ गोहकी छांड़। रह्यो तिष्ठ जिननामहिंमांड़॥
द्वादश अनुप्रेक्षा जो सार। तिन चितवन कीनो तिहँबार६८६॥
जपै मंत्र बैठो तिहँ ठौर। आगें कथा सुनो अब और॥
ताहीबार अजागन तहां। चरन जात सो तिसबन महा६८७॥
कूपपारि सब निकसी आइ। तहां एक छेरीको पाइ॥
वाही छिद्रमाहिं गिर परयो। चारुदत्त ततछिन पाकरयो६८८॥

अडिल्ल।

राख्यो भीतर पकरि छागको पांवजू।
तब अजिया इकबार मिमानी सावजू॥
सुनकर ताकी टेर ग्वाल आयो तहीं।
देखि छिद्र तसुपांव लग्यो खोदन मही॥६८९॥

१ बिल=गड्ढा। २ बकरियों का समूह।

चारुदत्त तिसवार वचन बोलत भये।
होलै होलै खोदि वीर सुनि गुनमये॥
तव सुनि वचन रसाल ग्वाल निज कानजू।
वहुत भयो तिहँकाल सु अचरजवानजू॥६९०॥

चौपाई।

पूंछत भयो जु तवइ अहीर। बोलत कौन भूमितैं वीर॥
कौहै निहचै कह निजवात। चारुदत्त तव वचन कहात६९१॥
हमहैं निहचै मानुप भाय। हमे वेगि काढौ गुनराय॥
तवही ग्वाल सुने तस वैन। हिरदे वहुत लियो तिहँचैन६९२॥
ताही समय खोदियो थान। चारुदत्त काढ्यो गुनस्थान॥
तव सो सेठ नंद नीकल्यो। फेरि तवै आगेकों चल्यो॥६९३॥
महासघन काननके माहिं। इकलो वीर चल्यो तिहँ जाय॥
वनमैं भीत अधिक असुरारि। फिरैं सुअर तहँ रोझ सियार ६९४
चीता सिंह डकारैं घना। वांदर रीछ महिष मार्कना॥
गजमदमत्त फिरइ असराल। सारदूल सिंहनके लाल॥६९५॥
हिरना अजगर अहि संचरैं। चारुदत्त तिहँ वनमें फिरैं॥
इहविध कुमर चल्यो तहँजाहि। आरणमहिष मिल्यो इक ताहि॥
महाभयानक वलकरि मंत। मारन ताहि दौरियो तंत॥
चारुदत्त समुहानो देख। भयो वहुत भयभीत विशेष॥६९७॥
भजतुभयो आगेकों सोय। भैंसा पर्यो पिछारी जोय॥
भजत भजत सो पहुँच्यो तहां। गुफाएक परवतकी जहां ६९८॥
देखगुफा चाल्यो समुहाय। तहां एक अजगर दिखराय॥
गुफाद्वार सोवे जु निशंक। मानो कालगेह वहुवंक॥६९९॥

१ लंगूर। २-३ सामने।

भ्यानक सोय महाविकराल। सोवै सोय गुफा दरवार ॥
चारु जु दत्त चरित यह देखि। पाछे भैंसा क्रोध विशेष॥७००॥
तब तिहिं कछुनहीं कियो विचार।ततखिन चल्यो गुफाके द्वार॥
तब निजपग धर अहिके भाल। जायपरयो सु गुफा दरहाल ॥
कुमर कंदरा भीतर गयो। अजगर तबही जागतु भयो॥
क्रोधवंत है इसपर जरयो। मानो तेल हुतासन परयो ॥७०२॥
समुहें आरणमहिष ज्ञु देखि। अजगर जानी चित्त विशेष॥
जाही मोशिर धारयो पांउं। अवर न कोऊ है इस ठाउं ॥७०३॥
तब अहि ततखिन उठ्यो रिसाइ। कोपारूढ़ चल्यो समुहाय॥
भैंसा सहित लग्यो जुधकरन।आगे कथा सुनो दुख हरन७०४॥

दोहा।

गुहाबीचतैं चारुदत, देखत भयो निहारि।
अजगर महिषा जुद्ध बहु, करैं पुकारि पुकारि ॥७०५॥
बलकरि दोनों जुक्तबर, करहिं अखारो गाजि।
हारजीत नहिं को लहैं, भिरैं पराक्रम साजि ॥७०६॥
भ्यानक महा डरावने, जुद्ध करैं विकराल ॥
चारुदत्त जुध देखिकरि, निकस भज्यो ततकाल ॥७०७॥

सोरठा।

चल्यो अगारूं वीर, कानन महा उजारमैं।
जपत मंत्र गंभीर, मनतैं नेक न विसरतो ॥७०८॥
आगे महिषा दोय, और ताहि सनमुख मिले।
मारन दौरे सोय, चारुदत्त तब भाजियो ॥ ७०९ ॥

चौपाई।

अरणा जाके पीछैं परे। क्रोध अधिक करि तनमन भरे॥
सेठनंद तिनको भयमान। आगे भाजतु भयो सुजान ७१०॥

विरख एक देख्यो तिहिवार। महासघन ऊंचो अगरार ॥
तापर गयो तबहिं चढि सोय। आये महिषा तरं वहोय ॥७११॥
झींकझांक जात सब रहे। चारुदत्त मन थिरता लहे ॥
तरुशाखातें उतरयो सोय। चल्यो फेरि आगेकों जोय ॥७१२॥
चलत चलत सो पहुँच्यो तहां। सरिता एक बहै शुभ जहां ॥
ताकेतट लीनो विसराम। आगे कथा सुनो अभिराम ॥७१३॥
रुद्रदत्त, पांचों नृपनंद। हरिसिख, गोमुख, सुखके कंद ॥
वाराहक परतेप मरूभूत। चारुदतके मित्र सँजूत ॥७१४॥
तेसब याको ढूंढत फिरैं। पावें नहीं न थिरता धरें ॥
चलत चलत सब आये तहां। चारुदत्त सरितातट जहां ७१५॥
देखि कुमरकों हरपित भये। मिले नेहकरि मस्तक नये ॥
पूंछी सबनि छेम कुशलात। चारुदत्त तुम नीके गात ॥७१६॥
चारुदत्त तब निज विरतंत। भाख्यो सकल आदि लों अंत ॥
सातोंवीर फेरि तिसथान। नदीमाहिं कीनो असनान ॥७१७॥
तिहि सबनि तहँ भोजनकियो। छान जु नीर आचमन लियो॥
पाछैं सातों वीर अभंग। चले तहांतें करि इकसंग ॥७१८॥
एक नगर देख्यो शुभ सार। शोभा कहत न आवे पार ॥
श्रीपुर ताहि नगरको नाम। गढ़ मठ तहां बने अभिराम ७१९॥
तापुरमें कीनो परवेश। देखी शोभा नगर असेश ॥
ताही नगर बनिक इकबसे। धनकन करि सो पूरनलसे ७२०॥
नाम प्रियादत तिहँ गुणवान। भानुदत्तको मित्र सुजान ॥
ताकेगेह गये सबवीर। चारुदत्त आदिक तब धीर ॥७२१॥
निज विरतंत तासुप्रति चयो। तिन सुनकर मनमें सुखलयो॥
अरु सबको कीनों सनमान। लेयगयो तब अपनेथान ॥७२२॥

पंचामृत दीनी ज्योंनार। विनय भक्ति तिन करी अपार॥
बनिजजोग तिन खरचीदई। होतभये तबही सुखमई ७२३॥

अडिल्ल।

तब विचार करि सरव आपने मनमहीं।
वहै लेय सो द्रव्य गये हाटन सही॥
चुरियां करीं खरीद काचकी एव हैं।
बांधि गांठ शिर धरी सबनि स्वयमेव हैं॥७२४॥
चले तहांतैं सोय बनिज के कारने।
गये देश गंधारमाहिं सब यारने॥
चुड़ियां बेची जहां सबनि मनभावसों।
लियो तहां विसराम आपने चावसों॥७२५॥

चौपाई।

मिल्यो एक नर कोई और। रुद्रदत्तकों सो तिसठौर॥
देखि रुद्रकों बोल्यो बात। कोहै बीर कहांतैं आत॥७२६॥
काहें हीन बनिज तुम करो। छाजतु नाहिं तुम्हें चितधरो॥
तुम अतिरूपवंत गुनधाम। अरु तुमरो शुभ उत्तमनाम७२७॥
अरु तुम दीखत साहसधीर। उत्तमकुल अरु गुनगंभीर॥
काहें भूमिविषैं तुमफिरौ। गुनकरि लीन बहुतदुख करौ७२८॥
सो मोसों कहिये परकास। कहा फिरौ तुम चित्त उदास॥
रुद्रदत्त सुन ताके बैन। पायो मनमाहीं बहु चैन॥७२९॥
तब निजमुखतैं लाग्यो कहन। दुखसुख बात सबै विधतहन॥
आदिअंतलों जो जो भयो। सो सब ताहिपुरुषसों चयो७३०॥
जाकारन फिरते भूमाहिं। सो सब भाख्यो ततखिन ताहिं॥
तबतिन सुनी हृदयकी बात। बोलतु भयो फेरि अवदात७३१॥

सुनियो मित्र मोरवच कान। नीके करिहौं करौं वखान॥
इसजागातैं आगें वीर। परवत एक महा गंभीर॥७३२॥
राजतुहै सो महा उतंग। मारग तासु वहुत है तंग॥
वकराही को गैलो जहां। और न विध जानेकी तहां॥७३३॥
वकरा पीठि होय असवार। क्रमक्रम करि चढिजाय पहार॥
तव तहँ छाग मारिकर वीर। मसंक वनावो ताकी धीर७३४॥
तामैं वैठरहै मनलाय। मुहरी सीमदेय तस भाय॥
थिरकर तिष्ठिरहा सो तहां। भेरँडपक्षी आवतजहां॥७३५॥
मांसपिंड वे पक्षी जान। लेत उठाय चोंचकरि आन॥
तहँतैं उढ़कर पक्षीभ्रात। रतनदीप माहीं लेजात॥७३६॥
जव वे मसक भूमिपर धरैं। भखिवेको उद्यम तव करैं॥
तवसो छुरी लेय करमाहिं।ततखिन मसक विदारै ताहि७३७॥
आवै निकरि तासुतैं तवै। पक्षी मानुप देखैं जवै॥
है भयभीत सोय उडिजाय। निहचै करि जानो मोवाय७३८॥
तव सो रतनदीपतैं वीर। चाहो सो नग ल्यावो धीर॥
यहसुनि नरमुखतैं विरतंत। रुद्रदत्त मनअति हरपंत॥७३९॥
फिर तव रुद्र विचार कराइ। चारुदत्तसों कहिये जाय॥
चढ़िपहार मारेंगे छैल। रतनदीप तव पहुंचें गैल॥७४०॥
जो चालैगो नाहिं कुमार। याके मनमें दया अपार॥
अरु जामनमैं जिनवरसेव। पालै करुणा समकित एव७४१॥
तातैं कहिये एवच ताम। इस पहारपै जिनके धाम॥
तिनको वंदन चलिये वीर। तवसो चलिहै निहचैधीर॥७४२॥
आयो रुद्र तुरतही जहां। चारुदत्त शुभ तिष्ठै तहां॥
तासों लाग्यो कहन जुवात। चारुदत्त वचसुनि मो भ्रात ७४३॥

१ रस्ता। २ भातड़ी। ३ वचन।

इस परबतके ऊपर अंगे। बने जिनेश्वरभवन उतंग ॥
तहां जातरा अदभुत वीर। बंदन तिनहिं चलो गुणधीर७४४॥
चारुदत्त कछु जानै नाहिं। याने कहा रच्यो मनमाहिं ॥
कुमर रुद्रके सुनि ये बैन। तब मनमैं पायो अतिचैन ॥७४५॥
कहत भयो अबही चल वीर। करैं वंदना जिनकी धीर ॥
रुद्रदत्त सुनि तसु वच तबै। बकरा सात ल्याइयो जबै॥७४६॥

सोरठा।

चढि छैला सब वीर, कढ़त भये तिहँ नगर तैं।
एक मतो धर धीर, चलत चलत पहुंचे जहां ॥७४७॥
परवतके मगपास, खड़े भये सातों पुरुष।
देखि राहको फांस, चँवरी अंगुर चारकी ॥७४८॥

दोहा।

दोनों तरफ पताल सम, नीची अंत न ताहि।
अवर सहारो तहँ नहीं, टिकि रहने को आहि ॥७४९॥
महातंग मारग निरखि, बोल्यो सेठिकुमार।
सुनहु वीर मेरे बचन, अपने चित्त विचार ॥७५०॥
खड़े रहो इसठौर तुम, छहों वीर हरषाइ।
आगें सकरी गैल यह, देख आउं अब जाय ॥७५१॥
यह मारग कहलौं गयो, सकरो बहु भयभीत।
मैं आऊं तिहि देखकरि, तबलग तिष्ठौ मीत ॥७५२॥

पद्धड़ी छंद।

तब सब नर बोले एमवात। हमहू देखैंगे गैल भ्रात ॥
तुमही तिष्ठो अब थानएह। यहतो कारज सबको गिनेह७५३॥

१ हे अंग, हे तात ये छोटे भ्राता के लिये भी संबोधन है।

अरु हम गिरहैं तौ कहा वीर। तुमजीवो जगमें गुनगहीर॥
तुमतैं सबको सम्हरै जुकाज तुमपुण्यवंत करता समाज ७५४॥
तिनके सुनि बचन जु सेठिनंद। बोलत फिर सवसों वचनमंद॥
यहबात कहातुम कहोसंत। तुम साहिबहो हम सेववंत ७५५॥
मैं एक मुयो तौकहा भाय। तुम पट जीवो तौ भलीआय॥
अब औरबात मतकहो भ्रात।मैं गैलदेस अबही अवात ७५६॥

चौपाई।

यहकहि चारुदत्त चढ़ि छैल। चलत भयो सो सकरी गैल॥
अंगुलचार गैलहै जहां। औरसहारो कोउ न तहां॥७५७॥
दोनों तरफ पताल समान। नीची जागहैं वहुत भयान॥
चढतो जाय तहाँ सो वीर। नेक न शंक धरै मन धीर॥७५८॥
चल्यो जाय जपतो जिन नाम। और न कोइ सहाई ताम॥
क्रमक्रम करि चढ़ि ऊपर गयो। आछो थल जहँ देखत भयो॥
तब मनमाहिं बिचार कराय। अब सबकों लीजे बुलवाय॥
तब बकरा चढ़ि फेरि सुजान। अरु नीचेंको कियो पयान७६०॥
वह उतरत आवै मन रली। आगें कथा सुनो जो चली॥
रुद्रदत्त आदिक सब वीर। नीचें तिष्ठत साहस धीर॥७६१॥
ते सब लागे करन विचार। चारुदत्त आयो नहिं यार॥
वड़ी बार लागी पुनि ताहि। कारण कहा मित्र नहिं आहि॥
उपजत है यह मनमें वीर। कछू ताहि तन व्यापी पीर॥
तातैं चलिये अवही भाइ। निज लोचन देखें तसु जाय॥७६३॥
तब वे करि मन छहों विचार। छेलनि चढ़ि चाले तिहँवार॥
अधविच राह पहूंचे जबै। चारुदत्त तहँ मिलियो तबै॥७६४॥
देखि सेठिसुत सबको तहाँ। हाहाकार कियो तिनि जहाँ॥
और कही तिनसों यह बात। अरे अयाने मूरख गात॥७६५॥

काहें नहिं तिष्ठे उस थान। मैं जबलौं आवतहौं जान॥
तुमने बुरी करी बहु भाइ। सरब फसे इस थानक आइ॥७६६॥
गैलो बहुत तंग इस ठाँय। फिरवेको नहिं कछू उपाय॥
हम बढ़ैं तो नास हमार। तुम जो फिरौ तौ मरन तुमार॥
अब इस ठौर कीजिये कहा। तब वे छहौं मित्र बोलहा॥
कहा करैं हम सुनिये वीर। तुमको देर लगी बहुधीर॥७६८॥
तब हमकौं दुख भयो अत्यंत। तुम बिन सब मित्रन को संत॥
सोई दुख सुनिये गुणरेह। आन भयो दुख प्रापति एह॥७६९॥
अब तो हम आये गुणवंत। अब इक बचन सुनो हम संत॥
हीनपुण्य हम हैं सब वीर। मरिहैं तौ कहा होसी धीर॥७७०॥
चिरंजीव तुम होहु सुखार। हम ही फिरहैं गे इसबार॥
चारुदत्त सुनि सबके बांय[1]। बोलत भयो तबहि हरषाय॥७७१॥

अडिल्ल।

यहै फेरि मति कहौ मित्रजी बात हो।
एक मरे तौ कहा सुनीजे भ्रात हो॥
सबरे ही कहा मरे एककै कारने।
चिरंजीव तुम होहु जीव सब यारने॥ ७७२॥
मित्र कहा तुम करौ हूती जहँ इसतरैं।
जैसी जहँ लहनाति होय सो तिस तरैं॥
होनहार जो होय बसइ जिय आन है।
अवर बिसरि सब जाइ चित्ततैं बान है॥७७३॥

चौपाई।

शुभ अरु अशुभ उपायो होय। ताको फल नर भुंजे सोय॥
करम बिना नहिं कोऊ दातार। करम बिना नहिं लहै लगार॥

[1] बचन।

जैसो करम उदय है आइ। तैसो ही तहँ जीव सहाइ॥
सुख दुख दाता को नहिं जान। दीखै विधिको सरव विनान॥
चहुँगति मध्य जीव संचरै। पाप पुण्य ता साथहि फिरै॥
भावी होनहार जो होइ। ताकों मेट सकै नहिं कोय॥७७६॥
जो कछू जीव उदय हो आइ। तैसौ सहिये मन वचकाय॥
जे कहि वचन तवइ वलवीर। जपियो चित्त मंत्र धरि धीर॥

दोहा।

अपने पगकी आँगुरी, मारग माहिं टिकाइ।
साधि देह निज शक्ति करि, फेरयो बोर्क तहाँइ॥७७८॥
सातौ मित्र पहार पैं, गये तुरित चढ़ि तव्व।
बहु आँनद मनमैं लह्यो, टिके एक थल सव्व॥७७९॥

सोरठा।

चारुदत्त तिहँ ठाम, रुद्रदत्तसौं इम चयो।
कहां जिनेसुर धाम, चलौ तिनहिं वंदन करैं॥७८०॥
रुद्रदत्त मनमाहिं, इम विचारि तव ही करैं।
जो हम इन्हे कहाहिं, ए वकरे सव मारि हैं॥७८१॥

छन्द चाल।

तौ यह मनमैं दुख लेसी। वकरा नहिं मारन देसी॥
याके मन दया समाज। यह करन न देसी काज॥७८२॥
तातैं कछू करि हैं उपाई। वकरा मारैं इस ठाँई॥
वोल्यो सो तव तिहँवार। सुनिये मो वैन कुमार॥७८३॥
इस थानकतैं कछु अन्त। सोहैं जिनमन्दिर संत॥
सकरे मग चलतैं भ्रात। कछु सिथल भयो हम गात॥७८४॥
तातैं इक छिनभर वीर। रहिहौं निद्रा करि धीर॥

१ वकरा।

पाछैं चलिहैं उसठाम। वंदन जिनवरको धाम॥७८५॥
तब चारुदत्त सुनिबात। मनमैं लीनो शुभ सात॥
द्रुमतलैं देख इक थान। तिष्टे तहँ सबहि जवान॥७८६॥

दोहा।

सोवत भयो कुमार तब, मनमैं हरष उपाय।
अवर कथा आगैं सुनो, भई जु सो तिहठांय॥७८७॥
रुद्र आदि जे षट पुरुष, महा अधर्मी सब्ब।
अपने अपने बोक तिन, मार डारिये तब्ब॥७८८॥
जीवघात तिननें कियो, खालवासतैं वीर।
कछु न दया उपजी तिनैं, मोहत[1] भयो शरीर॥७८९॥

चौपाई।

लोभअंध जो मानुष होय। पापपुण्य नहीं देखै सोय॥
लोभअंधके दया न चित्त। लोभअंधके कुकरमहित्त॥७९०॥
लोभअंधके क्रिया न कर्म। लोभअंधके बुद्धि न मर्म॥
लोभअंधके धर्म न ध्यान। लोभअंधके सत्य न ज्ञान॥७९१॥
लोभअंध जीवनको हनै। लोभअंध नहिं सुखदुख गिनै॥
तैसे लोभ रुद्रमन धरयो। मारतजीव न शंका करयो॥७९२॥
छह छेलाको कीनो घात। चारुदत्तको बोक रहात॥
ताकों लेइ रुद्र निजपान। धरी छुरी ताके गलवान॥७९३॥
आधो गलो ताहि कटिगयो। तब बकरो मिमियातो भयो॥
तब निजबकराकी सुनिटेर। चारुदत्त जाग्यो तिहिंबेर॥७९४॥
देख सु बकराको यहहाल। निंदा बहुत करी तिहँकाल॥
और तबै निजबकरा देख। रहे कंठगत प्रान विशेष॥७९५॥

---

[1] अंतःकरन।

चारुदत्तने तब तिहँवार। बकराकों दीनो नवकार॥
महामंत्रके सो परभाव। ततखिन लीनो उत्तमठांव॥७९६॥
पहिले सुरगदेवता ठयो। बहुत ऋद्धिधारी सो भयो॥
मंत्रमहा जगमें सिरदार। मंत्रप्रभाव होइ भवपार॥७९७॥

अडिल्ल।

महामंत्र नवकार जपत बहु दुख टरै।
महामंत्र नवकार जपत बहु सुख करै॥
महामंत्र नवकार जपत जग जस लहै।
महामंत्र नवकार जपत पातक दहै॥७९८॥
महामंत्र नवकार पार नहिं जासको।
आदि अंत नहिं करता कोउ न तासको॥
भौजल प्रोहन तरन महा शुभ जानियो।
कर्म काठ गन दहन अगनिसम मानियो॥७९९॥

चौपाई।

तातैं जपिये श्रीजिनमंत्र। जासम अवर न दूजो तंत्र॥
सुरग मुकति को दाता जान। चौदह पूरब माहिं महान॥८००॥
श्रीअरहंत सिद्ध परमेस। आचारज उवझाय जिनेस॥
साधु सुगुरु हैं शिव सुखदान। जेई पूज्य महा परधान॥८०१॥
कीजे इनको सुमरन हिये। तातें भव भव सुख हूजिये॥
यातैं जपिवो जोग्य जु सार। भव्यजीव सुमिरो चितधार॥८०२॥
चारुदत्त परवतके थान। निंदा करत भयो नरवान॥
रुद्रदत्त तब बोलत भयो। वा नर वचन तेजसौं चयो॥८०३॥
तब ये सगरे नर तिसठाम। लीनो ततछिन छेलनिचाम॥
ता चमड़ाकी मसक बनाय। उलटी करी सबन तिहँठांय॥८०४॥

सोरठा।

भीतर रोंमा कीय, ऊपर रक्त समान है।
तिनमैं तब बैठीय, चारुदत्त आदिक सरव ॥८०५॥

दोहा।

मसकनि मुहरी मूंदकरि, तिष्टे सब तिहँ थान।
तबलग ताहि पहारपैं, ताही समय सुजान ॥८०६॥
भेरँडपक्षी गमनकरि, आये सात पहार।
तिनमैं कानों एक है, षट जुगनैन निहार ॥८०७॥
तिनने देखी भातड़ी, पड़ी सैलपर खास।
तब तिन मनमैं जानियो, निहचै पिंडामास ॥८०८॥
एक एक निजचोंचसों, छह लीने सु उठाय।
पाछे पंछी कानियो, चारुदत्त ढिगजाय ॥८०९॥
सेठनंदकी मसक तिन, ततखिन लई उठाय।
चलेदेश उड़ि आपने, सातों मन हरषाय ॥८१०॥

चौपाई।

तिन अंवरमैं कियो पयान। समुदबीच जब गये सुजान ॥
तहँ इक पंछी भेरँड और। चल्यो जात सो नंभमैं ठौर ॥८११॥
देखत भरे सातोंके सोय। खालीमुख नहिं देख्यो कोय ॥
और छुधा उपजी तिहँआय। तातें चल्यो तिनहिं समुहाय ८१२॥
अवर सबै देखे बलवंत। काने पास सु गयो तुरंत ॥
तासों लरतभयो तिहँवार। तबसो कानो भज्यो विचार॥८१३॥
जान्यो पाछैं बहुत दवाव। मसक छोड़दीनी तिहँठांव ॥
सागरमाहिं मसक छिटकाय। लीनी मुखसों फेर उठाय॥८१४॥
पाछें आन पंछी फिर लग्यो। तब सो फिर आगेकों भग्यो॥
ऐसीतरह सोइ त्रयबार। आनलग्यो पंछी तालार ॥८१५॥

तब तिहँ सेठनंदकी मसक। डार डार दीनी दधि तलक॥
चौथीबार सु लेय उठाय। उड़त भयो सुखमें दे ताय॥८१६॥
चलत चलत सो रतनहि दीप। गयो रतनपरवतहि समीप॥
गिरिकी शिखरऊपरें जाय। मसक धरी पक्षी तिहँठाँय॥८१७॥
भखिबेको उद्यम तिहँ थान। करन लग्यो पंछी सो कान॥
तब सो चारुदत्त गुनरास। छुरी लई निज करमें तास॥८१८॥
मसक फार डारी तिहँवार। ततखिन निकस्यो सेठ कुमार॥
भेरुँड पक्षी ताकों देख। मनुपरूप भय कियो विशेख॥८१९॥
भयकर सो ततखिन उड़िगयो। चारुदत्त तहँ तिष्ठत भयो॥
अब तौ कथा गई यह तहां। छहौं मित्र भेरुँड मुख जहां॥८२०॥
भेरुँड छहौं मित्रको लेइ। गये जु औरहि थानक लेइ॥
छहौं मसक धारीं तिन जाय। भखिबेकों मन कियो बनाय॥८२१॥
तब तिन छुरी लई कर माहिं। मसक विदार दई तिह ठाँहिं॥
छहौं निकस आये वलबीर। चारुदत्त नहिं देख्यो तीर॥८२२॥
तबतिन दुख कीनों अति घनों। हाहाकार कियो शिर धुनो॥
रुद्रदत्त आदिक सब मित्र। फिरैं पहार दुःख कर नित्त॥८२३॥
इनकी खबर न वाकौं भाय। वाकी खबर न इन्हें सुनाय॥
क्षुधावंत तब वनफल तोरि। करैं असन सब मित्र बहोरि॥८२४॥
मन मन सोचत छिन न बिहाइ। चारुदत्त को शोग कराइ॥
कबहूं सब लोचन भरि लेइ। कबहूं दोष करमकों देइ॥८२५॥

दोहा।

या विध दुखकर सब मनुप, राजैं एकहि ठाँइ।
अवर कथा आगैं सुनो, चारुदत्त पै जाय॥ ८२६॥
रतन शिखर के शैलतैं, उठ्यो सेठ को नंद।
मंद मंद पग धारतो, चलत भयो सुख कंद॥ ८२७॥

देखि रत्नराशी तहां, बरन बरन तिन जोत ॥
जगमगाट तिनको अधिक, रवि किरननि सम होत॥८२८॥

चौपाई।

इह विध शोभा निरखत वीर। चल्यो जाय आगे कों धीर॥
तहां एक देख्यो जिनधाम।सुरनर मनमोहन अभिराम ८२९॥
कंचन भीत बनी शुभ वास। जड़े रतन मणि करें प्रकास॥
पन्ना लाल भले नग लसैं। तिहँ उद्योतकिरन तम नसै॥८३०॥
मुक्ता फल की बंदनवार। लसैं सोइ नाना परकार॥
शोभा बहु बरनी नहिं जाय। तुच्छ बुद्धि मोमैं सुनभाय॥८३१॥

दोहा।

चारुदत्त दर्शन निमित, मंदिर कियो प्रवेस।
शोभा भीतर की निरखि, पायो सुक्ख अशेस॥८३२॥
चारुदत्त अवलोकि जिन, रोम रोम हरषंत।
जैसे सूरजके उदय, कमल जूथ विकसंत॥८३३॥
अति मनोज्ञ प्रतिमा निरखि, मनमैं बहु सुख पाय।
शीश नम्यो कर जोरि कैं, जय जय शब्द कहाय॥८३४॥

सोरठा।

दई प्रदक्षण तीन, जनम सफल कर मानियो।
बहु आनँद मैं भीन, तब थुति करनेको लग्यो॥८३५॥

पद्धड़ि।

जय जय परमेश्वर परमदेव। मनवचतन करि नित करौं सेव॥
कीनो छिनमें अघकरम नाशि। जीते अष्टादश दोषराशि८३६
शुभ समवशरन शोभा अपार। जिन इन्द्रनमतकर सीसधार॥
देवाधिदेव अरहंत देव। बंदौं मनवच तन करौं सेव॥८३७॥

जय जय मिथ्यातम हरन सूर। जयजय शिव तरुवरके अँकूर
जय काम विनाशनहार देव। जय मोहमल्ल मलदलन देव ८३८॥
तुम दर्शनतें सुख है अनंत। तातें वंदों शिवरमनि कंत॥
जयसुरगमुकतिदाताजिनेश। जयकुगतिहरन भव भवकलेश॥
जयजय कंचनसम तनदिपंत। जयकोट दिवाकर मलिनकांत॥
ऐसे श्रीजिनके दरश पाय। अघवृंद दूर छिनमें पलाय॥८४०॥
ऐसे श्रीजिनको वदन देख। मो गयो आज पातक विशेख॥
तुम धन्य जिनेश्वर देव आय। तिनके सुरनर खग परत पाय॥
धन आज मोहि लोचन विचार। तुम मूरत देखी हम निहार॥
धन मस्तक आज पवित्र मोहि। नमियो पदकमलनि देव तोहि
धनि धन्य आज मेरे जु पाँय। तुमलों प्रभु पहुंच्यो आज्ञु आय॥
धन मेरे आज पवित्र हाथ। तुम परसे त्रिभुवन के सुनाथ८४३
धन आनन मोहि पवित्र आज। रसनाकर गुन गाये समाज॥
प्रभु आजहि गयो कलंक मोय। देखी मूरत सुखकार तोय॥
अतिमुदित भयोसुखहियोमंत। बहुविधअस्तुतिजिनकीकरंत॥
अस्तुति करतें नहिं उर अघाय। करजोरि भाल निज नाय नाय

दोहा।

जिन पूजा बहुविध करी, मनमें हर्ष उपाय।
कछू काल तहँ तिष्टिकरि, उठियो फेरि सुभाय॥८४६॥
जिनमंदिरतें निकसि करि, चल्यो अगारूं वीर।
और न कोई पुरुष तहँ, परै दिखाई तीर॥८४७॥

अडिल्ल।

जपत मंत्र जिननाम चल्यो आगें जहाँ।
देखी गुफा पहार जती तिष्टे तहाँ॥

देखि मुनीश्वर दरश कुमर हरषित भयो।
मंद मंद पग धरत गुफा भीतर गयो ॥८४८॥

छन्दचाल।

कर जोरि नमौं मुनि पाई। लाग्यो अस्तुति करनाई॥
जय जय गुरु भव अघहरना। जय जय सुख संपति करना
जय जय कंदर्प जु दलना। जय मोह महामद मलना॥
जय जय इंद्री दे दंड। जय पंच महाव्रत मंड ॥८५०॥
जय परिगहतैं सु उदासी। जय सप्त तत्वारथ भासी॥
जय समता राखन चित्त। देखत इकसे अरि मित्त॥८५१॥
अठ बीस मूलगुण धारी। पुनि सहन परीषह भारी।
जिनके बच हैं सुखखानी। जिनसंग कुगतिकी हानी॥८५२॥
तजिकुमति सुमति चित गहिये। तुम संगति शिवसुख लहिये॥
गुरु बिन नहिं और सहाई। तुमहीं परमारथ भाई॥८५३॥

जय जय जन आनँदकारी। जयजय करुनानिधि धारी ८५४॥

सोरठा।

इत्यादिक थुति गाय, रोम रोम आनँद भयो।
तब ही श्रीमुनिराय, धर्मवृद्धि दीनी तिसै॥ ८५५॥

चौपाई।

अरु मुनिवर बोले इम बात। चारुदत्त तूं है कुशलात॥
अरु तो आमन कैसे भयो। काहे काज गमन इहँ ठयो८५६॥
चारुदत्त सुनि मुनिके बाय। अचिरजवान भयो अधिकाय॥
तब फिर बोल्यो सेठ कुमार। हे मुनिनाथ जगत आधार८५७॥
हे प्रभु मुझकौं आगें कहां। देख्यो है मुनिवर किस ठहां॥
सो मोसौं कहिये मुनिराय। मेरे जियको संशय जाय॥८५८॥

तब मुनिवर बोले गुणखान। चारुदत्त तूं सुनि दे कान॥
मैं हों वह विद्याधर वीर। मेरो नाम अमित गति धीर॥८५९॥
चंपापुर के बागमझार। मैं कील्यो थो तरुकी डार॥
तब तुम छोड़ि दियो तोआय। दूर करी मोवाधा धाइ॥८६०॥
तुम प्रसाद मो बाचिये प्रान। तब मैं नारि छुड़ाई आन॥
तुमप्रसाद हमने सुख लयो। तुमप्रसाद बहु आनँद भयो॥८६१॥
तुम प्रसाद मिलियो परिवार। तुम प्रसाद कीनो दुख छार॥
बहुतकाल कीनो तबराज। हयगय दलबल बहुत समाज॥८६२॥
और जु पुत्रपौत्र घरभये। तिनके सुखबहु देखत भये॥
फेरितबै कछु कारनपाय। मन वैराग्य ऊपनो आय॥८६३॥
तबही सगरो परिगृह छांडि। जती भयोदिढ़ जिनव्रतमांडि॥
इहविध मुनि आपनो सरूप। कह्यो कुमरसों सरब अनूप॥८६४॥
फेरि ताहाँ हीं अवसरपाय। मुनिवरके जुगपुत्र जु आय॥
सिंघग्रीव श्रीवबाराह। आये चढ़ि विमान उत्साह॥८६५॥
वंदनश्रीजिन मुनिवर जोग। आये दोनों पुरुष मनोग॥
तिनशिर मुकुट जु करैंप्रकास। उतरे सो चैत्यालय पास॥८६६॥

अड़िल्ल।

श्री भगवंत जु चरन जोरि कर सीस हैं।
नमे तबै ततकाल खगनके ईस हैं॥
करी भगति थुति बहुत जिनेश्वर पायहैं।
कर्‍यो नृत्य अत्यंत चित्त विगसाय हैं॥८६७॥
पूजाकरि शुभचित्त जिनेश्वरकी तबै।
हर्षवंत बहु होय चले दोनों जबै॥
मंदमंद पगधरत गये मुनिपास हैं।
जोरिहाथ धरि सीस करैं अरदास हैं॥८६८॥

चालछंद।

खग कहैं धन्य मुनिराज। भवसागर तरन जहाज॥
तुम चरनों जेजन लागैं। ततकाल अशुभ तजिभागैं८६९॥
तुम जपहि जोइ निसदीस। निहचैं होवै जगदीस॥
यामैं कछु धोखो नाहीं। तुमसाहिव हो जगमाहीं॥८७०॥
तुमसेवा पाप विनासै। सुर मुकति पंथको भासै॥
जगमैं तुमकरुना सागर। गुरुबुद्धि गुननिके आगर८७१॥
मद रागदोष करि रहित। द्वावीस परीषह सहित॥
समभाव सहजसुख लीनो। वसुकर्म जीत रजकीनो॥८७२॥
गिरशिखर कंदरावासी। मुनिवर सुख जगत उदासी॥
तारक तुमबिन कोऊनाहीं। सुखकारक सवजगमाहीं८७३॥

दोहा।

इहविध अस्तुति भगति बहु, कीनी जुग खगवाल।
मुनिवर धरमुपदेश दिय, सुखकारन तिहँकाल॥८७४॥
करि तपसीकी वंदना, दोनों बैठे पास।
तब मुनिवर बोले वचन, निजनंदनसों भास॥८७५॥

चौपाई।

अहोपुत्र सुनियो मोबात। चारुदत्तजी इह गुनगात॥
इनकी इच्छा पूरन करौ। कहैं सोइ ये निजचित धरौ८७६॥
तब सुनिखग मुनिवरकी बात। बोलतभये वचन अवदात॥
हे प्रभु चारुदत्त इहकौन। को इन मातपिता कहँ भौन८७७॥
कौनकाज आये इस ठांइ। तुम किमि जानो इन्हैं वनाइ॥
सो हमसों कहिये गुनगेह। तातैं हम भाजै संदेह॥८७८॥
तब मुनिवर सवरो विरतंत। कह्यो प्रगटकरि तिनहि तुरंत॥
तब सुनि सिंघग्रीव वाराह। मनमैं हर्षकियो खगनाह॥८७९॥

यह तो कथन रह्यो इह ठौर। आगें कथन सुनों अब और
मानुष अर बकराको जीव। पहिले सुरग गमन तिन कीन॥८८०॥
देव भये दोनो इक ठौर। पहिले स्वर्गमाहिं शिरमौर॥
अवधिज्ञानतैं पूरव बात। परतछि जानी सब उतपात॥८८१॥
ते मनमें बहुते सुख पाय। देखि संपदा मनवच काय॥
जानी चारुदत्त परसाद। लही संपदा सुख अहलाद॥८८२॥
तातें उनके देखें चरन। वेई हमरेहं दुख हरन॥
सार विमान रच्योततकार। कनकरतनमणि शोभ अपार॥८८३॥
जाके घंटागन सोहंत। रुन झुनकार सु नाद करंत॥
लहकति धुजामाल बहु पासि ऐसोरचि विमान सुखराशि॥८८४॥
जिनकी करि असवारी देव। आये रतनशैल स्वयमेव॥
जिनवर पूजा भक्ति उपाय। चले तहांतें मन हरषाय॥८८५॥
जहां जतीखग कुमर दिपंत। गये तहां सो देव तुरंत॥
पहिले चारुदत्तकों ताम। हाथ जोरि तिन कियो प्रणाम॥८८६॥
पाछें श्रीमुनिवरके पांय। कीनों नमस्कार तिहठांय॥
सिंघग्रीव देखि तब नैन। बोलत भयो वचन मुख ऐन॥८८७॥

अडिल्ल।

सुनो स्वामि मुझ बात देव हो तो कहा।
परि कछु सुरगमझार विवेक न तुम लहा॥
तब सुनि खगके बैन देव बोलत भये।
किमि तुम जानी वीर विवेक न हम लये॥८८८॥

चौपाई।

सो हमसों कहिये समुझाय। कहा जानि तुम कही गुणाहि॥
सिंघग्रीव तब बोलत भयो। अपने मुखतैं खग इम चयो॥८८९॥

पहिले तुम गृहस्थकों वीर । कियो प्रणाम जोरि कर धीर॥
पाछैं गुरुकों कियो प्रणाम । तिनसेये पावै सुरधाम ॥८९०॥
यातैं तुमसों हमने कही । नाहिं विवेक तुमै है सही ॥
कारन कौन सोय बलवीर । पाछैं मुनिकों नमे सुधीर ॥८९१॥
सो हमसों कहियै समुझाय । हमरे जियको संशय जाय॥
देव कहै खग सुनि दे कान । नीके करि हम करत बखान॥८९२॥

सोरठा ।

जो बकराको जीव, देव भयो थो सुरगमें ।
सो खगजुग सौं ईव अपने भव लाग्यो कहन ॥८९३॥

चौपाई ।

नगर बनारस अदभुत बसै । धनकन करि सो पूरन लसै ॥
पौनि छतीस बसै शुभ जहाँ।राति दिवस सुख भोगें तहाँ८९४॥
ताही पुर इक ब्राह्मण वसै । नाम सोमशर्मा तसु लसै ॥
ताके गेह सुमिल्या बाम। सुखसों रहै सदा निज धाम ॥८९५॥
पुत्री दोय भई ता गेह । प्रथम सुभद्रा सुलसा तेह ॥
दोनों सुता बड़ी जब भई।पाड़े तबै पढावन लई ॥८९६॥
विद्या पढ़ि बहु भई प्रवीन । लागी वाद करन गुणलीन ॥
सो विद्या मद गर्वित भई । कुंवारेही सन्यासिनि ठई॥८९७॥
लई प्रतिज्ञा इह मन माहि । जीतै वाद विवाहैं ताहि ॥
तिन प्रसिद्धिता महि पर भई ।तब इक तपसीने सुन लई॥८९८॥
याज्ञवल्क्य ता तपसी नाम । विद्याधर बहु गुण अभिराम ॥
तर्क छंद वेदादिक लीन । जीतनवाद बहुत परवीन॥८९९॥
सो तपसी जु बनारस गयो । ब्राह्मणसुता वाद तहँ ठयो ॥
जीती वाद माहिं इक नारि। ब्याही सुलसा नाम कुमारि ॥९००॥

दोनों रहैं सदा इक धाम। भोग भोगवैं सुखसों ताम॥
ताके घर इक बालक भयो। तव तपसी मनमें चिंतयो॥१०१॥
सो बालक लेकरि तिहिंकाल। पीपर नीचें दीनो डाल॥
आपुन नारि पुरिस रमिगये। काहू देश विपैं तिष्ठये॥१०२॥
दूजी वहिनि सुभद्रा नाम। सुलसा की जानों अभिराम॥
सो पीपरके नीचें गई। बालक डरचो जु देखति भई॥१०३॥
तव तिन निजकर लियो उठाइ। अपने घर लाई हरषाइ॥
पीपर नीचें डरचो सु देखि। पिपलादित्य सु नाम विशेखि॥१०४
अरु ताकों पाल्यो वहु भाइ। बड़ो कियो वहु सुख दिखराइ॥
तव तिन नारि पढ़ायो वाल। तरक छंद बहु वेद रसाल॥१०५॥

सोरठा।

मिथ्या शास्त्र अनेक, होम जज्ञ तिन वहु पढ़े।
वाद करनकी टेक, सब विद्यामें निपुण है॥१०६॥
एक दिना तिन वाल, कह्यो सुभद्रासों वचन।
इह मो नाम गुणाल, हे माता किहविध धरचो॥१०७॥
मोसों कहि समुझाइ, तव मेरो संशय भजे।
तबै सुभद्रा वाहि, पिपलादितसों वोलई॥ १०८॥

दोहा।

ज्यों ब्योरा पूरव भयो, आदि अंत लौं वीर।
सो जु सुभद्रा नारि ने, कह्यो वालके तीर॥१०९॥
तव जु सुभद्रावचन सुनि, चल्यो तहांतें वाल।
जहाँ मात अरु तात थे, गयो तहाँ ततकाल॥११०॥
तिनसों कीनों वाद वहु, जीत्यो तव सो वाल॥
तव स्वरूप तिन आपनो, सव सों कह्यो रसाल॥१११॥

अपनी विद्या प्रगट बहु, करी जगतमैं सार।
सो प्रसिद्ध सब जगतमैं, भयो सबनि सिरदार ॥९१२॥

अडिल्ल।

हौं तो वाको शिष्य जाज्ञवलि नाम है।
विद्या बहुत पढाइ कियो बुधिधाम है॥
तबमैं मिथ्या जज्ञ जगतमैं वहु कर्यो।
बहुत बोक अरु जीव होममैं हत कर्यो ॥९१३॥
मिथ्या शास्त्र जु प्रघट जगतमैं वहु कर्यो।
रुद्रध्यान करि वाद पापधरि मैं मर्यो॥
तिन पापनके जोग नरककौं गम कियो।
गये श्वभ्रगतिमाहिं तहाँ वहु दुख लियो ॥९१४॥

चालछंद।

छेदनि भेदनि आताप। सूली रोहन संताप।
शस्त्रनि करि देहविदारैं। दुख देहिं तहां अति मारैं ॥९१५॥
तातो करि तेल कराहीं। डारत गहि तन तामाहीं॥
पावक सीसो औटावैं। जल मांगे ताहि पियावैं ॥९१६॥
तन छेदि करैं बहु पीरा। छिरकैं तब खारी नीरा॥
तिस ठौर नहीं सुखलेस। उपजै जिय अधिक कलेस॥९१७॥
करुणा नहिं हिरदे धारैं। मिलि नारकि सबरे मारैं॥
इत्यादि महा दुख भारी। सहे दीरघकाल अपारी ॥९१८॥
तब कष्ट पाय तहँ भारी। निकस्यो मो जीव दुखारी॥
तब बोक भयो भुवि आनी। दुख सह्यो छुधा अरुपानी॥९१९॥

चौपाई।

तहाँ जज्ञमैं होम्यो गयो। फेरि आनि बकरा ही भयो॥

१ नरक गति।

फेरि जङ्गमें होम्यो सोय। फिरि यह देह छागही होइ ॥१२०॥
ऐसी भांति भयो छै वार। होम्यो गयो सु जङ्गमझार ॥
फेरि जु मर्यो सातमीवार। जनम्यो भाटक देश मझार ॥१२१॥
तहां जाय मैं वकरा भयो। चारुदत्त तहँ आमन ठयो ॥
कछुक पुण्य करि सुनिये नाथ। रुद्रदत्तके परियोहाथ ॥१२२॥
तिन पहारके ऊपरि मोह। मार्यो छाग वहुत करि कोह ॥
चारुदत्त देख्यो तिहँ वार। दीनो ताहि पंचनवकार ॥१२३॥
मंत्रप्रभाव देव मैं भयो। वहुत ऋद्धिधारक तहँ ठयो ॥
उपजी अवधि मोहि तव आइ। तव ततखिन आयो इस ठांइ॥
प्रथम हमारो गुरु है यही। तातैं करी वंदना सही ॥
तव फिर दूजो देव तुरंत। कहन लग्यो अपनो विरतंत ॥१२५॥
मंत्रप्रभाव सुनो हो भाइ। पहिले सुरग भयो सुर जाइ ॥
वहुतऋद्धि पाई तहँ सार। चारुदत्त ही के उपकार ॥१२६॥
तातैं हम दोनोंके वीर। पहिले गुरु हैं इहै सु धीर ॥
तातैं हम उपकार सुजान। नमस्कार कीनो धरि पान ॥१२७॥

दोहा।

अरु तिननैं हमको सही, इतने वड़े सु कीन।
तिनकों हम क्यों नहिं नवैं, पहिले सुनि परवीन ॥१२८॥

चौपाई।

एक जु अक्षरको सुनि जोय। आधे पदको दाता होय ॥
अथवा एकहि पदको सोइ। तिह नहीं भूल्यो पापी कोइ ॥१२९॥

दोहा।

और धरम उपदेशको, देवावालो होइ।
ताकौं भूलै चित्तमैं, पापी कहिये सोय ॥१३०॥

१ क्रोध।

तातैं हमकौं नाथजी, जापिवो जोग जु मंत्र।
और न दूजी बात को, तुम उपकार महंत ॥१२१॥
देव कह्यो विरतंत सव, धरि मनमें उत्साह।
तव सुनिके हरषित भये, सिंहग्रीव वाराह ॥१२२॥

अडिल्ल।

तव बोले जुगदेव चारुदतजी सुनो।
हमहूँ करत बखान आपने जिअगुनो ॥
हमकों अपनी टहल बतावो कोइ जू।
तव बपु होंय कृतार्थ स्वामि हम दोई जू ॥ १२३ ॥
सुनि देवनि के बैन चारुदत ने कही।
रुद्र आदि छह मित्र तिने ल्यावो सही ॥
सुनि करि देव जु वात गये आकाश हैं।
ल्याये सवको वेगि चारुदत पास हैं ॥ १२४ ॥

चौपाई।

सातौ मित्र भये इक ठाँइ। मनमें सुख पायो अधिकाइ।
भुजा जोरि कंठ लगि मिले। करि असनेह चित्त सव खिले१२५
अर सवने पूंछी कुसलात। आनँद कंद विनोद सु गात।
चारुदत्तसौं तव जुग देव। बोलत भये बचन स्वयमेव ॥१२६
जेतो द्रव्य चाहिये तुम्हें। सोय प्रकासौ साहव हमें। ॥
देहिं द्रव्य हम तुमको बीर। तुम परकारज करन गहीर॥१२७
सिंघग्रीव बाराहक जवै। नभचर सुरसों बोले तवै।
हे स्वामी सुनिये हम बात। हमहीं इनकी इच्छा भ्रात ॥१२८॥
पूरन करि हैं मनवचकाय। अरु चित सेवा धरि हैं आय।
बहुत द्रव्य देकरि हरषाइ। चंपापुर दे हैं पहुँचाय ॥१२९॥

तब बहु सीख देइ करि देव। गये वेगि निज घरकों एव।
पाछें और सुनो विख्यात। खग अरु कुमर जहाँ वे भ्रात॥१४०॥

पद्धरि छंद।

तब सिंघग्रीव वाराहग्रीव। रचियो विचित्र तिनरथ अतीव।
मणिमय कंचन शोभा अपार। लागे घूंघर घनघंट सार॥१४१॥
लटकती पताका बहुत माल। रुनझुन करि शब्द करें विशाल॥
तब मुनिके वंदे चरन दोय। सबरे असवार विमान होय॥१४२॥
कीनो अकाशमें तब पयान। पहुँचे नभचर निजनिकट थान॥
तब नगर तनी शोभा अपार। कीनी नभचर छायोबजार१४३॥
घर घर शोभा कीनी असेस। तब चारुदत्त कीनो प्रवेस॥
तहँ देखि महाउज्वल अवास। सुखपायो बहुछवि निरखितास॥
नभचर मंगल कीनों अपार। तब लेइ गयो अपने जु द्वार॥
तिनको सनमान कियो अत्यंत। इनहूमन आनँद बहुलहंत१४५॥
तब चारुदत्त गुणवंत बाल। साधी अनेक विद्या रसाल।
अर जहाँ खगनकी शुभकुमारि। व्याही तिननें बत्तीस नारि॥
अति रूपवंत गुणकरि प्रवीन। लक्षण उत्तम संयुक्त लीन।
अरु नूतन महल दिये कराय। तहँ अंतेवर सब रहेजाय॥१४७

चौपाई।

तियनसहित तहँ भुंजें भोग। पूरव पुण्य तनो संजोग॥
नारिन सहित सु क्रीड़ा करें। भाँति भाँतिके सुख विस्तरें१४८
इंद्र समान करै सो भोग। व्यापै नहिं कछु पीड़ा रोग॥
सुख-सागरमें मगन जु रहें। सब खग ताकी सेवा वहें॥१४९॥
इस विध काल गमावेंसोइ। श्रीजिन भगति करें मनलोइ॥
अरु बत्तीस भामिनी संग। चारुदत्त भुंजे बहुरंग॥१५०॥

एक रयन सोवत सुखपाय। चिंता भई ताहि मनआय ॥
चलिये वेगि आपने देश। वीते वासर इहां अशेश ॥९५१॥
मात नारि क्या जानै सही। कैसैं उपजैंति होहै सही ॥
तातैं अब कीजिये विचार। वेगहि चलिये माता लार ॥९५२॥
इह चिंतत ही भयो प्रभात। सिंहग्रीवसौं विनयो तात ॥
हेराजनके शिरराजान। हमपर कीजे कृपा सुजान ॥९५३॥
हम घरचलैं सु आईसु देहु। इह जस शुभ पुहुमिपर लेहु।
जिहँ सुनि करि नभचर दुखलह्यो। हे कुमार तुम अजगुतकह्यो

दोहा।

राजभार सब लेहु तुम, हम सेवक तुम पाय।
बहुरि बात कछुमति कहो, होत हमै दुख भाय ॥९५५॥
चारुदत्त खगवचन सुनि, बोले तब हरषंत।
अब हम ऊपर नेहकरि, विदा देहु गुणवंत ॥९५६॥
भाषैं बहुत कहा वचन, तुम आगे राजान।
तुमप्रसाद हम सुखलह्यो, बहुत भाँति सु निदान ॥९५७॥
तब हठ जान्यो कुमरको, सब नभचरने संत।
तब आइस दीनो तुरत, करि तैयारी तंत ॥९५८॥

चौपाई।

फिरि नभचर बोले हरषाइ। सिंघग्रीव भ्राता शिरनाइ॥
चारुदत्त बच सुनो सुजान। नीकेकरि मैं करौं बखान ॥९५९॥
मेरे कन्या रतन प्रमान। गुण लावण्य रूपकी खानि ॥
गंध्रवसेना ताको नाम। लक्षनवतं रूपकी धाम ॥९६०॥
वीनवादमैं बहुत प्रवीन। कला सहित गानेमें लीन ॥
ताने धरी प्रतिज्ञा एह। निहचै करनिज मनमैं नेह ॥९६१॥

१ गुजारा। २ आज्ञा।

जो कोइ वीन वादमें मोय। जीतै सो मम भरता होय॥
देश देशके खगनृप आय। गुण पावें नाहिं चलें खिसाय॥९६२॥
वीनावाद न कोई धरैं। हारें सो खिसियाने परें॥
ता जीतन को समरथ वीर। भयो न कोऊ इस थल तीर॥९६३॥
हियां खगनमें इस्यो न कोय। वीना धरि परनै इस जोय॥
एक दिनाकी सुनिये नाथ। पूछी निमतीकों नमिमाथ॥९६४॥
गंध्रव सेनाकों को वरै। कौन वाद वीनाकों धरै॥
तिनने मोसौं कही विचार। चारुदत्त जो सेठि कुमार॥९६५॥
जब वह अपने घरकौं जाय। वीनवाद नर मिलि हैं ताहि॥
सो व्याहै गो कन्या भ्रात। इह मोसौं भाषी तिन वात॥९६६॥
सो तुम बड़े पुरुष हो वीर। परके कारज करन गहीर॥
तातैं तुम याकौं लेजाउ। वीना सहित आपने गांउ॥९६७॥
ऊंच वंश शुभ लक्षण चाहि। दीज्यो तुमही तिसहि विवाहि॥
जोवनवंत भई परवान। पावत कामविरह दुख जान॥९६८॥
इह कहि सौंपी सो तिसघरी। चलिवेकी तब त्यारी करी॥
भामिनि पीहर दई पठाइ। विदा मागिवेको विहसाइ॥९६९॥
खगपतिको मन पायो तबै। भानुदत्त सुत चलियो जबै॥
चलत सेठ खग सब विहसंत। निज २ कन्या समधीतंत॥९७०॥

अडिल्ल।

काहू हय गय अधिक दिये दल साज हैं।
काहू दासी दास जु रथन समाज हैं॥
करकंकन मनिजड़ित सु मुक्ता हार हैं।
छत्र चमर गजराज दिये भंडार हैं॥९७१॥

१—२ चारुदत्त।

भूषन रतनन जड़ित बहुत आभरन हैं।
दीनों याविध जोर छत्र छवि करन हैं ॥
काहू दिये सिंहासन रतननसौं जरे।
काहू मुकुट विशाल दिये मणिमय खरे ॥१७२॥
दीने नग अनमोलक भर जु विमान हैं।
वस्त्र अनूपम बहु पाटंवर थान हैं॥
दियो सैन्य बहु ताहि जु सुंदर वस्त हैं।
अरु करि निज अरदास जोरि जुग हस्त हैं ॥१७३॥
बाजे बहुत निसान वजे गलगाज हैं।
दीने बहु चंडोल लगे नग साज हैं ॥
जेतो शोंबो दियो खगन मन आन है।
तेतो भारामल किमि कहैं वखान है ॥१७४॥

दोहा।

निज निज पुत्रिन की विदा, करत भये खगईश।
बहु भूषन आभरन दे, बहु सनमान करीस ॥१७५॥
सिंघग्रीव बाराह तसु, तिलक कीन नर नाह।
गंध्रबसेनाकी बिदा, करत भये उत्साह ॥१७६॥
चलत देखि माता सुता, उमग्यो हियो बनाइ।
कंठ लागि अलंबियो, बारबार बिलखाइ ॥१७७॥
अहो सुता परदेसिनी, भई करै दुख छोह।
बहुरि जु कब मिलिहै हमैं, कब देखौंगी तोह ॥१७८॥
इह कहि कहि विलखति अधिक, कंठ लागि अकुलाइ।
सो उर माता मोह करि, रोवत्ति बहु अकुलाइ ॥१७९॥

१ दहेज।

निज निज पुत्रिनि सीख तिनि, दीनी करि मनमान।
हे पुत्री! कुलरीति गहि, चलियो यही सयान ॥१८०॥

चौपाई।

चारुदत्त चलियो तिस वार। सबके मनदुख भयो अपार ॥
नगरलोग सब रुदन कराहिं। वारवार मनमें बिलखाहिं १८१
भरि भरि अंक भेंटि परिवार। चारुदत्त चलियो तिहँवार ॥
चढ़ेविमान मुकट धरिशीश। पायक भये सबै खगईश ॥१८२॥
विद्याधर निजसेना लेइ। सिंघग्रीव आदिक गुणगेहि ॥
चवरंगहि दललेइ अपार। चले सबहि आकाश मझार ॥१८३॥
अति गंभीर बजैं सु निसान। बात न और सुनै कोउकान ॥
इतनोविभौ लिये निजसंग। ताकी गिनतीनाहि अभंग १८४
बहुत बात को कहे बनाय। पहुंचे चंपापुर ढिगजाय ॥
सब मित्र विद्याधर संग। तिनको दलबहु नानारंग ॥१८५॥
गहिरे शब्द बजैं सु निसान। उतरे निकट नगरके थान ॥
सुनि ताके दलको कुहराव। आयो मिलन नगरको राव १८६
भूप विमलवाहन तसु नाम। महाविवेकी गुणको धाम ॥
आयो चारुदत्तके पास। मिलत भये दोनों गुणरासि ॥१८७॥
चारुदत्त तब सेठ कुमार। वस्तु अनूपम ले तिहि वार ॥
कीनी नजर भूपकी तबै। राजा खुसी भयो बहु जबै १८८॥

अडिल्ल।

देखि नजर बहु भांति भूप हरषित भयो।
चारुदत्त गुण निरखि सुक्ख मनमें लयो ॥
तब आसनपर थापि तिलक निजकर कियो।
आधो राजरु पाट चारुदत्तको दियो ॥१८९॥

हरषित भयो नरेश विमलवाहन तब।
कीनी शोभा नगर बहुत विध निज तबै॥
पाटंबर जरवाफ बजार जु छाइयो।
रोपी वंदनवार सबन सुख पाइयो॥११०॥

चौपाई।

बाजे तहँ बाजें अधिकार। भेरी तूर पटह सहनार॥
बाजनके जहँ बजें समाज। और निसान बजें गलगाज १९१॥
हरष कियो सबने असमान। जाचकजनको दीनों दान॥
नगरमांहि कीनों परवेश। चतुरंगनिदल सहित अशेश १९२॥
नगर उछाह भयो बहु जबै। लोग परस्पर जंपै सबै॥
देखौ पुण्यतनों परभाव। आयो चारुदत्त सुखराव॥१९३॥
भानुदत्त श्रेष्ठी को नंद। घरतें कढ़िकरि गयो जु मंद॥
लायो सो जु विभूति अपार। देखौ पुण्यतनो विवहार॥१९४
पुण्य महातम कह्यो न जाय। पुण्य महातम शुभगतिपाय॥
पुण्य एक त्रिभुवनमें सार। पुण्य महातम विभव अपार १९५॥
पुण्य महातम शिरधरि छत्र। पुण्य महातम नाशै सत्रु॥
पुण्य महातम जस विस्तरै। पुण्य महातम सुख बहु करै १९६॥
पुण्यप्रसाद दास बहु रहैं। पुण्यप्रसाद भली सब कहैं॥
पुण्यप्रसाद शोक सब भजै। पुण्यप्रसाद सबनिशिर गजै १९७
पुण्यप्रसाद काम छवि धरै। पुण्यप्रसाद बुद्धि विस्तरै॥
पुण्यमहातम बिधिको[1] नाश। पुण्य महातम ज्ञान प्रकाश १९८
पुण्य महातम को बहु कहै। पुण्य महातम शिवपुर लहै॥
पुण्य बड़ो या जगमें जोय। तातैं पुण्यकरो सबकोय॥१९९॥

१ कर्मोंका।

चारुदत्त पुर कियो प्रवेश। तब सुख मनमें लियो अशेश॥
सब अंतेवर संग लिवाय। जिनमंदिर सो पहुँच्यो जाय१०००
गहने मेल्यो हतो जु धाम। लियो छुड़ाइ ताहि दे दाम॥
तामें माता भामिनि आइ। पहुँच्यो चारुदत्त तहँ जाय १००१॥
नमसकार करि वंदी मात। मिलत भयो सो करि कुशलात
तिन देख्यो सुत लोचन लाय। दई असीस चित्त विगसाय॥
चारुदत्त देखी तव भाम। वहु प्रमोद लीनों तन ताम॥
माताहि सिंघासन बैठाइ। प्रथमनारि तिह तलें रहाइ॥१००३
सब अंतेवरनें हरषाइ। वंदे चरन दुहुन के आइ॥
तिन मनमैं वहुतै सुख लयो। मानों जनम सुफल तव भयो॥

सोरठा।

पट बांध्यो तव शीश, नारि सुमित्राके जबै।
सवपरि कीनी ईश, अवर कथा आगें सुनों॥१००५॥

दोहा।

वह वसंततिलका जवै, जो गणिकाकी धीय।
रही प्रतिज्ञा करि तहां, वेश्या अपने जीय॥१००६॥
या भव तौ मेरे सही, चारुदत्त भरतार।
और तातसम जानिये, यौं करि रही विचार॥१००७॥
तव राजादिक लोग वहु, चारुदत्त पै जाइ॥
गणिकाकी अरदास करि, अंगीकार कराइ॥१००८॥
राजादिक सवके कहें। कीनी अंगीकार॥
वहु प्रमोद आनंद सौं, दूजी करि पटनारि॥१००९॥
अरु नभचरकी कन्यकां, व्याहीं जो जिस भांति॥
तिनकौं पट दे तीसरो, करि मनमान जु ख्याति॥१०१०

चौपाई।

चारुदत्त शुभराज कराइ। सुख निवसै दुख गयो भुलाइ॥
विलसै विभव चित्तसुखधरै। कामभोग मनवाँछित करै॥१०११
जे नभचर आये थे संग। तिनसौं नेह कियो बहुरंग॥
अरु सबको कीनों सनमान। हरपे सवै चित्त जनवान॥१०१२॥
पंचामृत दीनी ज्योंनार। बहु व्यंजन बनवाये सार॥
अरु सबको बहुआदर कियो। या विध सब संतोस्यो हियो॥
सिंघ जु श्रीव ग्रीव बाराह। चारुदत्त जान्यो नरनाह॥
पल पल तिस विसरैं नहिं नेह। रहैं जु सरब एकही गेह॥
दिन दिन प्रीति बढ़ै चौगुनी। करैं राजनिधि भोगैं घनी॥
एकादिना नभचरके ईश। चारुदत्तकों नायो शीश॥१०१५॥
जोरि हाथ खगबोलै सोइ। अब हमकौं प्रभु आयसु होय॥
हमहू चलैं आपने देश। बहुत दिना इहँ भये नरेश॥१०१६॥
चारुदत्त सुनि खगके बैन। कहत भये तासौं बच ऐन॥
यह मति कहो फेरि खगबात। होय दुःख हमको तुमजात॥
तब खगपति हट कीनो घनो। लई विदा सजि दल आपनो॥
चले देश अपनेकौं सोय। करि मनुहारि हरषबहु होय॥१०१८
चारुदत्तसौं फिरि कहि ताहि। गंध्रबसेना दीज्यो व्याहि॥
खगपति निजथानक सब गये। चारुदत्तघर आवत भये १०१९
रची स्वयंबर शाल बनाइ। देश देश कौं दूत पठाइ॥
तिनसौं कह्यो सबहि व्योहार। दूत गये राजनदरबार॥१०२०
दूतन करी जाय तहँ टेर। सबकौं यही जनाई हेरि॥
चलिकरि वीणावाद जु करौ। गंध्रबसेना नृपधी बरौ॥१०२१

यह सुनि देशदेशके भूप। आये इकतें एक अनूप॥
तहँ आये वसुदेव कुमार। जादोंवंश काम उनिहार॥१०२२
बैठे सब शालामें आय। अब यह कथन कुमरिपैं जाय॥
दासीकही कुमरिसों बात। चलिये बाल वेगि अवदात१०२३
देशदेशके आये भूप। देख एकतें एक अनूप॥
वीनावाद करन तुमसंग। शालमाहिं सबआनँदरंग॥१०२४
तब कुमारि बोली स्वयमेव। सुनि दासी मेरे वच एव॥
कोइ न जीते वीना वरों। तब हों जिनकी दीक्षा धरों॥१०२५

दोहा।

यह कहिकें ठाढ़ी भई, वीणा लीनी पानि।
चली तबहि शाला विषैं, रूपकलाकी खानि॥१०२६॥
निकसी मारगके विषैं, पुरजन देखी सोय।
रूपरंग अवलोकि करि, कहत भये सब लोय॥१०२७॥
कोई मुखतें इमि कहैं, सुरकन्या है एव।
कोई नागसुता कहैं, देखि रूपकी टेव॥१०२८॥
कोई विद्याधर सुता, भाषैं देवी जोय।
जौवन करि संयुक्तसो, रूप न पूजे कोय॥१०२९॥

अडिल्ल।

जाको सोहै वदन जु पूनम चंद है।
कनककांति समगात मनो मकरंद है॥
लोचन अरुण विशाल सुखद अतिही बने।
चंचल मीनसमान जिसे सारँग[1] तने॥१०३०॥

चौपाई।

करै कटाक्ष दृष्टि जनवान। भ्रकुटी कुटिल जु मनो कमान॥
माथैंमांग विराजैं बार। अतिकोमल बहुश्याम सुढार॥१०३१॥

१ मृग के समान।

ऊंचीनाक इसी उनहारि। मनु कंचनकी धरी सम्हारि॥
दशनपांति दीखत चमकांति। कुंदकली दाडिमकी भांति॥
काननकुंडल रतननि जड़े। मानो आप विधाता घड़े॥
सोहैकंठ मोतियनमाल। जाकी जगमग जोति विशाल॥
उर उरोज घटकनक सुढार। केहरिकी समलंक निहार॥
कोमल कमलपानि ता बाल। बाहुजुगल सोभियो विशाल॥
जंघा जुगल प्रबल अभिराम। मानो कोमल कदलीथाम॥
अरुणमहा अतिकोमल पाय। हंसचालिसम चालचलाय॥
अतिसुगंध ताको जु शरीर। आवैलपट जु चलै समीर॥
दिव्याभरण जु पहरेअंग। बहुतभांति आभूषण रंग॥
मंदमंद पगधरती बाल। लियैं सोय कर वीन रसाल॥
गंध्रवसेना आई तहां। सबरेभूप जुरे हैं जहां॥१०३७॥
देखि कुमारिको महासरूप। अचरजवान भये सब भूप॥
एक जु दृष्टिपरें गिरिजांइ। वीना गहिकर खरे रहांय॥१०३८
एक जु भाजि पिछारे परैं। लज्जित होके आंसू भरैं॥
वीनाले इक सन्मुखजांय। गुणपावे नहिं चले खिसियांइ १०३९
एक कहैं यह धन्य कुमारि। ऐसोव्रत जिन धर्‍यो विचारि॥
ऐसैं बहुत वितीत्योकाल। जीते कोउ न वीणाख्याल॥१०४०॥
तब बोले वसुदेव कुमार। जान्यो नहीं रागधुनिसार॥
करती कहावाद तुमनारि। जा वीणागुण कहो विचार॥१०४१
कै पंकतिको वीणा होय। कौनसमय बाजै कहि कोय॥
लज्जितह्वै बोली सु कुमारि। वीणाके गुणलहे न सार॥१०४२॥
अहोनाथ! तुमही उचरो। वीनराग कीरति विस्तरो॥
केतीभांति सुनी गुरुपास। सो कहिये मो पूजेआस॥१०४३॥

तब बोले वसुदेवकुमार। इकदश भांति बीन गुणसार॥
सबविध ताहि बताईतब। कीरति महिपर भगटीजब॥१०४४
तब कुमारि लज्जित हुइगई। घूंघटकाढ़ि जु ऊभी भई॥
तब वसुदेव लियो करवीन। कियो रागनाना परवीन १०४५॥
पशुपंछी सबमोहे सोय। कालभुजंग विषम जो होय॥
मोहे सबनर नरपतितीव। विकलत्रय मोहे सब जीव॥१०४६॥
मांगीविदा लोग सब गये। चारुदत्त गृह उत्सव ठये॥
पंचशब्द बाजें अनिवार। ढोल मृदंग तूर सहनारि॥१०४७॥
हरे वसनसों मंडप छाय। चारों कंचनखंभ लगाय॥
मुक्ताफलकी वंदनवार। निरमोलिक नगलागे सार॥१०४८॥
वरन वरनकी कनी अपार। तिनको पूरो चौक सम्हार॥
अतिउज्वल देखियेअभंग। शोभाकहत बने नहिरंग १०४९॥
जुवतीगावैं मंगलाचार। विप्र वेदधुनि करें अपार॥
दुलहा व्याहनचलियो जबै। पहरेभूषण पट तिन तबै १०५०॥
रतनजड़ित शिर राजैछत्र। ढुरेचमर ऊपर जु पवित्र॥
आयो वेदीमाहिं कुमार। सबमन आनंद भयो अपार॥१०५१॥
सोहैं कामदेव छवि धारि। उत खगकन्या रतिउनहारि॥
अगिनिसाखि दे कीनो व्याह। दोनों तरफ भयो उच्छाह॥
करि विवाह समदी सुंदरी। शोभावहुत दयो निज घरी॥
करकंकन मणिमंडित हार। दीनें चमर छत्र भंडार १०५३॥
हय गय पट्टन दिये अपार। अरु अपनी कीनी मनुहार॥
करि सनमान विदा तब दई। होत भये सबही सुखमई १०५४

दोहा।

चारुदत्त राजहि करें, पालें परजा न्याय।
चारौंतीस भामिनिसहित करहि भोग अधिकाय॥१०५५॥

कीनो जस सब लोकमैं; सकल जीव हितकार ।
राज करै विलसै विभौ, चारुदत्त नृप सार ॥१०५६॥
नाना सुख भुंजे अतुल, दयादानपर चित्त ।
करै उछाह अनेकविध पूजे जिनवर नित्त ॥१०५७॥
महा सुक्ख जस लोकमै, होय मिटै सब सल्ल ।
एक पुण्यतें जानिये, भाषैं भारामल्ल ॥१०५८॥
राज कियो बहु दिवसतिन, वढ्यो वहुत परिवार ।
कीरति प्रगटी लोकमैं, चारुदत्तकी सार ॥१०५९॥

पद्धडिछंद ।

इक दिना आप हरख्यो नरेश । बैठो सिंहासन सुख अशेश
ताकी छवि है अतिही अनूप । अर पायक ठाढे सकल भूप ॥
मणिमुकुट महारवितैं प्रकास । राजै तसु शीश महा उचास॥
सोहैं वहु भूषन अंगमाहिं । राजै सो इम जिम इंद्र आहि ॥
बहु चमरढुरैं शुभतायशीश । अलवेस सहित सोहै नरीश॥
तव कोई एक निमित्त पाय । उपज्यौ उरमैं वैराग्य आय ॥१०६२
तव चारुदत्त चिन्त्यो सु भूप । अव त्यागीजे संसार कूप ॥
कीजे मुनिसंगति भली आहि।लीजे संजमव्रत चित्तचाहि१०६३

चालछंद ।

सबराजभार तिहँवार । सौंप्यो ततखिन परिवार ॥
आपन वनको पग धार्‍यो। निजमत अंगीकृत कार्‍यो १०६४
बहुजीव सहित नृपधीर । पहुंचे वनमैं गुरुतीर ॥
भवभोगसों विरकत होय। दीक्षाधारी मलखोय ॥१०६५॥
त्याग्यो जिन कपट कषाय । प्रगट्यो समता रस भाय ॥
छाड़ियो राग अरु दोष। हिंसा अदया भई मोष ॥१०६६॥

किये मास मास उपवास। कीनो सम्यक उरवास ॥
धनिधन्य मुनी उपगार। जान्यो अपनो सुखसार ॥१०६७॥

चौपाई।

दर्शन ज्ञान चरित तपधार। चारुदत्त आराधे सार ॥
तीनकालके योग सु धरै। अधिक तपस्या मनवच करै १०६८
पाले दशधा धर्म विचार। अंतसमाधि भाव उरधारि ॥
और सरन जियको कोउनाहिं। पंचपरम गुरुसरन कहाहिं ॥
निज आतमकों ध्यावै सोय। तातैं कर्म निर्जरा होय ॥
रागदोष तजि समताआनि। अंतसमाधि थकी तजिप्रान१०७०
निर्मलसार समाधि उपाय। अहिमिंदरपद पायोजाय ॥
सर्वारथसिधिके जु विमान। महापुण्यके उदय प्रमान १०७१॥
दिव्यमहा उतपाद सुजान। मणिमय सेज जहां शुभथान ॥
अंतमुहूरत माहिं सुभाय। पूरन जोवन तिहिंठां पाय१०७२॥
भूषन वसन सहित शृंगार। रतनमयी नाना परकार ॥
भयो जु चारुदत्त अहमिंद्र। पूरवपुण्य तनोफल वृंद ॥१०७३॥

अडिल्ल।

श्रेनिक निज करजोरि भूप लागे कहन।
हे गुरु ! सुखकी रासि सबनि संशय दहन ॥
अहिमिंदर पदमाहिं होति किहँ रीति है।
सो कहिये विस्तार मोहि धरि प्रीति है ॥१०७४॥

चौपाई।

गणधर कहैं सुनो नरराय। अहिमिंदर गुण चित्तलगाय ॥
एकहाथको जान शरीर। सप्तधातु वर्जित गुणधीर ॥१०७५॥
जोवन सदा स्वच्छ शुभसार। मालादिक पहरैं सिंगार ॥
लोक नाड़िके सोय प्रमान। ज्ञानवान राजन है जान१०७६॥

ताहीके जु समान विचार। तिनहिं विक्रिया तनो विचार॥
वीतराग भावनपरसाद। करै न सो विक्रया सु वाद ॥१०७७॥

दोहा।

जानि विपाक सु धर्मको, सबहि धर्म सेवंत।
नित्य शुद्ध जियद्रव्यको, जहाँ विचार लहंत ॥१०७८॥

सवैया इकतीसा।

जा विमानगेहमैं जिनेंद्रधाम शोभित हैं,
तहां जिनराजकी सु पूजा करैं चावसों।
मूलथान छोड़िके न तीनलोकके मझार,
जात न जिनेशथान तीर्थवंदे भावसों॥
जबै ढाईदीपमैं कल्यान प्रभुके जु होइ,
आसनादि कंपत नमैं तहां उछावसों।
माहो अहमिंद्र मिलैं धर्महूकी गोष्टि करैं,
शेष कर्मबंध खिरै आतमा स्वभावसों १०७९॥

अडिल्ल।

आयु तहां तेतीस उदधिकी जानिये।
साढे सोरह मास उसास बखानिये॥
बरष गये तेतीस सहस्र अहारकी।
मनसा उपजनिमात्र तृपति बलभारकी ॥१०८०॥
लेश्या सुकल सुभाव विशुद्धमनी महा।
इत्यादिक महिमा निदान पदसो कहा॥
धन्य जती तप ठानि भये अहमिंद्रजी।
कलमष सर्व निवार पुनीत अबंधजी ॥१०८१॥

दोहा।

अवर जहां अहमिंद्र बहु, सम्यक वान पुनीत।

धर्मगोष्टि तिन सहित सो, करहिं परस्पर मीत ॥१०८२॥
परमप्रीति राखें सकल, ऐसो सार सुथान।
महासुक्खकर जानिये, महिमा धर्म महान ॥१०८३॥
चारूदत्त मुनींद्रसो, अहमिंदरपद होइ।
तिनको हम सुमिरें सदा, करि आनँद चित जोइ ॥१०८४॥
तहां थकी सो भव्य चय, निरमल नरभव पाय।
जिनमुद्रा तपधारिके, करम खेपि शिवजाय ॥१०८५॥

चौपाई।

अवर जीव बहु ताके संग। लीनी तिन दीक्षा मनरंग ॥
ते सब निज निज तप अनुसार। पद पायो तिननें सुखकार ॥
सकल मूल यह ग्रंथ सु भाय। जानो भविजन मनवचकाय ॥
दयाधरम मनकीजे चित्त। जीवसुखातम ध्याय पवित्त १०८७॥
धर्म समान न सुखदातार। धर्म भवोदधि तारनहार ॥
यह लखि कीजे धर्म सदीव। जामें गर्भित सर्व अतीव ॥१०८८॥
चारुदत्त बहु पुण्य उपाय। ताफल अहमिंदरपद पाय ॥
अब सोई चय तहतें वीर। निरमल नरभव पाय शरीर॥
धरि तपसार करमगण जार। वसि हैं शिवपुर सिद्ध मझार ॥
धर्म तनी महिमा जु अपार। कहत न आवे ताको पार ॥

सवैया तेईसा।

चारुजुदत्त मुनिंदतनो चिरतंत रच्यो संछेप बनाइ।
पुण्य उपाय महीपर सोई लह्यो फल तास महाअधिकाइ ॥
और कहा अधिकार कहें अब मोक्ष लहे एकहि भवपाइ।
जे पढ़िहैं सुनिहैं जु चरित्र लहैं सुख संपति सो अधिकाइ १०९१

अडिल्ल।

आगें बुधिधर भये सु आचारज महा।

सोमकीर्ति गुणराशि चरित यह तिन कहा ॥
तिनहीके अनुसार अरथ कौं लाय कैं।
सँघई भारामल्ल जु कियो वनाय कैं ॥१०९२॥

चौपाई।

फरकाबाद नगर हम तनो। धरम करमकरि सुंदर वनो।
तहां हमारो वास सुथान। जाति खरौवा कुल शुभवान१०९३
दूजो देश भदावर वास। जहां धरमको महा प्रकास ॥
भिंड जु नगर दिपै शुभतहां। वसत लह्यो हम वहुसुख जहां॥
एक दिवस चिंत्यो मन एह। चरित जु चारुदत्त गुणगेह ॥
कीजे भाषा सुखदातार। तव कीनो चौपई विचार १०९५॥
भन्यो चरित यह चित विकसाय। पुण्यहेत जानो भवि भाय॥
अवर सुनो यह जाविध भयो। सो कारन भाषत निहचयो ॥
नगर जहानावाद रहांय। पदमावतिपुरवार कहांय ॥
विश्वनाथ संगति शुभपाय। तव यह कीनो चरित वनाय१०९७

दोहा।

होनहार कारण मिल्यो, तिनहीको उपदेश।
कारन बिना न भव्यजन, काज होय लवलेश ॥१०९८॥

चौपाई।

सँगही परसराम गुणवान। तिनसुत भारामल सु जान ॥
तासम हीनबुद्धि नहिं आन। तिन कीनो चौपई वखान ॥
छंद भेद कछु जान्यो नहीं। पिंगल मैं न देखियो कहीं ॥
नाममाल व्याकरन सुभाव। पढ्यो न काव्य एकहू भाव ११००
अक्षर अर्थ भंग तुक होय। लेहु सम्हारि तहां बुधि लोय ॥
बार बार जंपौं करजोरि। बुधिजन देहु मोहि मति खोरि ११०१

संवत विक्रमराय सु जान। वरस अठारहसै परवान।
तेरह ऊपर वर्ष पवित्र। श्रावनवदी पंचमी मित्र ॥११०२॥
शुक्र सुवार नखत शुभसार। तादिन कियो पूर्न हितधार॥
जो यह कथा सुनै धरि भाव। वहुसंपति सुख पावै ठांव ११०३
पुत्र जन्म शुभ ताकैं होय। महिमा आन वतावे कोय॥
वार वार कहा कहौं वढ़ाय। पालो जीव दया सुखदाय ११०४
भारामल्ल कहै चितलाइ। ते ज्ञानी समझैं निज पाय।
शुद्धातम लौ लावत भ्रात। अशुभ करम सवही मिट जात॥

कुंडलिया।

गणिका संगति दोष करि, चारुदत्त गुणखानि।
वहु दुखको प्रापति भयो, गूंथे चमरा जान॥
गूंथे चमरा जान लोभ करि वेश्या मंडित।
प्रीति लगावति वहुत औरसों गुण करि खंडित॥
निंद्य महा जगमाहिं जाहि जिय दया न तनिका।
तातैं भविजन जानि जोग्य तजि दीजे गनिका॥११०६॥
साई जो सर्वज्ञने भाषैं वचन जु सार।
धर्म दया संयुक्तसो, कह्यो परम हितकार॥
कह्यो परम हितकार गुननिकी निधिसो जानों।
जो कोई नर याहि करत अंगीकृत मानों॥
पुरुष तेइ जगमाहिं सवनि शिरऊपर भाई।
गुनसौं प्रीति लगाइ सदा सो पूजहु साँई॥११०७॥

दोहा।

चारुदत्त नृपकी कथा, पढ़ै सुनै जो कोइ।
पहिले पावै देवपद, पाछैं शिवसुख होइ॥११०८॥

छप्पय।

इति श्रीसेठिकुमार चारुदत्तोऽपि चरित्तर।
सोमकीर्ति गुणराशि विरचितिन कियो प्रथम वर॥
तिह अनुसार विचार करी भाषा वुधिसारू।
सँघई भारामल्ल कहत सवकौं सुखकारू॥
चारुदत्त संपति विभौ अहिमिंदरपद कहि वरन।
इस भांति चरित वाँचौ सुनौ सकल संघ मंगल करन॥११०९

जैसी पुस्तक मो मिली तैसी छापी सोय।
शुद्ध अशुद्ध जु होय कहुं दोष न दीजै मोय॥

श्रीचारुदत्तचरित्र भाषा समाप्त।

लावनी

मत करो प्रीति वेश्या विषबुझी कटारी, है यही सकल रोगोंकी खानि हत्यारी ॥
औषधि अनेक हैं सर्प डसेकी भाई, पर इसके काटेकी नाहीं कोइ दवाई ॥
तनलगे बान तो जीवित हू बच जाई, पर इसके नैनके बानसे होय सफाई ॥
है रोम रोम विषभरी करो ना यारी, है यही सकल रोगोंकी खानि हत्यारी ॥
यह तन मन धन हर लेय मधुर बोलोंमें, बहुतोंका करे शिकार उमर भोलीमें ॥
कर दिये हजारों लोट पोट होलीमें, लाखों का मन कर लिया कैद चोलीमें ॥
गई इसी कर्ममें लाखोंकी जिमिदारी, है यही सकल रोगोंकी खानि हत्यारी ॥
हो गये हजारों के बल वीरज छारा, लाखोंका इसने वंशनाश कर डारा ॥
गठिया प्रमेह आदिकने देश बिगारा, भारत गारत हो गया इसीका मारा ॥
कर दिये हजारों इसने चोर अरु ज्वारी, है यही सकल रोगोंकी खानि हत्यारी ॥
इसही ठगनीने मद्यमांस सिखलाया, सब धर्म कर्मको इसने धूर मिलाया ॥
अरु दया क्षमा लज्जाको मार भगाया, ईश्वरकी भक्तिका मूलनाश करवाया ॥
है इसके उपासक रौरव(नर्क)के अधिकारी, है यही सकल रोगोंकी खानि हत्यारी
वह नव युवकों को नैन सैन से खावे, अरु धनवानोंको चट्ट गट्ट कर जावे ॥
धन हरण करे अरु पीछे राह बतावे, करे तीन पांच तो जूते भी लगवावे ॥
पिटवाकर पीछे लावे पुलिस पुकारी, है यही सकल रोगोंकी खानि हत्यारी ॥
फिर किया पुलिसने खूब अतिथि सत्कारा, हो गई सजा मिल्रामजाइ[illegible]कारागारा ॥
जो झूठ होय तो सज्जन करो विचारा, हो त्याग झूठ करो सत्यवचन स्वीकारा ॥
अबतजो कर्म यह अतिनिंदित दुखकारी, है यही सकल रोगोंकी खानि हत्यारी ॥

समाप्त ।

हमारी खासकी छपी पुस्तकें।

पुस्तक	मूल्य
भद्रबाहु चरित्र—भाषानुवाद सहित	।।।≈)
धन्यकुमार चरित्र—भाषानुवाद	।।।)
पंचमंगल—रूपचन्द्रकृत शुद्धपाठ	।)
लघुअभिषेक—जन्मपूजा तथा आरती और फूलमाल समेत	‐)।।
सम्मेदशिखरमाहात्म्य—पूजन सहित जवाहरलाल कृत	।)
पंचकल्याणक पूजा—भाषा बखतावरलाल कृत	।≈)
नेमिचंद्रिका—प्राचीन आसकरन कृत	≈)
नेमीश्वरविवाह—दोप्रकारके खेमचन्द और विनोदीलाल कृत	)।।।
नेमिनाथका तेरहमासा—तथा राजुलकी बारहमासी	)।।।
राजुलपचीसी—विनोदीलाल कृत	‐)
बाबुलपचीसी—और नेमिराजुलके प्रश्नोत्तरकी बारहमासी	‐)
समाधिमरण दोनों—पं॰ सूरचन्द और द्यानतराय कृत	‐)
निर्वाणकांड—प्राकृत और भाषा महावीरस्वामीकी पूजा सहित	)।।।
हुक्कानिषेध—पं॰ भूदरदास कृत	)।
निशिभोजन कथा—निशिभोजननिषेधकी लावनी समेत	)।।
अहिक्षेत्रविधान—(पार्श्वनाथस्तुति) दूसरी भूदरदास कृत स्तुति	)।।
बारहभावना—मुन्शी मंगतराय कृत	)।।
बारह भावनासंग्रह—छै कवियोंकी बनाई भावनाओं का संग्रह	‐)।।
आलोचना पाठ—कठिन शब्दों पर टिप्पणी सहित	)।।
वैराग्यभावना—और समाधि मरण	)।।
गुर्वावली—और मंगलाष्टक	)।।।
साधुवन्दना—पं॰ बनारसीदास और भूदरदास कृत	)।।
मोक्षपैड़ी—	)।।
शिवपचीसी—और तेरह काठिया	)।।
ज्ञानपचीसी—और धर्मपचीसी	)।।
नरकदुक्ख कथन—भूदरदास कृत	)।।।
शारदा अष्टक—और शास्त्रभक्ति समेत	)।।
मुनिराज का बारहमासा—पं॰ जियालाल कृत	)।।
फूलमाल पचीसी—	)।।

उपरकी उनतीस पुस्तकोंमें से एक किसमकी पांच लेने से ६ और दस लेने से तेरह दी जावेंगी।